हिमाचल प्रदेश विधान सभा

विधान सभा की बैठक वीरवार, दिनांक 03 मार्च, 2022 को माननीय अध्यक्ष, श्री विपिन सिंह परमार की अध्यक्षता में कौंसिल चैम्बर, शिमला-171004 में 11.00 बजे पूर्वाह्न आरंभ हुई।

प्रश्नकाल

तारांकित प्रश्न

03.03.2022/1100/RKS/AS-1

अध्यक्ष : प्रश्नकाल आरंभ।

श्री जगत सिंह नेगी : अध्यक्ष महोदय, हमने आज सुबह नियम-67 के अंतर्गत कार्य स्थगन प्रस्ताव दिया था। भारी संख्या में प्रदेश के कर्मचारी शिमला में एकत्रित हुए हैं और सरकार उनसे बात करने को तैयार नहीं है। यह एक ज्वलंत मुद्दा है। ...व्यवधान...

अध्यक्ष : माननीय सदस्य आप बैठिए। पहले प्रश्नकाल होने दीजिए। ...व्यवधान... कृपया आप बैठिए। पहले प्रश्नकाल तो होने दीजिए। ...व्यवधान...

शहरी विकास मंत्री : अध्यक्ष महोदय, प्रश्नकाल तो चलना ही चाहिए। ये जनता का पैसा बरबाद कर रहे हैं। ये प्रश्न करते हैं, प्रश्न का जवाब आता है लेकिन ये उत्तर सुनने को तैयार नहीं । ये जब चाहे खड़े हो जाते हैं। ...व्यवधान...

श्री जगत सिंह नेगी : अध्यक्ष महोदय, स्थगन प्रस्ताव का अर्थ यह होता है कि आज की कार्यसूची को छोड़ दिया जाए और जो मुद्दा नियम-67 के अंतर्गत उठाया है उसे लिया जाए।

अध्यक्ष : आपका मुद्दा मेरे पास आ गया है और मैंने इसे सरकार को भेज दिया है। माननीय सदस्य पहले आप प्रश्नकाल होने दीजिए उसके बाद आपकी बात सुनी जाएगी। आपके विषय लगे हुए हैं। पहले आप प्रश्नकाल होने दीजिए। ...व्यवधान... कृपया बैठ जाइए। माननीय सदस्य बैठ जाइए। प्रश्नकाल होने दीजिए। ...व्यवधान... कृपया बैठ जाइए।...व्यवधान... माननीय सदस्य, श्री मुकेश अग्निहोत्री जी आप कृपया बैठ जाइए, आपकी कोई भी बात रिकॉर्ड में नहीं आएगी।

श्री बी.एस.द्वारा... जारी

03.03.2022/1105/बी.एस./ए0एस0/-1

...व्यवधान... विपक्ष के माननीय सदस्य नारेबाजी करते हुए बैल में पहुंचे।

अध्यक्ष : जो भी माननीय सदस्य बोल रहे हैं, वह रिकार्ड में नहीं आ रहा है। दिनांक 02.03.2022 को प्रातः 09.55 बजे सर्वश्री जगत सिंह नेगी, मुकेश अग्निहोत्री, मोहन लाल ब्राक्टा, राम लाल ठाकुर, सुन्दर सिंह ठाकुर, सतपाल सिंह रायजादा, सुखविन्द्र सिंह सुक्खु, लखविन्द्र सिंह राणा, संजय अवस्थी, नन्द लाल व श्री इन्द्र दत्त लखनपाल माननीय सदस्यों से नियम-67 के अन्तर्गत स्थगन प्रस्ताव की सूचना प्राप्त हुई है। जोकि प्रदेश के लाखों कर्मचारी पुरानी पेंशन योजना को पुनः बहाल करने हेतु लम्बे समय से आंदोलनरत हैं जिससे भारी रोष उत्पन्न हुआ है। हिमाचल प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियम-119 (7) के अन्तर्गत जैसा प्रावधित है, उसमें ऐसे विषय पर चर्चा नहीं की जाएगी जिस पर उसी सत्र में चर्चा होने की संभावना हो। इस विषय पर सर्वश्री राम लाल ठाकुर, जगत सिंह नेगी, सुभाष ठाकुर, संजय अवस्थी, पवन कुमार काज़ल व श्रीमती आशा कुमारी माननीय सदस्यों से तारांकित प्रश्न उत्तर हेतु प्राप्त हुए हैं तथा माननीय सदस्य इस पर अनुपूरक प्रश्न भी पूछ सकते हैं। इस प्रस्ताव को मैंने उत्तर हेतु प्रेषित कर दिया है, जैसे ही विभाग से उत्तर प्राप्त होगा, मैं अपना विनिश्चय दूंगा। अतः इस स्थगन प्रस्ताव पर अविलम्ब विधान सभा के कार्य को स्थगित कर इस प्रस्ताव पर चर्चा करने का कोई औचित्य नहीं बनता है। इसलिए मैं इस प्रस्ताव को निरस्त करता हूं।

03.03.2022/1105/बी.एस./ए0एस0/-2

प्रश्न काल आरम्भ

प्रश्न संख्याः 4735

श्री हीरा लाल : अध्यक्ष महोदय, माननीय शिक्षा मंत्री जी ने बड़े विस्तार से प्रश्न का उत्तर दिया है। इन्होंने मेरे करसोग क्षेत्र में जितने भी राजकीय माध्यमिक, उच्च व वरिष्ठ माध्यमिक पाठशालाएं हैं, उनमें जितने भी प्रवक्ताओं, टी0जी0टी0 आर्ट्स, मेडिकल और नॉन मेडिकल के रिक्त पद थे उनमें 95 पोस्टों को भर दिया है। मैं मुख्य मंत्री जी का और

शिक्षा मंत्री जी का धन्यवाद करता हूं। कुछ पोस्टे खाली बची हैं। मैं मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि इन्हें कब तक भर दिया जाएगा?

शिक्षा मंत्री : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो प्रश्न पूछा है, उसका उत्तर विस्तार से दे दिया है। आदरणीय जय राम ठाकुर जी की सरकार में इन चार वर्षों में प्रवक्ता के 40, प्रशिक्षित स्नातक कला के 25 नॉन-मेडिकल के 17 व मेडिकल के 10 पद भरे गए हैं और अधिकतर रिक्तियों को करसोग विधान सभा क्षेत्र में भरा गया है। उसके साथ-साथ मैं कहना चाहता हूं कि कुछ पद रिक्त होते जाते हैं।

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

03-03-2022/1110/डी.सी.-ए.जी. /1

प्रश्न संख्या - 4735.....जारी

शिक्षा मंत्री..... जारी

जिनका कारण स्कूलों का अपग्रेडेशन होना, रिटायरमेंट होना, पदोन्नती इत्यादी होना है। इन पदों को डायरेक्ट भर्ती और पदोन्नती के माध्यम से लगातार भरते रहने के लिए हम प्रयासरत हैं। माननीय सदस्य ने जानना चाहा है कि शेष रिक्तियों को कब तक भरा जाएगा? मैं माननीय सदस्य से कहना चाहता हूं कि भर्ती प्रक्रिया चली हुई है और जैसे-जैसे पदों पर नियुक्तियां होती चली जाएंगी वैसे ही उन रिक्तियों को भर दिया जाएगा।

प्रश्न समाप्त/-

03-03-2022/1110/डी.सी.-ए.जी. /2

प्रश्न संख्या - 4736

अध्यक्ष : श्री जगत सिंह नेगी, अपनी सीट पर उपस्थित नहीं हैं।

प्रश्न संख्या - 4737

श्री मुलख राज : अध्यक्ष महोदय, इस प्रश्न का उत्तर बड़े विस्तार से दिया गया है। अध्यक्ष महोदय, बैजनाथ विधान सभा क्षेत्र के अंतर्गत कुल 17 स्कूलों के नए भवनों के निर्माण कार्य स्वीकृत किए गए हैं और इसके लिए मैं माननीय मुख्य मंत्री जी और माननीय शिक्षा मंत्री जी का धन्यवाद करता हूं। अध्यक्ष महोदय, इस उत्तर के "ख" भाग में कहा गया है कि 17 स्कूलों के स्वीकृत नए भवनों में से 04 राजकीय प्राथमिक पाठशालाओं का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है तथा 10 राजकीय प्राथमिक पाठशालाओं का निर्माण कार्य जारी है। राजकीय उच्च पाठशाला धानग में 4 कमरों व हाल, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला अवेरी में विज्ञान प्रयोगशाला भवन तथा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला संसाल में विज्ञान भवन का निर्माण कार्य आरम्भ नहीं हो सका है, सरकार इन स्कूलों के भवन निर्माण कार्य को आरम्भ करवाने के लिए प्रयासरत है। अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय शिक्षा मंत्री जी से आश्वासन चाहता हूं कि इनके कार्य कब तक पूर्ण कर लिए जाएंगे? अध्यक्ष महोदय, उत्तर के "ग" भाग में कहा गया है कि राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला बीड़, जिला काँगड़ा में साईंस लैब का 70 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है। अध्यक्ष महोदय, इस भवन के निर्माण कार्य का शिलान्यास माननीय मुख्य मंत्री जी के बैजनाथ विधान सभा क्षेत्र में प्रथम प्रवास के दौरान किया गया था और अब इसका कार्य पूर्ण होने की कगार पर है। मैं माननीय शिक्षा मंत्री जी से आश्वासन चाहता हूं कि इस भवन का निर्माण कार्य कब तक पूर्ण कर लिया जाएगा?

03-03-2022/1110/डी.सी.-ए.जी. /3

शिक्षा मंत्री : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जानना चाहा है कि 17 भवनों में से राजकीय उच्च पाठशाला धानग और राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला संसाल में कार्य शुरू क्यों नहीं हुआ है? अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय विधायक जी से निवेदन करना चाहूंगा कि वे स्थानीय स्तर पर कार्यकारी एजेंसी या लोक निर्माण विभाग से बात करके इन स्कूलों के भवनों का प्राक्कलन इत्यादी बना कर हमारे पास भेजें। जैसे ही विभाग को इन स्कूलों

का प्राक्कलन प्राप्त होगा तब इन दोनों स्कूलों के लिए धनराशि का प्रावधान कर दिया जाएगा। माननीय विधायक जी को मैं कहना चाहता हूं कि एक विद्यालय के लिए अभी 30 लाख रुपये की धनराशि दी गई है और उसके निर्माण में जो कमी रह गई है उसको पूर्ण कर दिया जाएगा। अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने

श्री जे.एस. द्वारा जारी.....

03.03.2022/1115/JS/DC/1

प्रश्न संख्याः 4737ः-----जारी------

शिक्षा मंत्रीः-----जारी-----

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला, बीड़ साइंस लैब के निर्माण के बारे में पूछा है। इसमें 47 लाख रुपया हिमाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग, बैजनाथ को जारी कर दिया गया है। अभी इन्हीं दिनों 30 लाख रुपये का अतिरिक्त बजट दिया गया है। राजकीय माध्यममिक पाठशाला, बीड़ में साइंस लैब का **70 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है बाकी जो उसको पूरा करने के लिए बजट की आवश्यकता होगी उसका प्रावधान कर दिया जाएगा और बहुत जल्द इसको पूरा कर दिया जाएगा।**

श्री मुलख राजः अध्यक्ष महोदय, मैं मूल प्रश्न से हटकर पूछना चाहता हूं कि छोटा भंगाल में अध्यापकों की बहुत कमी रहती है और वहां पर ज्यादातर रिक्त स्थान रहते हैं। मैं माननीय मंत्री महोदय से आश्वासन चाहता हूं कि कृपया इस कमी को जल्द-से-जल्द पूरा कर दिया जाए।

शिक्षा मंत्रीः अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो जानना चाहा है यह इस प्रश्न से हट करके है लेकिन तब भी मैं यह कहना चाहूंगा कि इन चार वर्षों में हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में लगभग 9000 हजार पदों को भरा गया है और अभी 6200 पद भरने की प्रक्रिया में हैं। हमने पहले भी बहुत सारी रिक्तियों को भरा है लेकिन इन रिक्तियों के होने का विशेष

कारण यह है कि कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति होती है, प्रमोशन्ज़ होती हैं और नये स्कूल खुलते हैं लेकिन ये भर्ती प्रक्रिया हमारी चालू है। जहां पर भी आवश्यकता होगी इन रिक्तियों को भरा जाएगा।

प्रश्न समाप्त

03.03.2022/1115/JS/DC/2

प्रश्न संख्या 4738

श्री मोहन लाल ब्राक्टाः अनुपस्थित।

प्रश्न संख्याः 4739

श्री अरूण कुमारः अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने जो सूचना सभा पटल पर रखी है, उसके मुताबिक जो सरकारी भूमि है, उसके अनुसार पंचायत के लोगों की आपत्तियां जानना आवश्यक है। मेरा माननीय मंत्री जी से विनम्र निवेदन है कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में गौ सदन का जहां निर्माण होने जा रहा है, वहां पर वह जमीन सरकारी थी और पंचायत के अधीन आती थी, उसमें लगभग 400 के करीब आवारा पशु थे। उसको बनाने में हमें लगभग एक साल लग गया। वहां पर डी.सी. और एस.डी.एम. को इन्ट्रप्ट करना पड़ा। इसी तरह से जो दो मरले जमीन गरीब लोगों को देते हैं उसके लिए भी हमने कई जगह आइडैंटिफाई की है। हमारे जहां पर फायर ब्रिगेड का ऑफिस बन रहा है वहां पर भी हमने जमीन को आइडैंटिफाई किया। लेकिन बहुत बार ऐसा होता है कि जो पंचायत प्रतिनिधि हैं, वे अन्नापत्ति प्रमाण पत्र देने की आना-कानी करते हैं। माननीय मंत्री जी से विनम्र निवेदन है कि इसमें कोई ऐसी व्यवस्था की जाए जिसमें सरकारी आधार पर भी क्योंकि सरकारी भूमि होती है, मेरे विधान सभा क्षेत्र के दो लोग हैं, जिन लोगों के पास मकान बनाने के लिए जमीन नहीं है उनमें ईश्वर दास और चुन्नी लाल हैं, उनके केस भेजे थे और लगभग 40 केस इसके अलावा और एस.डी.एम. के पास पैंडिंग पड़े हैं। हमारे वहां पर जमीन भी है लेकिन अन्नापत्ति प्रमाण पत्र न होने के कारण वह जमीन नहीं मिल रही है। क्या सरकार ऐसा कोई प्रावधान करेगी कि उसमें एस.डी.एम. या एडमिनिस्ट्रेटिव ग्राउंड पर अन्नापत्ति प्रमाण पत्र जारी हों ताकि लोगों को सरकारी कार्यालय खोलने में हमें सुविधा हो?

जल शक्ति मंत्रीः अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो प्रश्न पूछा है, मैं सदन के ध्यान में इस बात को लाना चाहता हूं कि जो भूमि किसी विभाग के पास हो अगर उस भूमि को किसी विभाग को स्थानांतरित करना हो तो जिस जमीन का विभाग मालिक है, उसकी उसमें सहमति होनी चाहिए।

श्री एस.एस. द्वारा जारी----

03.03.2022/1120/SS-HK/1

प्रश्न संख्या : 4739 क्रमागत

जल शक्ति मंत्री क्रमागत :

तभी हम उस भूमि को दूसरे विभाग को स्थानांतरित कर सकते हैं।

दूसरा, ऐसी भूमि जो सरकारी भूमि हो, जो फॉरैस्ट लैंड में आती हो, उस भूमि को अगर किसी विभाग के लिए स्थानांतरित करना हो तो उसमें व्यवस्था बड़ी लम्बी है। एफ0सी0ए0/एफ0आर0ए0 की सभी औपचारिकताओं को पूर्ण करने के उपरांत ही उसे स्थानांतरित किया जा सकता है।

तीसरी, ऐसी भूमि जो प्राइवेट मालिकों की है अगर उसका अधिग्रहण करना हो तो उसके लिए भी सैक्शन-4 के अंतर्गत पब्लिक हीयरिंग होती है। फिर उसके बाद सैक्शन-11 के अंतर्गत नोटिफिकेशन होती है। फिर सैक्शन-16 के अंतर्गत रिहैबलिटेशन प्लान बनता है। उस तरीके से फिर फाइनली जमीन को अधिग्रहण के अंतर्गत लाया जाता है तो उस परिस्थिति में जमीन के मालिक को वहां के सर्कल रेट के मुताबिक मुआवजा देकर सरकार जमीन का अधिग्रहण कर सकती है। जो माननीय सदस्य कह रहे हैं कि पंचायत से एन0ओ0सी0 चाहिए या नहीं चाहिए तो मुझे ऐसा लगता है कि जब किसी भूमि का ऐसा हस्तांतरण करना हो, जैसे मान लो कि पठानकोट से मंडी फोरलेन आ रही है उसमें गांव के गांव आते हैं। जिन-जिन मालिकानों की भूमि उसमें आती है तो जब पब्लिक हीयरिंग होती है तब उसमें पंचायत भी शामिल होती है। लेकिन जिस प्राइवेट जमीन का अधिग्रहण

करना होता है उसमें मैं समझता हूं कि पंचायत का एन0ओ0सी0 आवश्यक नहीं है। माननीय सदस्य जो गौसदन के बारे में कह रहे हैं, गौसदन का मामला इस प्रश्न में शामिल नहीं है। आपने दो या तीन बिसवे जमीन की बात कही है कि अगर उसको स्थानांतरित करना है तो पंचायत का एन0ओ0सी0 चाहिए। वह भी इस प्रश्न का भाग नहीं बनता है। इस करके मेरा यही मानना है कि जो भू-अधिग्रहण की प्रक्रिया है उसके माध्यम से गुजरना पड़ता है तभी जा करके भू-अधिग्रहण किया जा सकता है।

03.03.2022/1120/SS-HK/2

श्री होशयार सिंह (देहरा) : अध्यक्ष जी, मेरे विधान सभा क्षेत्र में लगभग 350 लैंडलैस केस हैं और यह देखा गया है कि कई पंचायतों में डी0सी0 लैंड नहीं है, दूसरी पंचायतों में डी0सी0 लैंड है तो यह आवश्यक है कि जब तक दूसरी पंचायत एन0ओ0सी0 नहीं देगी तब तक लैंडलैस को जमीन नहीं मिलती। हमने इसके बारे में बड़ा प्रयत्न किया। मैं मंत्री जी से चाहता हूं कि डी0सी0 लैंड के लिए जो पंचायतों की एन0ओ0सी0 लेनी पड़ती है इसे हटाया जाए ताकि उन लोगों को जो 6 मरले जमीन सरकार दे रही है वह आसानी से मिल जाए। सिर्फ पंचायतों की एन0ओ0सी0 लेने के लिए कई वर्षों से यह मुद्दा लटका हुआ है तो माननीय मंत्री जी बताएं कि क्या इस एन0ओ0सी0 को हटाया जाएगा? जब इसको हटाया जाएगा तभी 350 लैंडलैस लोगों को जमीन मिल सकती है।

जल शक्ति मंत्री : माननीय सदस्य ने जो कहा है इस पर सरकार विचार करेगी।

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, विपक्ष आज फिर बाहर चला गया। इनका ये रस्मी कार्य मैं देख रहा हूं कि इनकी हर रोज़ की एक आदत बन गई है। लोकतंत्र है और उनको अपनी बात कहने का अधिकार है। लेकिन उसके साथ-साथ मैं इस बात को भी देख रहा हूं कि कई बार इनका व्यवहार इस प्रकार का हो जाता है कि परिहास का विषय बन जाता है।

जारी श्रीमती के0एस0

03.03.2022/1125/केएस/एचके/1

मुख्य मंत्री जारी---

आज हम उस दल में, विपक्ष में देख रहे हैं कि नेतृत्व की क्या परिस्थिति बनी है। कल मैं जब महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चर्चा का उत्तर दे रहा था, उस समय भी इनमें आपस में प्रतिस्पर्धा चली हुई थी। एक खड़ा हो कर कुछ बोलता था तो दूसरे को लगता था कि मैं भी अपनी बात कह दूं और तीसरे को लगता था कि मैं रह गया तो मैं भी कुछ कह लूं। मैं समझता हूं कि एक वक्त जो कांग्रेस पार्टी पूरे देश की सबसे बड़ी पार्टी रही है, आज इस देश में उसकी जो हास्यास्पद परिस्थिति बनी है, उसका यह एक परिणाम है। आज उस पार्टी का नेतृत्व सी.पी.एम. कर रहा है। आज ये उस तरह से नारे लगा रहे थे जैसे सी.पी.एम. वाले नारे लगाते हैं। उनका नारे लगाने का अंदाज़ व शैली अलग होती है, भाषा भी अलग होती है लेकिन नारे लगाने के लिए आज इनको सी.पी.एम. के नेता का सहयोग लेना पड़ रहा है। अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूं कि आज ओ.पी.एस. की अगर बात आ रही है, यह लागू कब हुई थी? यह वर्ष 2003 में लागू हुई थी जब हमारी सरकार सत्ता में नहीं थी। जिनका ये ज़िक्र करते हुए नहीं थकते, जो हिमाचल प्रदेश में 6 बार मुख्य मंत्री रहे उनका हमेशा ज़िक्र होता है, स्वर्गीय वीरभद्र सिंह जी उस समय सत्ता में थे। सम्भवतः हिमाचल पहला राज्य है जिसने एन.पी.एस. को लागू करने के लिए सारी शर्तों को स्वीकार किया। और आज ये यहां कह रहे हैं कि ओ.पी.एस. लागू करो। इनके ही नेता जिनके बारे में ये कहते हैं कि उनका हम बहुत सम्मान करते हैं, उनकी जो भावनाएं उस वक्त रही थी, आज की तारीख़ में क्या उन भावनाओं का सम्मान नहीं होना चाहिए? पूरे प्रदेश भर में जिस प्रकार से ओ.पी.एस. के इस कॉल को दिया गया है, एन.पी.एस. के जो लोग आए हैं, जिनको बुलाया गया है, उसमें भी सी.पी.एम. और कांग्रेस विचारधारा के जो करीबी लोग हैं, जो कर्मचारी के नाते अपने दायित्व की जिम्मेवारी कम निभाते हैं और ज्यादा काम यही करते हैं जो आज करने के लिए आए हैं, वे ही लोग आज

इस काम के लिए निकले हुए हैं। हमने पिछले कल भी कहा कि आंदोलन करने की आवश्यकता नहीं है।

03.03.2022/1125/केएस/एचके/2

आप अपना प्रस्ताव रखिए, अपनी बात रखिए और जो आपको कहना है, आप कहिए और उसके पश्चात सरकार पर छोड़ दीजिए। हम लागू करने की स्थिति में होंगे या नहीं होंगे, उस निर्णय को सरकार के ऊपर छोड़ दीजिए। लेकिन आंदोलन करके, दवाब डालकर इस प्रकार से अगर वे प्रयत्न करने की कोशिश करेंगे तो वह उचित नहीं है। सत्ता को हासिल करने के लिए जिस हद तक ये कांग्रेस के लोग चले गए हैं, कहीं पर भी आग लगा दो, किसी को भी भड़काते रहो, यह ठीक नहीं है। इनको मालूम होना चाहिए कि आज पूरा विश्व कोविड के इस दौर से गुज़रते हुए ऐसी परिस्थिति में पहुंचा हुआ है जहां आर्थिक दृष्टि से बहुत सारी चीज़ों में कठिनाई है। जिस राजस्थान में इन्होंने घोषणा की है, आज की तारीख़ में उस प्रदेश के जो आर्थिक हालात हैं, वहां भी यह लागू करना कितना व्यावहारिक हो पाएगा,सम्भव हो पाएगा, यह बहुत बड़ा प्रश्नचिन्ह है और उनको इस बात को समझना चाहिए। उन्होंने बात कही है लेकिन इसके बावजूद वहां पर कब लागू होगा, और कैसे लागू होगा, यह एक बहुत बड़ा सवाल अपने आप में खड़ा हो गया है। मैं इस बात से सहमत हूं कि प्रदेश के विकास में कर्मचारियों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है और उन्होंने उस भूमिका को निभाया है।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी---

03-03-2022/1130/av/yk/1

मुख्य मंत्री ---------- जारी

ऐसे राजनैतिक दल के साथ जुड़कर इन सारी चीजों को करने का तरीका उचित नहीं है। जहां तक यह कहना है कि सरकार ने 'no work, no pay' कानून लागू कर दिया तो इन्होंने भी अपनी सरकार के कार्यकाल में इस कानून को कई बार लागू किया है। हमने कई

बार कह दिया है कि इसके लिए आंदोलन करने की जरूरत नहीं है, अपनी बात कहिए। मैंने पिछले कल भी घोषणा कर दी है कि हमने इस सारे मामले को लेकर मुख्य सचिव, हिमाचल प्रदेश सरकार की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया है। वह कमेटी इस सारे मामले को एग्ज़ामिन करेगी और उसके बाद अपने वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार हम इस बारे में विचार विमर्श करके निर्णय कर सकते हैं। लेकिन हमेशा ही इस प्रकार से राजनैतिक उद्देश्य से बात करते रहना और कर्मचारियों या दूसरे वर्गों को भड़काते रहना कोई उचित बात नहीं है। मैं समझता हूं कि राजनीति एक सीमा तक होनी चाहिए, कुछ मामलों में राजनीति से ऊपर उठकर भी काम करने की आवश्यकता होती है। इन लोगों का कहना है कि हम आज ही घोषणा करते हैं कि हम इसको लागू करेंगे। आज की घोषणा का क्या औचित्य है? अभी 8-9 महीनों के बाद यह प्रदेश चुनाव के दौर से गुजरेगा फिर उसके बाद मालूम पड़ेगा कि किस पार्टी की सरकार बनती है। मगर इनको इतनी बड़ी गलतफहमी है कि इनको ऐसा लग रहा है कि हम तो आ ही गए। मैं तो केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि यहां पर जो भी कर्मचारी बहनें या भाई आंदोलन करने के लिए आए हैं वे अपनी बात को सौहार्दपूर्ण तरीके से कहें। उनके पास सरकार तक अपनी बात पहुंचाने का उचित माध्यम उपलब्ध है। परंतु कर्मचारी होते हुए लगातार सरकार के विरुद्ध चलते रहना और इस प्रकार से व्यवहार करना ठीक नहीं है। मेरा यह कहना है कि सारी चीजों को नियम के अनुरूप देखा जाएगा। यहां से हमारे विपक्ष के मित्रों ने जिस प्रकार से सदन से वॉकआउट किया, क्योंकि उनको बुलाया ही इन लोगों ने है। इन लोगों ने कहा है कि आप लोग आइए हम आपका स्वागत करेंगे और आपको संबोधित करेंगे। यहां से बाहर जाने के बाद वहां अपने भाषण में कहेंगे कि हम सदन छोड़कर आए हैं। मैं केवल यही कहना

03-03-2022/1130/av/yk/2

चाहता हूं कि हमारी सरकार कर्मचारी के हितों के प्रति सदैव संवेदनशील रही है। उनके लिए जिस-जिस समय पर जो-जो करने की आवश्यकता महसूस हुई; वह हमारी सरकार

ने किया भी है। हम यहां पर पंजाब पे कमीशन फोलो करते हैं तो ऐसे में जो कुछ कर्मचारियों के हितों को ध्यान में रखते हुए किया जा सकता था, वह बैस्ट पोसिबल हमारी सरकार ने करने की कोशिश की है। इसलिए मैं अनुरोध करता हूं कि आज के इस आंदोलन के दौरान कर्मचारी वर्ग अपनी बात को शांतिपूर्वक ढंग से कहें और उसके पश्चात यदि वे सरकार के समक्ष अपना प्रस्ताव रखना चाहते हैं तो हम बातचीत के लिए तैयार हैं। परंतु विपक्ष द्वारा सदन से इस प्रकार हर रोज़ वॉकआउट करना यह दिखाता है कि कांग्रेस पार्टी में आज की तारीख में नेतृत्व का बहुत बड़ा अकाल पड़ गया है। यहां पर सी0पी0एम0 वाले उनको गाइड कर रहे थे कि इस प्रकार के नारे लगाओ। कांग्रेस पार्टी ने इस प्रकार से अपनी लीडरशिप को आउटसोर्स कर दिया है। मुझे ऐसा लगता है कि आने वाले समय में पूरे देश से ही यह पार्टी आउटसोर्स होने वाली है। वैसे तो हो चुकी है परंतु जहां बची भी है वहां पर भी आउटसोर्स हो जाएगी। अध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

समाप्त

अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री विनय कुमार प्रश्न संख्या 4740 करेंगे।

अनुपस्थित

(माननीय सदस्य श्री लखविन्द्र सिंह राणा और श्री संजय अवस्थी सदन के अंदर आए।)

प्रश्न संख्या :4741 **टी सी द्वारा जारी**

03/03/2022/1135/टी0सी0वी0/वाई0के0/1

प्रश्न संख्या : 4741 (प्राधिकृत श्री बिक्रम सिंह जरयाल)

श्री बिक्रम सिंह जरयाल : अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि पांगी घाटी में पैट्रोल पम्प स्थापित किए जाने हेतु ड्रा ऑफ लॉट्स की प्रक्रिया कब तक पूरी हो जाएगी

क्योंकि वहां पैट्रोल 120 रुपये और डीजल 100 रुपये प्रति लीटर मिल रहा है। मैं मंत्री जी से यह भी आश्वासन चाहूंगा कि वहां पैट्रोल पम्प कब तक स्थापित हो जाएगा?

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले मंत्री : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने पांगी घाटी में जो पैट्रोल पम्प खोलने का जिक्र किया है, मैं इनके ध्यान में लाना चाहता हूं कि पांगी घाटी में किलाड़ बस स्टैंड के तीन किलोमीटर के आसपास यह पैट्रोल पम्प खुलना था जिसके लिए इंडियन ऑयल कारपोरेशन ने विज्ञापन जारी किया था। इसके लिए 7 लोगों ने अप्लाई किया था और जब ड्रा ऑफ लॉट्स निकाला गया तो जो भूमि चयनित की गई थी, वह भूमि उसके लिए उपयुक्त नहीं मानी गई। उसके पश्चात् जो 6 बचे हुए पार्टिसपेंट्स थे उनमें से फिर से ड्रा निकाला गया और श्रीमती अंजू ठाकुर, पत्नी श्री नरेश कुमार को चयनित किया गया। श्रीमती अंजू ठाकुर को अपने दस्तावेजों को मुख्य प्रबंधक, इंडियन ऑयल कारपोरेशन, शिमला में आगामी कार्रवाई हेतु जमा करवाने के लिए कहा गया है और 31 मार्च, 2022 तक इस कार्रवाई को पूरा करने का निर्णय लिया गया है।

03/03/2022/1135/टी0सी0वी0/वाई0के0/2

प्रश्न संख्या : 4742

श्री नन्द लाल : उपस्थित नहीं।

प्रश्न संख्या : 4743

श्री बलबीर सिंह : उपस्थित नहीं।

प्रश्न संख्या : 4744

श्री रोहित ठाकुर : उपस्थित नहीं।

03/03/2022/1135/टी0सी0वी0/वाई0के0/3

प्रश्न संख्या : 4745

श्री सुरेन्द्र शौरी : अध्यक्ष महोदय, बंजार विधान सभा के अंतर्गत राजकीय पाठशाला बिहार, गुशैणी और थणी के लिए अतिरिक्त धनराशि की व्यवस्था की गई है। इसके लिए मैं मंत्री महोदय का धन्यवाद करना चाहूंगा। बंजार विधान सभा के दो वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हिडब और छुआरा के भवन बनने हैं लेकिन इनके टेंडर लगाने के लिए 30 लाख रुपये की राशि की आवश्यकता है जो अभी तक नहीं मिली है। मैं माननीय मंत्री जी से आग्रह करना चाहूंगा कि इस धनराशि को शीघ्रातिशीघ्र जारी करने की कृपा करें?

शिक्षा मंत्री एन0एस0 द्वारा शुरु ..

03-03-2022/1140/NS/AG/1

प्रश्न संख्या : 4745 .....क्रमागत

शिक्षा मंत्री ..... जारी

अध्यक्ष महोदय, बंजार विधान क्षेत्र में वर्तमान सरकार के समय 11 विद्यालयों का काम चल रहा है। श्री जय राम ठाकुर जी की सरकार ने इन सभी विद्यालयों के निर्माण के लिए उचित धनराशि का प्रावधान किया है। **माननीय सदस्य ने जो पूछा है तो मैं बताना चाहूंगा कि दो सीनियर सेकेंडरी स्कूल हिडब व छुआरा में प्रशासनिक स्वीकृति मिल चुकी है और काम प्रारंभ करने लिए उचित धनराशि का प्रावधान कर दिया जाएगा।**

03-03-2022/1140/NS/AG/2

प्रश्न संख्या : 4746

कर्नल इन्द्र सिंह : अध्यक्ष महोदय, संयोगवश इस प्रश्न में प्रश्नकर्ता भी पूर्व सैनिक है और मंत्री जी उत्तर देंगे वे भी पूर्व सैनिक हैं तथा जिनके बारे में पूछा गया है वे भी पूर्व सैनिक हैं। मंत्री जी ने बड़े विस्तार के साथ इसका उत्तर दिया है और मैं इसके लिए इनका धन्यवाद करता हूं। मैं, मंत्री जी से केवल दो आश्वासन चाहता हूं। पहला, जो अप्वायंटमैंट लैटर पूर्व

सैनिकों को मिलता है उस लैटर में मैंशंन होता है कि 15 दिन के अंदर उनकी प्लेसमैंट की जाएगी लेकिन अक्सर ऐसा नहीं होता है। इसके लिए मैं आश्वासन चाहता हूं कि यह होना चाहिए। दूसरा, सैनिक फौज़ में रह कर अपने घरों से दूर रहते हैं। जब सरकार इनकी प्लेसमैंट करती है तो यथासंभव घर के नजदीक करे तो अच्छा रहेगा।

जल शक्ति मंत्री : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो जानना चाहा है उसकी सूचना बहुत लंबी है और इन्होंने सारी सूचना पढ़ भी ली होगी। माननीय सदस्य ने चाहा है कि 15 दिन की समयावधि जिसमें उनको अपना कार्यभार संभालना है उसको बढ़ाना है और उनकी पोस्टिंग घर के नजदीक हो। मैं बताना चाहूंगा कि पूर्व सैनिक अपने घरों के हजारों किलोमीटर दूर जा करके सर्विस करते हैं और अपनी जिंदगी व जवानी का बहुमूल्य समय वहां व्यतीत करते हैं। इसमें दिक्कत ऐसी है कि जो रिक्तियां होती हैं वे विभिन्न विभागों की अलग-अलग स्थानों पर होती हैं। इसलिए इनको घर के नजदीक अप्वांट करने में दिक्कत आती है? फिर भी हम प्रयास करते हैं कि पूर्व सैनिक को कोई उस वक्त नजदीक से नजदीक अपवायंटमैंट दी जाए। कई बार नजदीक जगह खाली न होने के कारण उनको दूर भेजना पड़ता है। माननीय सदस्य ने 15 दिन की जो समयावधि की बात कही है तो इस पर विचार किया जा सकता है।

प्रश्न संख्या : 4747

श्री राजेन्द्र राणा (सुजानपुर) : उपस्थित नहीं।

03-03-2022/1140/NS/AG/3

प्रश्न संख्या : 4748

श्री नरेन्द्र ठाकुर : अध्यक्ष महोदय, वैसे तो मंत्री जी ने बड़ी डिटेल में सूचना दी है लेकिन मैं, मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि धौलासिद्ध जल विद्युत परियोजना जिला हमीपुर में है। यह प्रोजेक्ट काफी साल पहले लाइम लाइट में आया था। लैंड डिसप्यूट व फंडिंग की वजह से यह रूका रहा। अभी हाल ही में देश के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी व कैबिनेट मंत्री अनुराग जी के प्रयासों से इसमें दोबारा काम शुरू हुआ है। मैं पूछना चाहूंगा कि जो यह एस्टिमेट कोस्ट है जब दोबारा से काम शुरू हुआ 687.97 करोड़ रुपये तब असैस की है या

जब 15 साल पहले लाइम लाइट में आया था तब की अनुमानित कोस्ट है? दूसरा, मैं पूछना चाहूंगा कि क्या इस प्रोजेक्ट को कंपलीशन के लिए टाइम बाउंड किया गया है?

मंत्री जी .....श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

03.03.2022/1145/RKS/AG-1

प्रश्न संख्याः 4748... जारी

बहुउद्देश्यीय परियोजनाएं एवं ऊर्जा मंत्री : अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2010 में इस परियोजना की लागत 497.67 करोड़ रुपये आंकी गई थी। वर्तमान में इस परियोजना की अनुमानित लागत 687.97 करोड़ रुपये है। इस परियोजना का कार्य 6 मई, 2021 को आरंभ हुआ था जिसे नवम्बर, 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। इसकी सारी अप्रोच रोड बन चुकी हैं। 15 फरवरी, 2022 को diversion tunnels का कार्य पूर्ण हो चुका है। डैम बनाने का कार्य चला हुआ है। स्ट्रिप्लिंग का कार्य 50 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। पावर हाउस का सिविल वर्क चला हुआ है। पावर हाउस के सभी कार्यों की मशीनरीज की टेंडर प्रकिया पूर्ण हो चुकी हैं और नवम्बर, 2025 तक इस परियोजना का कार्य पूर्ण हो जाएगा।

प्रश्न संख्याः 4749

श्री पवन कुमार काजल : उपस्थित नहीं

03.03.2022/1145/RKS/AG-2

प्रश्न संख्याः 4750

श्री लखविन्द्र सिंह राणा : अध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र की ग्राम पंचायत, जगतपुर के गांव बनियाला हलेड़ में वर्ष 2008 में कृषि विभाग द्वारा सिंचाई हेतु ट्यूबवैल बोर किया गया था। ट्यूबवैल के खराब होने के कारण जल शक्ति विभाग ने इसे अपने अधीन नहीं लिया। कृषि विभाग द्वारा निर्मित 10 सिंचाई योजनाएं, जोकि ट्यूबवैल पर आधारित थीं, इनमें से 9 योजनाओं को जल शक्ति विभाग को रख-रखाव हेतु हस्तांतरित

किया गया था। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि जो ट्यूबवैल जल शक्ति विभाग के अधीन नहीं लिया गया है क्या उसे जल शक्ति विभाग के अधीन ले लिया जाएगा? इस ट्यूबवैल पर लगभग 20 लाख रुपये खर्च किए गए हैं लेकिन थोड़ी-सी खराबी के कारण इसे बंद कर दिया गया था। इसकी खराबी की गलत रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। इस ट्यूबवैल की मोटर नीचे गिरने के कारण खराब हो गई थी जिसे ठीक करके पुनः चालू कर दिया गया है। मेरा माननीय मंत्री से आग्रह है कि इस योजना को भी जल्द जल शक्ति विभाग के अधीन लिया जाए।

जल शक्ति मंत्री : अध्यक्ष महोदय, कृषि विभाग द्वारा निर्मित 10 सिंचाई योजनाएं, जोकि ट्यूबवैल पर आधारित थीं, में से 9 योजनाओं का रख-रखाव जल शक्ति विभाग द्वारा किया जा रहा है। दसवीं स्कीम में जो थोड़ी-बहुत खराबी थी उसे स्थानीय लोगों द्वारा ठीक करवा दिया गया है। मैं माननीय सदस्य को आश्वस्त करना चाहूंगा कि जल शक्ति विभाग इस स्कीम को अपने संचालन में ले लेगा।

प्रश्न संख्याः 4751

श्रीमती आशा कुमारी : उपस्थित नहीं

03.03.2022/1145/RKS/AG-3

प्रश्न संख्याः 4752

श्री राकेश जम्वाल : अध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र में सुन्दरनगर और निहरी जल शक्ति विभाग के दो उप-मंडल हैं। निहरी, उप-मंडल में मेरी विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र का 30 प्रतिशत हिस्सा आता है तथा सुन्दरनगर उप-मंडल में 70 प्रतिशत भाग आता है। माननीय मुख्य मंत्री जी से मैंने आग्रह किया था और उन्होंने इसकी घोषणा भी की थी। मेरे विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र में माननीय मुख्य मंत्री और जल शक्ति मंत्री के आशीर्वाद से विभिन्न पेयजल और सिंचाई योजनाओं के काम चले हुए हैं।

श्री बी.एस.द्वारा... जारी

03.03.2022/1150/बी.एस./ए0एस0/-1

प्रश्न संख्याः 4752 क्रमांगत...

श्री राकेश जम्वाल जारी...

मैं चाहता हूं कि ये जल्दी-से-जल्दी हमारा आई0पी0एच0 का सब डिविजन और जिन दो अनुभागों की मुख्य मंत्री जी ने घोषणा की हैं वे खुल जाएं। मेरे विधान सभा चुनाव क्षेत्र की ये पेयजल और सिंचाई की योजनाएं हैं और 100 करोड़ रुपए से ज्यादा के ये कार्य चले हैं। मैं चाहता हूं कि उनकी मोनिटरिंग ठीक प्रकार से हो सके और ये योजनाएं भी समय पर तैयार हो सके। ऐसा मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं।

जल शक्ति मंत्री : अध्यक्ष जी, माननीय सदस्य जी ने पहले ही मुख्य मंत्री जी का धन्यवाद कर दिया है, मुख्य मंत्री जी का सुन्दर नगर का दो दिवसीय दौरा था, उस दौरान मुख्य मंत्री जी ने अनेकों बड़ी-बड़ी सौगातें सुन्दर नगर और वहां के दूरदराज के क्षेत्र को दीं हैं। इनमें से जो दो सौगातें बची हैं, इनका निम्नस्तर से विषय आ चुका है और अब इसे मंत्री परिषद की अगली बैठक में जे जाएंगे।

प्रश्न संख्याः 4753

अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री अनिल शर्मा जी, (उपस्थित नहीं)

प्रश्न संख्याः 4754

माननीय सदस्य श्री राम लाल ठाकुर, (उपस्थित नहीं)

03.03.2022/1150/बी.एस./ए0एस0/-2

प्रश्न संख्याः 4755

श्री प्रकाश राणा : अध्यक्ष महोदय, मेरे क्षेत्र की यह काफी बड़ी समस्या है, वहां 58 पंचायतें हैं और इनमें से 42 पंचायतें चौंतड़ा और 16 पंचायतें द्रग विधान सभा क्षेत्र में पड़ती हैं। हमें द्रंग विधान सभा क्षेत्र के लिए 28-30 किलोमीटर दूर जाना पड़ता है, इसलिए हम चाहते हैं कि जोगिन्दर नगर या लडभड़ोल के लिए एक अन्य विकास खंड दिया जाए। यह मांग मेरी सभी पंचायतों की है, मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इस बारे कोई विचार है कि भविष्य में वहां विकास खंड खोला जाए?

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री : माननीय अध्यक्ष जी, ऐसा कोई प्रस्ताव आएगा तो उस पर विचार किया जाएगा।

प्रश्न समाप्त/

03.03.2022/1150/बी.एस./ए0एस0/-3

प्रश्न संख्या : 4756

श्री राकेश सिंघा : अध्यक्ष महोदय, मैं जल्दी-जल्दी में उत्तर देख रहा था और मेरे मन में यह बात उठी कि इसके ए भाग में यह उत्तर आया है कि ऐसी कोई जानकारी नहीं है कि अफगानिस्तान,टर्की और ईरान का सेब हमारे देश में आ रहा है। लेकिन आदरणीय बलबीर सिंह वर्मा जी भी जानते हैं, ये सेब के मसलों को ले करके बहुत चिंतित रहते हैं। आज टोटल मार्किट में यह फ्लडिड है और अफगानिस्तान के जरिए जो सेब आ रहा है इसका कारण यह है कि आप कर से बच जाते हैं। अगर आप थ्रू पोर्ट आएंगे तो आपको कर लगता है। आदरणीय भारद्वाज जी भी जानते हैं, कि वह सेब आज 40-60 रुपए किलो बिक रहा है और हमारे कोल्ड स्टोरों में बहुत से इस वर्ष पड़ा है।

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

03-03-2022/1155/ए.एस.-ए.जी. /1

प्रश्न संख्या - 4756....जारी

श्री राकेश सिंघा ..... जारी

इसलिए मेरी आपसे विनती है कि आप केन्द्र सरकार के जरिए इस बात को कंट्रोल करें। इसके अलावा हमने कहा है कि इम्पोर्ट ड्यूटी 50 प्रतिशत से 100 प्रतिशत करनी चाहिए और यह हमारी अर्थव्यवस्था के लिए बहुत जरूरी है। मैं जानना चाहता हूं कि इसकी लेटस्ट स्थिति क्या है? यह दो छोटे से प्रश्न मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा।

जल शक्ति मंत्री : अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं माननीय सदस्य को बधाई देना चाहता हूं। आज इन्होंने कांग्रेस की लीडरशिप पर अपना कब्जा कर लिया है। इसका मतलब यह हुआ कि अब कांग्रेस पार्टी में मुख्य मंत्री पद का एक और उम्मीदवार खड़ा हो गया है। अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्य जी को याद दिलाना चाहता हूं कि जब ये राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर बोल रहे थे तब इन्होंने कहा था कि हम न्यू पैंशन स्कीम को लागू करना चाहते हैं। आपके पास कार्यवाही की कॉपी आई होगी तो आप उसमें पढ़ सकते हैं कि कहा था या नहीं। अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो प्रश्न पूछा है वह बहुत महत्वपूर्ण है। माननीय सदस्य जी ने जानकारी दी है कि टर्की से इरान और फिर अफगानिस्तान के रास्ते सेब भारत में आ रहा है। इस सेब के आने से निश्चित तौर पर हमारे हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कशमीर व उत्तराखण्ड के सेब के दाम कम मिल रहे हैं और वह सी.ए. स्टोर में रखा हुआ है। वहां का सेब सस्ते दामों में बिक रहा है और सारी मार्किट को प्रभावित कर रहा है। इस विषय पर हम प्रयास कर रहे हैं और माननीय मुख्य मंत्री जी ने भी दिल्ली बात की है। इसके अलावा माननीय सदस्य जी ने पूछा है कि इम्पोर्ट ड्यूटी को बढ़ाकर 50 प्रतिशत से 100 प्रतिशत कर दिया जाए। इस विषय को हमने माननीय मुख्य मंत्री जी के माध्यम से भारत सरकार के सम्मुख रख दिया है और कहा है कि यदि यह इम्पोर्ट ड्यूटी बढ़ेगी तभी हिमाचल प्रदेश के सेब का अच्छा दाम प्राप्त हो सकता है।

03-03-2022/1155/ए.एस.-ए.जी. /2

हम इसमें पूरी कोशिश कर रहे हैं और माननीय सदस्य से भी आग्रह करते हैं कि आप हमारे साथ मिल कर इस विषय पर काम करें। मैं भी बागवान हूं व आप भी एक बागवान हैं और हमारा सांझा दायित्व बनता है कि हम इसके लिए मिलकर कार्य करें।

अध्यक्ष : माननीय सदस्य बड़े विस्तार से उत्तर दे दिया है। अब आपको क्या बोलना है? ...व्यवधान... अच्छा ठीक है माननीय सदस्य श्री राकेश सिंघा आप बोलिए।

श्री राकेश सिंघा : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी को blanket guarantee दे रहा हूं कि मैं इनके साथ विपक्ष के लोगों को भी पकड़ कर ले चलूंगा क्योंकि यह cause of Himachal Pradesh है। इसलिए जब भी माननीय मंत्री जी कहेंगे एक सांझा डेलिगेशन इनकी अध्यक्षता में या माननीय मुख्य मंत्री जी की अध्यक्षता में चलने के लिए तैयार है। यदि विपक्ष के लोग तैयार नहीं होंगे तो मैं इनको पकड़ कर ले आऊंगा क्योंकि यह बहुत जरूरी है। ऐसा न करने से सेब की खेती तबाह हो जाएगी।

प्रश्न समाप्त /-

03-03-2022/1155/ए.एस.-ए.जी. /3

प्रश्न संख्या - 4757

श्री बलबीर सिंह वर्मा : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय शिक्षा मंत्री जी के ध्यान में लाना चाहता हूं कि मेरे चुनाव क्षेत्र में कुछ स्कूल की बिल्डिंग्स में काफी वर्षों से काम चला हुआ है, जैसे राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला, देहा और राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला, कुपवी में। मैं माननीय मंत्री जी से आग्रह करना चाहता हूं कि उस स्कूल बिल्डिंग के लिए फण्ड दिया जाए जहां पर बच्चों की संख्या 500 से अधिक हो। मेरे चुनाव क्षेत्र में कुछ स्कूल की बिल्डिंग्स ऐसी हैं जहां पर बच्चों की संख्या बहुत कम है और वहां पर भवन निर्माण के

पैसे दिए गए हैं। जहां पर बच्चों की संख्या 500-700 हो जैसे हमारी राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला, कुपवी में 700 बच्चे हैं और राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला,

श्री जे.एस. द्वारा जारी.....

03.03.2022/1200/JS/DC/1

प्रश्न संख्याः 4756:------**जारी**----

श्री बलबीर सिंह वर्माः-------**जारी**-------

और देहा, सीनियर सेकंडरी स्कूल भी देहा तहसील में है। कुपवी भी तहसील है। वहां दोनों जगह बच्चों की संख्या ज्यादा है। लेकिन स्कूल बिल्डिंग्ज़ तैयार नहीं हो रही हैं और उनमें स्ट्रक्चर खड़े हो गए हैं। उनकी चिनाई नहीं हो रही है, वहां पर चिनाई और प्लस्तर हो जाए तभी वे बिल्डिंग्ज़ ठीक रह सकती हैं। मैं, माननीय मंत्री महोदय के ध्यान में लाना चाहता हूं कि जो स्ट्रक्चर 5-6 साल से खड़ा हो, जैसे कि हमारे क्षेत्र में बर्फ गिरती है और कोरे से वह सीमेंट को खराब कर देती है , उससे स्ट्रक्चर की स्ट्रेंथ कम हो जाती है। जैसे ही स्ट्रक्चर खड़ा होता है उसमें छत पड़नी चाहिए, ऐसा मेरा माननीय मंत्री महोदय से निवेदन है। स्पेशली इन दो-तीन स्कूलों के लिए कब तक फंड दे दिया जाएगा?

प्रश्नकाल समाप्त।

03.03.2022/1200/JS/DC/2

कागज़ात सभा पटल पर

अध्यक्षः अब माननीय मुख्य मंत्री महोदय कागज़ात सभा पटल पर रखेंगे।

मुख्य मन्त्रीः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से राज्य सरकार का 2021-22 वित्तीय वर्ष का आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत करता हूं जो इस प्रकार है:-

प्रदेश सरकार ने कोविड-19 की दूसरी लहर से उत्पन्न परिस्थितियों का भी धैर्य के साथ सामना किया और सूझ-बूझ का परिचय दिया है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण निःशुल्क टीकाकरण अभियान था जो कि 16 जनवरी, 2021 से आरम्भ हुआ और कुशल प्रबंधन से लक्षित समय अवधि में पूर्ण किया और जिसकी प्रशंसा देश भर में हुई है। प्रदेश सरकार ने प्रदेशवासियों के जीवन और आजीविका बचाने के लिए भरसक प्रयास किए हैं और आज भी महामारी से निपटने के लिए प्रयासरत हैं। जो आंकड़े अब मैं प्रस्तुत करने जा रहा हूं वह प्रदेश सरकार के सतत प्रयासों के परिणामस्वरुप ही संभव हो पाया और अब अर्थव्यवस्था स्पष्ट तौर पर बहुत तेजी से वापिस वृद्धि की तरफ अग्रसर है। प्रचलित भावों पर राज्य का सकल घरेलू उत्पाद वर्ष 2020-21 में 1 लाख 56 हजार 675 करोड़ रुपये से बढ़कर 2021-22 में अग्रिम अनुमानों के अनुसार 1 लाख 75 हजार 173 करोड़ रूपये होने की सम्भावना है। अग्रिम अनुमानों के अनुसार वर्ष 2021-22 आर्थिक वृद्धि दर 8.3 प्रतिशत रहने की संभावना है जो कि पिछले वर्ष 2020-21 में अनुमानित (-) 5.2 प्रतिशत थी। प्रचलित भावों पर प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2020-21 में 1 लाख 83 हजार 333 रुपये से बढ़कर वर्ष 2021-22 में 10.1 प्रतिशत की बढ़ौत्तरी के साथ 2 लाख 1 हजार 854 रुपये तक पहुंचना अनुमानित है।वर्ष 2021-22 के दौरान कृषि क्षेत्र में वृद्धि दर 8.7 प्रतिशत विनिर्माण (manufacturing) क्षेत्र में 11.3 प्रतिशत, निर्माण (construction) क्षेत्र में 13.3 प्रतिशत, व्यापार, होटल-रेस्त्रां इत्यादि में 9.1 प्रतिशत की वृद्धि दर अनुमानित है। वर्ष 2016-17 में शिक्षा पर व्यय सकल घरेलू उत्पाद का कुल 4.17 प्रतिशत था जो कि वर्ष 2021-22 में बढ़कर 4.72 प्रतिशत हो गया है। इसी तरह कुल सकल घरेलू उत्पाद का 2016-17 में स्वास्थ्य पर व्यय 1.42 प्रतिशत था जो कि 2021-22 में बढ़कर 1.70 प्रतिशत हो गया। आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार राज्य सरकार द्वारा सामाजिक सेवाओं पर व्यय 2016-17 के 29.52 प्रतिशत से बढ़कर 2021-22 में 33.91 प्रतिशत हो गया है।

श्री एस.एस. द्वारा जारी....

03.03.2022/1205/SS-DC/1

मुख्य मंत्री क्रमागत :

मुझे विश्वास है कि वर्ष 2022-23 में प्रदेश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि वर्ष 2021-22 की तर्ज पर गतिशील रहेगी और दहाई अंक यानी कि डबल डिजिट की वृद्धि लक्ष्य की ओर अग्रसर होगी।

अध्यक्ष महोदय, मैंने आर्थिक सर्वेक्षण का मुख्य सार प्रस्तुत किया है। पूर्ण ब्यौरे का संकलन माननीय सदन में प्रस्तुत कर दिया गया है, धन्यवाद।

समाप्त

03.03.2022/1205/SS-DC/2

<u>कागज़ात सभा पटल पर</u>

अध्यक्षः अब जल शक्ति मंत्री कागज़ात सभा पटल पर रखेंगे ।

जल शक्ति मन्त्रीः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 619(4) के अन्तर्गत हिमाचल प्रदेश उद्यान उपज विपणन एवं विधायन निगम सीमित का 46वां वार्षिक प्रतिवेदन, वर्ष 2019-20 (विलम्ब के कारणों सहित) की प्रति सभा पटल पर रखता हूं।

अध्यक्षः अब ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री कागज़ात सभा पटल पर रखेंगे।

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मन्त्रीः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 186 की उप-धारा (4) के अन्तर्गत हिमाचल प्रदेश पंचायती राज (जिला परिषद् में तकनीकी सहायक की नियुक्ति एवं सेवा शर्तें) नियम, 2020 जोकि अधिसूचना संख्याःपीसीएच-एचबी (1)1/2019-टीए-II-49761-882 दिनांक 17.08.2020 द्वारा अधिसूचित तथा शासकीय राजपत्र में दिनांक 29.08.2020 को प्रकाशित की प्रति सभा पटल पर रखता हूं।

03.03.2022/1205/SS-DC/3

सदन की समितियों के प्रतिवेदन :

अध्यक्षः अब श्री बलबीर सिंह, सभापति, कल्याण समिति, कल्याण समिति (वर्ष 2021-22) के प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति सभा में उपस्थापित करेंगे तथा सदन के पटल पर भी रखेंगे।

श्री बलबीर सिंहः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से कल्याण समिति (वर्ष 2021-22) के निम्नलिखित प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति सभा में उपस्थापित करता हूं तथा सदन के पटल पर भी रखता हूंः-

i. समिति का 37वां मूल प्रतिवेदन जोकि प्रदेश में संचालित "प्रधानमन्त्री मातृ वन्दना योजना" से सम्बन्धित गतिविधियों की संवीक्षा पर आधारित तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग से सम्बन्धित है ;

ii. समिति का 38वां कार्रवाई प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा)जोकि समिति के 25वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) (वर्ष 2020-21) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर आधारित तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग से सम्बन्धित है;

iii. समिति का 39वां कार्रवाई प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि समिति के 33वें मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) (वर्ष 2020-21) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर आधारित तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के अन्तर्गत "अनुसूचित जाति एवं जनजाति विकास निगम की योजनाओं" से सम्बन्धित है; और

iv. समिति का 40वां कार्रवाई प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि समिति के 22वें मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) (वर्ष 2019-20) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर आधारित तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के अन्तर्गत "बेटी है अनमोल योजना" से सम्बन्धित है ।

अध्यक्षः श्री हीरा लाल, सभापति, सामान्य विकास समिति, सामान्य विकास समिति (वर्ष 2021-22) के प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति सभा में उपस्थापित करेंगे तथा सदन के पटल पर भी रखेंगे।

श्री हीरा लालः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से सामान्य विकास समिति (वर्ष 2021-22) के निम्नलिखित प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति सभा में उपस्थापित करता हूं तथा सदन के पटल पर भी रखता हूंः-

i. समिति का 28वां मूल प्रतिवेदन जोकि परिवहन विभाग की गतिविधियों/कार्यों की संवीक्षा पर आधारित है; और

ii. समिति का 29वां कार्रवाई प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि समिति के 20वें मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) (वर्ष 2020-21) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर आधारित तथा परिवहन विभाग से सम्बन्धित है ।

अध्यक्षः श्री बलबीर सिंह वर्मा, सभापति, ग्रामीण नियोजन समिति, ग्रामीण नियोजन समिति (वर्ष 2021-22) के प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति सभा में उपस्थापित करेंगे तथा सदन के पटल पर भी रखेंगे।

श्री बलबीर सिंह वर्माः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से ग्रामीण नियोजन समिति (वर्ष 2021-22) के निम्नलिखित प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति सभा में उपस्थापित करता हूं तथा सदन के पटल पर भी रखता हूं :-

03.03.2022/1205/SS-DC/5

i. समिति के अष्टम् मूल प्रतिवेदन (बारहवीं विधान सभा) (वर्ष 2014-15) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर बना 18वां कार्रवाई प्रतिवेदन (बारहवीं विधान सभा) (वर्ष 2015-16) में निहित सिफारिशों पर सरकार द्वारा कृत कार्रवाई पर आधारित अग्रेत्तर कार्रवाई विवरण जोकि उद्योग विभाग से सम्बन्धित है; और

ii. समिति के अष्टम् मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) (वर्ष 2018-19) में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर बना 21वां कार्रवाई प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) (वर्ष 2020-21) में निहित सिफारिशों पर सरकार द्वारा कृत कार्रवाई पर आधारित अग्रेत्तर कार्रवाई विवरण जोकि ग्रामीण विकास विभाग से सम्बन्धित है।

03.03.2022/1205/SS-DC/6

विधान सभा कार्य-सलाहकार समिति का प्रतिवेदन

अध्यक्ष : अब कर्नल इन्द्र सिंह जी कार्य सलाकारद समिति के 18वें प्रतिवेदन को सभा में प्रस्तुत करेंगे और प्रस्ताव भी करेंगे कि उसे अंगीकार किया जाए।

कर्नल इन्द्र सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से कार्य सलाहकार समिति के 18वें प्रतिवेदन की प्रति सभा में उपस्थापित करता हूं तथा सभापटल पर रखता हूं।

अध्यक्ष : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ कि यह माननीय सदन कार्य सलाहकार समिति द्वारा अपने 18वें प्रतिवेदन में की गई सिफारिशों से सहमत है।

तो प्रश्न यह है कि यह माननीय सदन कार्य सलाहकार समिति द्वारा अपने 18वें प्रतिवेदन में की गई सिफारिशों से सहमत है।

प्रस्ताव स्वीकार

गैर-सरकारी सदस्य कार्य

आज गैर सरकारी सदस्य कार्य दिवस है लेकिन उससे पहले माननीय मुख्य मंत्री जी कुछ कहना चाहेंगे।

03.03.2022/1205/SS-DC/7

माननीय मुख्य मंत्री द्वारा वक्तव्य

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। हमारे हिमाचल के बच्चों व लोगों की यूक्रेन में जो लेटैस्ट पॉजिशन है उस संदर्भ में मैं इस माननीय सदन में एक स्टेटमैंट देना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, रूस पर यूक्रेन के मध्य चल रहे तनाव व युद्ध के कारण उत्पन्न वैश्विक संकट चिंता का विषय है। यूक्रेन में हिमाचल प्रदेश के छात्र-छात्राएं उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। वहां लगातार बढ़ते तनाव व युद्ध की स्थिति को देखते हुए हिमाचल प्रदेश सरकार ने वहां रह रहे हिमाचलवासी छात्र-छात्राओं की सकुशल वापसी के लिए त्वरित प्रयास किए हैं।

जारी श्रीमती के0एस0

03.03.2022/1210/केएस/एचके/1

मुख्य मंत्रीः अभी तक की एकत्रित सूचना के आधार पर 198 छात्र सकुशल वापिस पहुंच गए हैं तथा 249 अभी भी यूक्रेन या यूक्रेन के सीमावर्ती देशों में फंसे हैं जिनमें से 53 बच्चे खारकीव में फंसे हुए हैं। इन 249 में से 163 से सम्पर्क स्थापित हो गया है। पूरे प्रदेश में राज्य सरकार के अधिकारी उन सभी परिवारों से मिल रहे हैं जिनके बच्चे या अन्य सदस्य यूक्रेन में फंसे हुए हैं। इस विषय पर सरकार पूर्ण संवेदनशीलता से त्वरित प्रयास कर रही है। यद्यपि वहां फंसे हुए 86 बच्चों से भी लगातार सम्पर्क करने का प्रयत्न किया जा रहा है। विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भी हवाई उड़ानों की संख्या बढ़ा दी गई है तथा पिछले कल एयर फोर्स का एक जहाज भी भारतीयों को यूक्रेन से लेकर वापिस आया है। भारत सरकार के चार वरिष्ठ मंत्री इस समय यूक्रेन के सीमावर्ती देशों में जा कर भारतीय नागरिकों और छात्रों की सकुशल वापसी के कार्य में लगे हुए हैं तथा प्रत्येक नागरिक की सकुशल वापसी सुनिश्चित की जा रही है।

अध्यक्ष महोदय, हमारी प्रदेश सरकार और केन्द्र सरकार की ओर से यह बहुत जोरदार प्रयास है कि हमारा प्रत्येक बच्चा सुरक्षित भारत और अपने परिवार के बीच में पहुंचे। उस दृष्टि से प्रदेश सरकार लगातार केन्द्र सरकार के सम्पर्क में है और जो भी इनपुट हमें बच्चों के अभिभावकों से या बच्चों के माध्यम से प्राप्त हो रही है, तुरंत हम आगे उसको कम्युनिकेट करके देख रहे हैं कि वहां पर क्या मदद की जा सकती है। मैं विशेषतौर से आदरणीय प्रधान मंत्री जी का आभार व्यक्त करना चाहूंगा कि उन्होंने इस विषय को बहुत गम्भीरता से लिया है और पिछले कल भी अधिकारिक स्तर पर भी और प्रधान मंत्री जी ने भी इस मामले को ले कर दोनों देशों के साथ सम्पर्क करके अपनी बात कही है और कहा है कि भारत का प्रत्येक नागरिक जो वहां पर है, वहां पर भी सुरक्षित रहे और उसके पश्चात् कैसे उसको सुरक्षित अपने देश वापिस लाया जा सके, उसके लिए सहयोग के लिए दोनों देशों को कहा है और मैं उम्मीद करता हूं कि जो बच्चे वहां पर अभी फंसे हैं, मुझे बहुत से बच्चों से इस बात की भी जानकारी प्राप्त हुई कि वे अलग-अलग रास्तों से सीमावर्ती देशों में पहुंचे हैं और वहां वे सुरक्षित हैं। कुछ जगह उनको होटल्ज़ में ठहरने की व्यवस्था की गई है। फ्लाइट का अरेंजमेंट भी किया गया है और जैसे ही फ्लाइट अवेलेबल होती है, तुरंत

वहां से निकलकर वे भारत वापिस आ जाएंगे और अपने प्रदेश, अपने परिवार वालों के बीच में होंगे। धन्यवाद।

03.03.2022/1210/केएस/एचके/2

श्रीमती आशा कुमारीः अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी ने जो वक्तव्य दिया, उसका तो हम स्वागत करते हैं कि हमारे काफी सारे बच्चे निकलकर वापिस आ गए हैं। बाकी सारी बातें ठीक हैं मुख्य मंत्री जी, मैं आपसे एक ही निवेदन करुंगी कि जो बच्चे खारकीव, सुमी, और कीव में फंसे हैं, आप स्वयं जानते हैं, आपसे उनके पेरेंट्स भी मिले थे, आप जानते हैं कि उनको जो अपनी फोरन मिनिस्ट्री है, एम्बेसी है, वहां से उनको एडवाइज़री जारी हुई कि आप किसी भी तरह से निकल जाएं। अब किसी भी तरह से कैसे निकलें जब वहां पर कोई साधन ही नहीं है। क्योंकि जैसे ही वे बाहर निकलते हैं, जैसे कर्नाटक का बच्चा खाना लेने के लिए बाहर निकला था, बाहर निकलते हैं तो शैलिंग हो रही है। मेरा आपसे निवेदन रहेगा कि जो प्रधान मंत्री जी और विदेश मंत्रालय ने रशिया से बातचीत चालू की है कि हमारे बच्चों को इंडियन फ्लैग लगाकर या बस अरेंज कर दी जाए या कुछ और कर दिया जाए, it is not a problem of the children जो बॉर्डर तक पहुंच गए हैं। वे तो अपने साधन से पहुंच रहे हैं। हमारी सरकार जो कर रही है, वह तब कर रही है जब बॉर्डर क्रॉस कर रहे हैं। मगर बॉर्डर तक पहुंचाने में कृपया स्पैशली उनसे बात करें कि बॉर्डर तक पहुंचाने में भी या बसिज़ का या कुछ और इन्तज़ाम कर दें। बर्फ पड़ रही है it's very-very cold. मेरे चुनाव क्षेत्र के बच्चे भी वहां फंसे हैं, मण्डी से भी हैं और बाकी जगहों से भी हैं। And mostly Kharkiv, Sumy and Kiev, these are the three dangerous shelling areas. इसमें अगर कोई बातचीत हो कर बॉर्डर तक पहुंचाने के इन्तज़ाम में हम थोड़ा और तेजी लाएं तो बच्चों की कुछ सहायता हो सकेगी। धन्यवाद।

मुख्य मंत्री जी अ0व0 की बारी में---

03-03-2022/1215/av/hk/1

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, वैसे तो मैंने अपने वक्तव्य में जो कहना था वह कह दिया है। लेकिन जहां तक कीव की बात है तो अभी तक की सूचना के मुताबिक वहां पर हिमाचल

प्रदेश के जितने भी बच्चे थे; वे निकाल दिए हैं। हां, खारकीव में अभी भी 53 बच्चों के फंसने की जानकारी मिल रही है। वहां के हालात चिंताजनक बने हुए हैं। वहां से बच्चों को निकालने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि शैलिंग लगातार हो रही है जिसके कारण वहां पर भारत के एक बच्चे की दुःखद मृत्यु भी हुई है। मैं यहां पर इतना जरूर कहना चाहता हूं कि प्रधान मंत्री जी ने इस संदर्भ में दोनों देशों से एक-एक चीज को लेकर के बातचीत की है कि हमारे बच्चों को वहां से निकालने में मदद की जाए। दूसरे देशों के बोर्डर तक आने के पश्चात की व्यवस्था हम स्वयं देखेंगे तथा वे कर भी रहे हैं, तो मैं उम्मीद करता हूं कि उस दृष्टि से हर चीज ठीक होगी।

03-03-2022/1215/av/hk/2

गैर सरकारी सदस्य कार्य

अध्यक्ष : आज गैर सरकारी सदस्य कार्य दिवस है। माननीय सदस्य श्री जगत सिंह नेगी द्वारा दिनांक 14.12.2021 को प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था कि बदलते परिवेश में विधायकों की भूमिका पर यह सदन चर्चा करे; इसलिए अब इस पर आगे चर्चा शुरू होगी। इस विषय पर बोलने के लिए 35 मिनट का समय निर्धारित किया गया है माननीय श्री जगत सिंह नेगी ने धर्मशाला में आयोजित सत्र के दौरान इस प्रस्ताव को प्रस्तुत कर दिया था जिस पर आप 26 मिनट बोले थे। इस विषय पर बोलने के लिए लगभग 10 सदस्यों के नाम आए हैं इसलिए प्रत्येक माननीय सदस्य अपनी बात को 5-5 मिनट में समाप्त करें। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि निश्चित समय में अपनी-अपनी बात समाप्त करें ताकि मुझे यहां से घंटी बजाने की आवश्यकता न पड़े।

सर्वप्रथम माननीय सदस्या श्रीमती आशा कुमारी इस चर्चा में भाग लेंगी।

03-03-2022/1215/av/hk/3

श्रीमती आशा कुमारी (डलहौजी) : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य श्री जगत सिंह नेगी ने जो इस सदन में गैर सरकारी संकल्प लाया है, यह बहुत ही महत्वपूर्ण है और मैं जानती

हूं कि सरकार की ओर से यह बात आएगी कि आप थे तो आपने क्यों नहीं किया। लेकिन प्रश्न यह नहीं है, प्रश्न यह है कि हम सभी इस माननीय सदन के सदस्य हैं और कभी इधर, तो कभी उधर होते हैं। यह विषय केवल मान-सम्मान से जुड़ा हुआ है। यहां पर श्री जगत सिंह नेगी ने जो प्रस्ताव लाया है मैं इसका समर्थन करती हूं। अगर देखा जाए तो आजकल के वातावरण में यह स्पष्ट ही नहीं है कि एक विधायक की जगह क्या है। भारत सरकार ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि किसी भी पार्टी का एम0पी0 हो, अगर एम0पी0 के एरिया में राष्ट्रीय हित की कोई स्कीम शुरू होती है तो उसकी उद्घाटन पट्टिका पर सबके नाम लिखे जाते हैं। वह चाहे पक्ष का हो या विपक्ष का हो और भारत सरकार की यह एक परंपरा बन गई है। मैं समझती हूं कि इसमें कोई नुकसान भी नहीं है क्योंकि जो भी एम0एल0ए0 प्रायोरिटी की स्कीम्ज होती हैं उसमें विधायक का नाम भी आ जाए। आज हम इधर है तो हमारा विपक्ष की ओर से आएगा और कल हम उधर होंगे तो आपका भी विपक्ष की ओर से आएगा। यह केवल विधायक के मान-सम्मान की बात है, इसमें किसी पार्टी या व्यक्ति विशेष की बात नहीं है। वैसे मैंने देखा भी है क्योंकि कई बार कहीं-कहीं होता भी रहा है और कई बार नहीं भी हुआ है। मैंने चम्बा निर्वाचन क्षेत्र में एक पट्टिका पर देखा है कि श्री वीरभद्र सिंह जी के नीचे पूर्व विधायक श्री बी0 के0 चौहान का नाम लिखा हुआ है। यहां पर मेरे साथी सदस्य श्री पवन नैय्यर जी बैठे हैं तो मुझे लगता है कि आपने भी देखा होगा क्योंकि वह आपके चुनाव क्षेत्र में पड़ता है। मैंने रुक कर उसको बड़े गौर से देखा है और मैं यह नहीं कह रही हूं कि it was the practice. ..Interruption... I am not saying that it was the practice.

टी सी द्वारा जारी

03/03/2022/1220/टी0सी0वी0/वाई0के0/1

श्रीमती आशा कुमारी... जारी

मैं यह कहना चाहती हूं कि अगर उन्होंने ऐसा किया तो बहुत अच्छा किया और आगे हम भी ऐसा करें तो इसमें कोई संकोच नहीं होना चाहिए। यह मान-सम्मान की बात है।

आजकल विधायकों की पट्टिकाओं को तोड़ने का सिलसिला जारी है। यह बहुत बुरी बात है। जिसकी पट्टिका लगी हुई है उसको तोड़ने का क्या औचित्य है, चाहे कोई ए या बी विधायक हो। यदि किसी जगह ट्रक या गाड़ी के कारण कोई पट्टिका टूट गई तो उसको माना जा सकता है लेकिन जो पट्टिकाएं रोड से बाहर लगी हुई है उनको भी तोड़ा जा रहा है। क्या इससे हमारा मान-सम्मान बढ़ रहा है? क्या लोगों को पता नहीं है कि इसका उद्घाटन किसने किया था? यह गलत प्रथा है।

दूसरा, नोटिफाइड कमेटी की मीटिंग्ज में असंवैधानिक आदमी कैसे बैठ सकता है? उस आदमी को जिलाधीश या जो उस कमेटी के चेयरपर्सन होते हैं, वे क्यों नहीं रोकते। हम किसी कारण से उस मीटिंग में नहीं जा सके तो इसका मतलब यह नहीं है कि कोई असंवैधानिक आदमी वहां जाकर बैठ जाए। He/She is not authorized. I may not go, you may not go तो क्या इसका यह मतलब है कि जो उस कमेटी का मैंबर ही नहीं है, वह वहां जाकर बैठ जाए। ये सरकार द्वारा नोटिफाइड कमेटीज हैं। मैं यह कहना चाहती हूं कि यह गलत प्रथा है। हर जगह असंवैधानिक अथॉरिटीज खड़ी की हुई हैं। मेरा मुख्य मंत्री जी से यह निवेदन है कि आप जिलाधीश को यह आदेश दें कि जो सरकार द्वारा नोटिफाइड कमेटी का मैंबर नहीं है, उसको उस मीटिंग में अलाउ न किया जाए। आज हर कोई बड़ा आदमी है लेकिन यह तो नहीं हो सकता है कि आपकी कैबिनेट की मीटिंग में कोई भी विधायक जाकर बैठ जाए और कहे कि मैं भी बड़ा आदमी हूं, मैं भी यहां बैठूंगा। मुख्य मंत्री जी और अन्य मंत्री जी प्रदेश के प्रवास पर जाते हैं लेकिन हम विपक्ष के विधायकों को आपका टूअर प्रोग्राम भी नहीं आता है, न्योता तो दूर की बात। क्या हम विधायक नहीं है? Should it not come as a courtesy? इसलिए इन्होंने जो कहा है यह बहुत ही महत्वपूर्ण है और बहुत जरूरी है। यदि मुख्य मंत्री जी आप इस कार्य को कर देंगे तो यह सब के लिए हो जाएगा और आपको सभी लोग याद करेंगे कि आप यह अच्छा कार्य कर गए। आपको ज्यादा तब याद रखेंगे जब आपकी पार्टी इधर (विपक्ष) बैठेगी।

अध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

03/03/2022/1220/टी0सी0वी0/वाई0के0/2

अध्यक्ष : अब इस चर्चा में माननीय सदस्य, श्री नन्द लाल जी भाग लेंगे।

श्री नन्द लाल, रामपुर : अध्यक्ष महोदय, बदलते परिवेश में विधायकों की भूमिका पर यह सदन विचार करे।" गैर सरकारी संकल्प श्री जगत सिंह नेगी जी यहां सदन में लाए हैं और यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। आज विधायक बनना इतना आसान नहीं है जितना आज से 20-25 साल पहले होता था। बड़ी मुश्किल से कोई विधायक बनता है उसके बाद इस संस्थान की गरिमा को अगर हम dilute करते जाएंगे तो एक बहुत अपमानजनक बात है।

एन0एस0 द्वारा जारी ..

03-03-2022/1225/NS/YK/1

श्री नन्द लाल ..... जारी

मैं यह कहना चाहूंगा कि जितने भी सरकारी फंक्शन्ज़ होते हैं, मुख्य मंत्री और मंत्रियों की जितनी विजिट्स होती हैं वे सब सरकारी फंक्शन होते हैं और इस सरकार के अंदर वहां के संबंधित विधायक को इनफोर्म करना उचित नहीं समझा जाता है। मुझे यह भी मालूम है कि यहां पर ऐसा बोला जाएगा कि कांग्रेस की सरकार के समय में भी ऐसा होता था। Please stop this business. एम.एल.एज़. के इंस्टिच्यूशन को प्रोपर जगह देने के लिए जो भी करना पड़े वह करना चाहिए चाहे इधर हों या उधर हों। अध्यक्ष महोदय, आजकल लोगों में अवेयरनैस और एक्सपैक्टेशन्ज़ ज्यादा हैं इसलिए विधायक का रोल बहुत ही डेलीकेट और खतरनाक होता जा रहा है। इस परिपेक्ष में मेरा कहने का मतलब है कि इस गरिमा को बनाते हुए एम.एल.ए. की पोजीशन ठीक रखने के लिए सरकार का काम इस तरह का होना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, अब मैं असंवैधानिक तत्व या ऑथोरिटीज़ के बारे में बात करना चाहूंगा। मैं कहना चाहूंगा कि आप उनको दो जो देना है। मैं यहां तक कहना चाहूंगा कि जितने भी चेयरमैन और वाइस चेयरमैन बनने होते हैं अगर उनको चुने हुए विधायकों से बना दिया जाए तो खर्च भी बच जाता है और उनको अपनी पोजीशन भी मालूम हो जाती है। यहां पर अन्य सदस्यों ने भी कहा कि वे मीटिंग में आ जाते हैं और उनको वहां पर जगह दी जाती है। अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहूंगा कि आजकल अधिकारियों को भी इस तरह की ट्रेनिंग

है और आप खुद भी देख ही रहे हैं कि जैसे बैकवर्ड एरिया सब-प्लान, डी0सी0पी0 फंड को डी0सी0 साहब उनकी रिकमेंडेशन पर ही रिलीज कर रहा है। यह बड़े दुःख की बात है और इस तरह से नहीं होना चाहिए। एम.एल.ए. इंस्टीच्यूशन के अंदर बैकवर्ड एरिया से भी विधायक आते हैं और उस बैकवर्ड एरिया के लोगों की रिकमेंडेशन पर इस फंड को रिलीज करना चाहिए। वे ऐसा नहीं करते हैं क्योंकि उनकी भी मजबूरी है और हम इस बात को मानते हैं। इस तरह के जो असंवैधानिक तत्व हैं और वे जब एरिया में जाते हैं तो they are accompanied by the Deputy Commissioner or the SDM concerned. अच्छी बात है उनको और एनकरेज़ करना चाहिए तथा मदद करनी चाहिए but at the same time they should not ignore or avoid the MLAs. तो मेरा यह भी कहना है।

03-03-2022/1225/NS/YK/2

अध्यक्ष महोदय, अब मैं पट्टिकाओं की बात करना चाहूंगा। एटलिस्ट एम.एल.एज. प्रायोरिटी की जितनी भी स्कीमें हैं हम हर साल बड़ी मुश्किल से अपनी सड़कों, सिंचाई और पेयजल योजनाओं, स्कूल बिल्डिंग्ज, अस्पतालों के भवनों को प्रायोरटाइज करते हैं और जब इनका उद्घाटन या शिलान्यास होता है तो कम-से-कम वहां के संबंधित विधायक को भी इसमें शामिल करना चाहिए। इसके लिए माननीय सदस्यों ने पहले भी कहा है। जितने भी सैंटर के प्रोजेक्ट्स हैं उसके लिए केंद्र सरकार की इंस्ट्रक्शन्ज़ भी हैं और वहां पर विधायक का नाम भी जरूर लिखना चाहिए। अभी हमने हाल ही में इसका उदाहरण देखा है। मेरे क्षेत्र में लूहरी प्रोजेक्ट है, और सिरमौर में भी प्रोजेक्ट्स हैं तथा सावड़ा प्रोजेक्ट है और मंडी से माननीय प्रधान मंत्री जी ने इन सबका शिलान्यास किया था और वहां पर विधायक का नाम किसी भी पट्टिका में मौजूद नहीं था। This is something strange thing. हालांकि केंद्र सरकार की इंस्ट्रक्शन है। मेरा मानना है कि सरकार को ऐसा नहीं करना चाहिए और इस तरफ ध्यान देना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, सरकार की विज़िट्स को पोलिटीकल नहीं बनाना चाहिए। यदि मुख्य मंत्री प्रदेश में कहीं पर भी जाते हैं तो वे पूरे प्रदेश के मुख्य मंत्री हैं। अगर मंत्री जाते हैं तो पूरे प्रदेश के मंत्री होते हैं। इनकी विजिट्स के बारे में कम-से-कम संबंधित क्षेत्र के लोकल एम.एल.ए को बता दिया जाए। यह ठीक है उनको अपनी पार्टी का काम करना है या कुछ और करना है, वे उसको करें। इसमें कोई दिक्कत नहीं है but as a courtesy हमारा एक

फर्ज़ बनता है कि अगर किसी एरिया में मुख्य मंत्री जी या मंत्रियों का दौरा है तो लोकल विधायक को जरूर इनफोर्म किया जाए। ताकि वह भी अपनी courtesy sake के लिए वहां जाए। इससे लोगों में बहुत गलत मैसेज जाता है। मेरा सरकार से आग्रह रहेगा कि इन सब विषयों पर थोड़ा ध्यान दिया जाए। बोलने को तो काफी था, इस इंस्टीच्यूशन को इंप्रूव करना और अच्छा बनाना सदन की जिम्मेवारी बनती है। अध्यक्ष महोदय, आपका धन्यवाद।

अध्यक्ष : अब इस चर्चा में श्री मोहन लाल ब्राक्टा जी भाग लेंगे।

अगला वक्ता .....श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

03.03.2022/1230/RKS/AG-1

श्री मोहन लाल ब्राक्टा : अध्यक्ष महोदय, जो माननीय सदस्य, श्री जगत सिंह नेगी ने 'बदलते परिवेश में विधायकों की भूमिका पर यह सदन विचार करे' संकल्प प्रस्तुत किया है, यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज के परिवेश में, खासकर जो विपक्ष के विधायकों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उस पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है। सरकारें आती-जाती रहती हैं। कभी हम इस तरफ होंगे कभी उस तरफ लेकिन विधायकों के संस्थान को मजबूत करने की आवश्यकता है। अगर विधायकों का संस्थान मजबूत नहीं होगा तो हम अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं का निपटारा भी ठीक ढंग से नहीं कर पाएंगे। यहां पर पट्टिकाओं की बात की गई।

अध्यक्ष : माननीय सदस्य यह बात हो गई है। कृपया आप बातों को मत दोहराइये।

श्री मोहन लाल ब्राक्टा : अध्यक्ष जी, इन सारी चीजों को बदलने की आवश्यकता है। सब-प्लान्स में विधायक को विश्वास में लेना बहुत आवश्यक है। विधायकों को पता ही नहीं होता कि उनके निर्वाचन क्षेत्र में कौन-सी सड़क किस योजना में स्वीकृत हुई है। जब हम माननीय मंत्री या किसी अधिकारी को डी.ओ. लैटर देते हैं तो उसका हमें कोई जवाब नहीं मिलता। जब माननीय मुख्य मंत्री या किसी मंत्री का किसी विधायक के निर्वाचन क्षेत्र में दौरा होता है तो वहां के स्थानीय विधायक खासकर विपक्ष के विधायकों को उस दौरे की

खबर ही नहीं होती। आपके कार्यालय से इस बाबत कोई सूचना नहीं दी जाती। हम भी चुने हुए प्रतिनिधि हैं इसलिए हमें भी सूचना मिलनी चाहिए। अगर हमें हिमाचल भवन, दिल्ली या चंडीगढ़ कमरा चाहिए तो वहां एक कमरा भी बड़ी मुश्किल से आरक्षित होता है। हमारे साथ निजी स्टाफ और कई बार हमारे परिवार के सदस्य भी साथ जाते हैं। लेकिन जब विधायक के लिए एक ही कमरा आरक्षित होगा तो उन्हें कहां ठहरया जाएगा? मेरा माननीय मुख्य मंत्री से आग्रह है कि आप अधिकारियों को यह आदेश दें कि जब विधायक स्वयं किसी काम से वहां जाए तो उसके लिए कम-से-कम दो कमरे आरक्षित किए जाएं। वहां पर अधिकारियों के बच्चे डेरा जमाए होते हैं, इस पर

03.03.2022/1230/RKS/AG-2

भी गौर करने की आवश्यकता है। जब हम हिमाचल भवन दिल्ली या चंडीगढ़ में कमरा बुक करवाते हैं तो इसकी सूचना हमें सायं 7.00 बजे मिलती है। कई बार 7.00 बजे यह कह दिया जाता है कि आपके नाम बुकिंग नहीं हुई है। इसलिए मेरा आग्रह है कि जो सूचना 7.00 बजे दी जाती है उसे दोपहर 12.00 बजे तक उपलब्ध करवा दिया जाए। मैं दो-तीन दिन पहले अपने विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के दौरे पर गया था। वहां मैं अपने निर्वाचन क्षेत्र के कई प्रधानों से मिला। उन्होंने कहा हमें उपायुक्त से किसी प्रकार की राशि प्राप्त नहीं हुई है। कई बार ऐसा पता चलता है कि फलां-फलां व्यक्ति ने राशि प्राप्त कर ली है। बिना प्रस्ताव व एस्टीमेट के बाप व बेटे के अलग-अलग नाम से पर्सनल दिवारें सैंक्शन हुई हैं। ये कौन लोग हैं इसकी जानकारी आपको होगी जबकि ऐसा करने की इन लोगों को कोई आवश्यकता नहीं है। मेरा माननीय मुख्य मंत्री से आग्रह है कि इस मामले में कार्रवाई की जाए। उपायुक्त महोदय को सख्त आदेश देकर उस पैसे को वापस मंगवाया जाए। मैंने उपायुक्त महोदय के माध्यम से बैकवर्ड सब-प्लान में एक रोड के लिए 8 लाख रुपये की राशि स्वीकृत करवाई थी लेकिन बाद में मुझे पता चला कि उपायुक्त महोदय ने उस पैसे को वापस ले लिया है।

श्री बी.एस.द्वारा... जारी

03.03.2022/1235/बी.एस./ए0जी0/-1

श्री मोहन लाल ब्राक्टा जारी...

जब मैं डी0सी0 साहब के कार्यालय में गया और उनसे पूछा, उन्होंने कहा कि मुझे ऊपर से प्रेशर है, यह स्थिति आज की है। आप बताइए कि संस्थानों की आज क्या गरिमा रह गई है। मैं यह कहना चाहता हूं कि सुनर और लेटर हम में से एक्स एम0एल0ए0 तो होंगे ही होंगे। बदलते परिवेश की क्या परिभाषा है? आज हम डॉ0 परमार जी को क्यों याद करते हैं? उन्होंने विधायको को पेंशन लगाई, इससे पहले पूर्व के मुख्य मंत्री राजा वीरभद्र सिंह जी ने संस्थानों को काफी मजबूत किया है। आप से भी आग्रह है कि आप भी संस्थानों को मजबूत करें, आपका भी इतिहास में नाम रहेगा। अध्यक्ष जी, आपने समय दिया आपका धन्यवाद।

03.03.2022/1235/बी.एस./ए0जी0/-2

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य श्री भवानी सिंह पठानिया जी चर्चा में भाग लेंगे।

श्री भवानी सिंह पठानिया, फतेहपुर : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने आप को इस चर्चा में शामिल करता हूं। मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा, मैं शुरूआत करना चाहूंगा, आपके एक बड़े अच्छे नेता हुए हैं, आदरणीय अरुण जेटली जी, उनके दो शब्द हैं, "democracy cannot be a tyranny of the unelected" और में सरकार से निवेदन करूंगा कि आप हमारी बात तो मानते नहीं हैं, आप अपने नेताओं की बात जरूर मानिए। The tyranny of unelected एक root cause, अगर हम इस संस्थान को देखें, अगर आप एक विधायक के संस्थान को देंखे, अगर इसे कोई undermine करता है, अगर इसे कोई पीछे ले जाने की बात करता है, tyranny of unelected है, जो कि आपके विकास के रास्ते पर बाधा बनती है, जो कि good governance के रास्ते में बाधा बनती है। अगर आप देखें जैसे मैंने आपको चाहे ठेकेदार माफिया और खनन माफिया के बारे में बताया था। मेरे कहने का मतलब है कि un-warranted interference by non-State actors, अगर वह किसी भी क्षेत्र में शुरू हो

जाए, तो उससे प्रोग्रेस अवश्य hamper होती है। आपसे यही निवेदन है कि जिस प्रकार का प्रेशर एक सरकारी अधिकारी के ऊपर होता है और विपक्ष का विधायक होता है तो कहीं-न-कहीं good governance का कांसेप्ट कहां से होगा? एक विधायक के नाते आप अपने चुनाव क्षेत्र को एक दिशा में ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। आप वहां पर स्कीम को लाने की कोशिश कर रहे हैं, आप वहां पर uniform way से प्रोग्रेस और विकास की बात कर रहे हैं। लेकिन उसके बीच में

मांनसिकता यह रहती है कि इस समय में अगर काम हो गया, तो इसका श्रेय विपक्ष को मिल जाएगा और किसी-न-किसी तरीके से काम को रोकने की अगर हम कोशिश करेंगे तो सर, न केवल वह चुनाव क्षेत्र परंतु पूरे प्रदेश के ऊपर इसका प्रभाव पड़ेगा। आपसे मैं यही निवेदन करूंगा कि 6-7 महीने हमारे पास बचे हैं, जो हमने एक सिस्टम बना रखा है, हम उसके तरीके से चलने की कोशिश करें। हम adhoc basis पर ट्रांसफर को रोग लगांए, हम कोशिश यह करें कि जो प्राथमिकता है, वह वहां के विधायक को मिले। विधायक चाहे कांग्रेस का है, चाहे बी0जे0पी0 का है, चाहे आजद है, चाहे सी0पी0एम0 का

03.03.2022/1235/बी.एस./ए0जी0/-3

है, लेकिन आप constitutional authority को अंडर माईन करेंगे तो यह लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है। एक बार फिर मैं उन्हीं शब्दों के साथ मैं समाप्त करने की बात करूंगा "democracy cannot be a tyranny of the unelected" तो आप इलेक्टिड और अनइलेक्टिड पर जरूर फर्क समझिए। आप जो tyranny of unelected है, उसे किसी-न-किसी तरीके से trim down करने की कोशिश न करें। आज हम यहां हैं, कल पता नहीं कौन होगा। परंतु हम जो परंपरा छोड़ जाएंगे, यह परंपरा प्रदेश और लोकतंत्र के लिए बहुत अच्छी रहेगी, धन्यवाद।

03.03.2022/1235/बी.एस./ए0जी0/-4

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य श्री इन्द्र दत्त लखनपाल जी चर्चा में भाग लेंगे।

श्री इन्द्र दत्त लखनपाल, बड़सर : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य श्री जगत सिंह नेगी जी द्वारा "बदलते परिवेश से विधायकों की भूमिका पर यह सदन विचार करे" का संकल्प यहां पर प्रस्तुत किया गया है, उस पर मैं भी चर्चा करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

03-03-2022/1240/ए.एस.-ए.जी. /1

श्री इन्द्र दत्त लखनपाल..... जारी

अध्यक्ष महोदय, यहां पर विधायकों की भूमिका विषय पर चर्चा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण संकल्प रख गया है। बड़े लम्बे समय से इस माननीय सदन में इस संदर्भ में चर्चा होती रहती है। जब सत्तापक्ष के लोग इस तरफ थे और हम सब सत्तापक्ष में थे तब भी इस विषय पर काफी चर्चा हुई थी। माननीय मुख्य मंत्री जी आप नरम दिल के व्यक्ति हैं और बात को समझते भी हैं। आप से निवेदन रहेगा कि विधायकों को आप सरंक्षण दें और विधायकों की परीधि में जो कार्य आते हैं उन्हें विधायकों द्वारा ही करने दिया जाए। यहां पर सभी साथियों ने एक ही बात रखी है कि विधायकों के अधिकारों को सशक्त करने की आवश्यकता है और आपके विधायक भी इस बात से सहमत हैं। सभी विधायकों की यह पीड़ा है कि हम संवैधानिक पद पर बैठे हुए हैं लेकिन जब भी कोई पोलिसी बनती है, प्राक्कलन बनते हैं या कोई नीति बनती है तो उसमें विधायकों को जरूर रखना चाहिए और हमारे साथ संवाद भी होना चाहिए। हमारा मानना है कि सरकार की ओर से एकतरफा कार्रवाई नहीं होनी चाहिए। बहुत सी ऐसी योजनाएं हैं जो विधायक प्राथमिकता के माध्यम से स्वीकृत होती हैं, बजट में डाली जाती हैं, सब-प्लान में रखी जाती हैं। इसके अलावा विधान सभा क्षेत्रों के अंदर आयोजित कार्यक्रमों में माननीय मुख्य मंत्री या माननीय मंत्री का जब आगमन होता है तब उसमें विधायकों को भी विश्वास में लिया जाना आवश्यक है। सरकारी तौर पर जो भी पैसा विकासात्मक कार्यों के लिए जारी किया जाता है, चाहे वह State Development Fund से किया जाता हो या Relief Fund से, वहां पर भी विधायकों के साथ भेदभाव किया जाता है। अधिकारीगण तो यहां तक कह देते हैं कि कृपया करके आप अपना डी.ओ. मत भेजा करें, आप अलग से सूची बना कर भेज दिया करो और हम आपको पैसा जारी कर

देंगे। यह कहां का न्याय है, ऐसा क्यों होता है और ऐसा नहीं होना चाहिए। स्थानीय विधायक ने अपने विधान सभा क्षेत्र के विकास कार्यों को लेकर अधिकारियों के साथ यदि कोई बैठक करनी होती है तो वे अधिकारी बैठक में आने से मना कर देते हैं और कहते हैं कि कृपया करके हमें टारगेट मत बनाएं। ऐसी स्थिति में विधायक क्या करे? विधान सभा क्षेत्र में जो हारे हुए लोग होते हैं या आपकी पार्टी के अन्य लोग होते हैं वे उन अधिकारियों के घरों में जाकर हाज़रियां लगाते हैं।

03-03-2022/1240/ए.एस.-ए.जी. /2

वहां जाने से तो उनको कोई गुरेज़ नहीं है लेकिन यदि एक विधायक उन्हें बैठक के लिए बुलाए, चाहे वह प्लानिंग की बैठक करनी हो या अन्य किसी गम्भीर मुद्दे पर बात करनी है तो वे अधिकारी आने से मना कर देते हैं। वे हमें फोन करके बोल देते हैं कि कृपया करके आप हमें मत बुलाया करें, आप चिट बना कर भेज दिया करें और हम आपका काम कर देंगे। लोकतंत्र में ऐसा नहीं होना चाहिए। एक विधायक के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत जो भी काम आते हैं उनके लिए तो अधिकारी को आना ही चाहिए। यदि हम रेस्ट हाऊस में कोई बैठक बुलाते हैं तो उसमें कोई अधिकारी क्यों नहीं आता है? वे ऐसा संदेश क्यों भेजते हैं कि हम आ नहीं सकते और हमें तो भाजपा के मण्डाअध्यक्ष या किसी अन्य ने दूसरी जगह बुला लिया है? वे अधिकारी उन लोगों को ज्यादा प्राथमिकता क्यों देते हैं? हमने उन अधिकारियों से क्षेत्र के विकास की बात करनी होती है कि विकास कार्य कैसे चले रहे हैं और इनमें क्या सुधार करने की गुंजाइश है। माननीय मुख्य मंत्री जी आपसे हम सभी विधायकों का निवेदन है कि यदि आप इस विषय पर सुधार के लिए शुरूआत करेंगे तो मैं समझता हूं कि आगे से सभी विधायकों के लिए अच्छा हो जाएगा। मैं एक बात कहना चाहता हूं कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में बाबा बालकनाथ मंदिर का ट्रस्ट है जिसमें by virtue of post स्थानीय विधायक उसका सदस्य होता है लेकिन अब उसके एक्ट में वह पैरा ही खतम कर दिया गया है। अब उसमें उन लागों को सदस्य बनाया गया है जो हारे हुए लोग हैं। वह इतना बड़ा स्थान है, एक सिद्ध पीठ है और यदि उसकी विकास की प्लानिंग के लिए कोई बैठक करनी है तो वहां पर हमें बुलाया ही नहीं जाता। मेरा माननीय मुख्य मंत्री जी से निवेदन है कि संवैधानिक पदों के ऊपर बैठे विधायकों का मान-सम्मान होना चाहिए और उनकी बात को भी जरूर सुना जाना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, यह बहुत ही महत्वपूर्ण संकल्प माननीय सदस्य श्री जगत सिंह नेगी जी लाए हैं और मुझे विश्वास है कि माननीय मुख्य मंत्री जी इस पर संज्ञान लेकर इस माननीय विधान सभा में एक नया इतिहास सृजित करेंगे। आपने मुझे बोलने का समय दिया आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

समाप्त/-

अध्यक्ष....श्री जे.एस. द्वारा जारी.....

03.03.2022/1245/JS/AS/1

अध्यक्षः अब इस चर्चा में श्री लखविन्द्र सिंह राणा जी भाग लेंगे।

श्री लखविन्द्र सिंह राणा (नालागढ़): माननीय अध्यक्ष जी, श्री जगत सिंह नेगी जी ने जो संकल्प लाया है कि "बदलते परिवेश में विधायकों की भूमिका पर यह सदन विचार करें।" अध्यक्ष महोदय, मैं भी अपने आपको इसमें शामिल करता हूं। प्रत्येक पार्टी के कार्यकर्त्ता को विधायक बनना बहुत मुश्किल है। पहले तो वह अपनी पार्टी में टिकट की दौड़ में लगा रहता है। दिन-रात लोगों के बीच में जा करके मेहनत करता है। लेकिन उसके बावजूद जब वह चुनाव लड़ता है, चाहे किसी भी दल से वह चुनाव लड़े, चाहे आज़ाद उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े, कोई गारंटी नहीं होती कि वह चुनाव जीतेगा या हारेगा। जब वह विधायक बन जाता है और उसके बाद जिस ढंग से उसके साथ भेदभाव किया जाता है वह बड़े दुख की बात है। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से आग्रह करना चाहता हूं कि आज के परिवेश में हमें विधायकों की भूमिका के बारे में सोचने की आवश्यकता है। विधायकों को अधिक मान-सम्मान देने की आवश्यकता है। विधायकों के पास प्रातः 6.00 बजे से शाम 11.00 बजे तक लोगों का तांता लगा रहता है। विधायकों की कोई निजी जिंदगी नहीं होती। चुनाव क्षेत्र के लोग दिन-रात उनके पास चले रहते हैं। इस करके आज के परिवेश में मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि विधायकों के बारे में सोचा जाए। आज आप लोग सत्ता पक्ष में बैठे हैं और कल को कोई दूसरी पार्टी की सरकार सत्ता में आएगी तो

फिर सत्ता पक्ष में कोई और बैठेगा और विपक्ष में कोई और बैठेगा। लेकिन यह सवाल विधायक इंस्टिट्यूशन का है। अगर हम इसको मज़बूत करेंगे तो मुझे लगता है कि हम सबके लिए अच्छी बात होगी। जैसे यहां पर जिक्र भी किया गया कि कई बार जब विधायक सब डिविज़न लैवल पर बैठक बुलाते हैं,जिस ढंग से वहां पर अधिकारियों को आना चाहिए वे वहां पर नहीं आते । मेरा माननीय मुख्य मंत्री जी से अनुरोध है कि क्यों न इसको एक कानूनी रूप दिया जाए कि विधायक अपने सब डिविजन में जो वहां के ऑफिसर्ज़ हैं, उनकी तीन महीने में एक बार बैठक ले सकें ताकि वहां की जो विकास

03.03.2022/1245/JS/AS/2

के कामों की वस्तुस्थिति है, उन पर भी चर्चा हो सके। जो वहां पर विकास के काम नहीं हो रहे हैं, जो काम अधूरे पड़े हैं, उनको भी आगे प्रोग्रैस में लाने की चर्चा हो सकती है। इसलिए मेरा माननीय मुख्य मंत्री जी से आग्रह है कि विधायक के स्तर पर तीन महीने में एक बैठक सब डिविजन लैवल पर होनी चाहिए ताकि विधायक वहां पर अपने काम करवा सकें। हमने देखा है कि पीछे भी कहा गया और कई बार चर्चा मुख्य मंत्री जी से भी हुई, उनसे हम सभी लोग भी मिले। आज के परिवेश को देखते हुए विधायक को एक दफ्तर मिलना चाहिए। उनका कोई प्रोइवेट सेक्रेटरी भी होना चाहिए। उनको ड्राईवर भी मिलना चाहिए। जो विधायक होते हैं उनके पास भी बहुत काम होते हैं। हमने देखा है कि बहुत से विधायक खुद ही लिखते रहते हैं। वे याद रखते हैं और कई बार याद भी नहीं रहता है तो इस परिवेश में यह आज की जरूरत है इसलिए ये चीजें विधायक को मिलनी चाहिएं। पंजाब में तो आपने देखा होगा कि जो विधायक हैं, उनको गाड़ी भी दे रखी है, उनको प्राईवेट सेक्रेटरी भी दे रखा है और ड्राईवर भी है। उसी तर्ज़ पर हिमाचल प्रदेश के विधायकों को भी ये सुविधाएं मिलनी चाहिए। विधायक द्वारा जो एम.एल.ए. फंड चुनाव क्षेत्र में दिया जाता है, बहुत सी पंचायतें ऐसी होती हैं जहां पर वह पैसा खर्च नहीं हो पा रहा है। मुख्य मंत्री जी से मेरा आग्रह है कि कोई-न-कोई ऐसा नियम बनाया जाए, उसमें चाहे विधायक का पैसा हो, चाहे एम.पी. का पैसा हो, चाहे राज्यसभा मैम्बर का पैसा हो, उस पंचायत के संबंधित प्रधान को

वह पैसा काम में लगाना होगा। अगर इस तर्ज़ के आधार पर हम करेंगे तो मुझे लगता है कि चाहे पैसा किसी भी फंड से आता हो उसका सदुपयोग होगा।

श्री एस.एस. द्वारा जारी------

03.03.2022/1250/SS-DC/1

श्री लखविन्द्र सिंह राणा क्रमागत :

अगर पंचायत के प्रधान पैसे का सदुपयोग नहीं करते तो उनके ऊपर कोई-न-कोई कार्रवाई होनी चाहिए।

इसी तरह से हमने देखा कि जो डी0सी0 फंड है वह ऐसे ही कुछ लोगों को दे दिया जाता है जहां पर कोई नॉलेज नहीं होती।

अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप अपना वक्तव्य समाप्त करें।

श्री लखविन्द्र सिंह राणा : वे एक-एक घर की गली को पैसा दे देते हैं, इंटरलॉक टाइल के लिए पैसा दे देते हैं। लेकिन विधायक को अपने चुनाव क्षेत्र के बारे में पूरा पता होता है। इसलिए डी0सी0 फंड में भी कुछ-न-कुछ हिस्सेदारी विधायक की होनी चाहिए। जो विधायक प्राथमिकताएं हैं उनके बारे में भी अधिकारियों/कर्मचारियों को ऐसा निर्देश होना चाहिए कि विधायक जो अपनी प्राथमिकताएं रखता है चाहे वह पीने की पानी की स्कीम है, चाहे सिंचाई व सड़क की स्कीम है या चाहे निर्वाचन क्षेत्र की अन्य कोई स्कीम है; उसकी डी0पी00आर0 जल्दी तैयार की जानी चाहिए।

मुख्य मंत्री जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद क्योंकि हमारे एम0एल0ए0 फंड को बढ़ाने में आपका बहुत बड़ा योगदान रहा है। आपने इसे 1.80 करोड़ रुपया किया है। हम चाहते हैं कि इसे दो करोड़ रुपये तक कर दिया जाए। इसी तरह से आपने ऐच्छिक निधि यहां पर शुरू की है। उसके लिए भी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद क्योंकि गरीब लोग विधायकों के पास आते हैं। किसी की किडनी की प्रॉब्लम है, किसी का डायलेसिज होना है, किसी का

अन्य उपचार होना है; आपने एम0एल0ए0 ऐच्छिक निधि को 10 लाख रुपये किया है उसके लिए आपका धन्यवाद है परन्तु हम चाहते हैं कि इसमें थोड़ा इज़ाफा किया जाना चाहिए ताकि विधायकों के द्वारा जनहित के कार्य होते रहें।

03.03.2022/1250/SS-DC/2

अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप वाइंड अप कर दीजिए। आपको बोलते हुए 7 मिनट हो गए हैं जबकि अन्य सदस्यों ने चार-पांच मिनट बोला है। आप कृपया बैठिए।

श्री लखविन्द्र सिंह राणा : अध्यक्ष महोदय, मेरी बात खत्म हो रही है। यहां पर एक फ्लैग की बात चली थी कि सभी विधायकों की पहचान के लिए फ्लैग दिया जाना चाहिए। बड़ी हैरानगी हो रही है कि यूनिवर्सिटी में भी फ्लैग हैं लेकिन एम0एल0ए0 को फ्लैग नहीं हैं। मेरा आपसे आग्रह है कि सभी विधायकों की पहचान के लिए फ्लैग दिया जाना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

03.03.2022/1250/SS-DC/3

अध्यक्ष : अब इस चर्चा में माननीय सदस्य डॉ0 (कर्नल) धनी राम शांडिल जी भाग लेंगे।

डॉ0 (कर्नल) धनी राम शांडिल : अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हुई है जिसमें कई माननीय सदस्यों ने भाग लिया है। जो विषय माननीय जगत सिंह नेगी जी ने पिछले सत्र के दौरान सदन में उठाया था उस संदर्भ में मैं कहना चाहता हूं कि किसी भी इंस्ट्रियूशन को सुरक्षित रखना और उसे डिग्निफाइड बनाना, हमारा कर्तव्य है। खासकर इतने अच्छे परिप्रेक्ष्य में जैसे विचार आए हैं वे बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि जो बदलता हुआ परिवेश है उसमें चुने हुए प्रतिनिधि का स्थान बना रहे और वह प्रभावी ढंग से काम करे इसलिए मैं समझता हूं कि जो सुझाव आए हैं इन पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है।

श्रीमती आशा कुमारी जी ने पट्टिकाओं के बारे में बहुत अच्छी बात कही। यह कोई बहुत बड़ा काम भी नहीं है सिर्फ सोच की बात है, मैंने पहले ही एक-आध बार माननीय मुख्य

मंत्री जी से यह बात कही थी कि यदि चुने हुए प्रतिनिधि का जहां का वह विधायक है उसका नाम रख दिया जाए तो उससे एक तो इस इंस्ट्यिूशन का भी नाम अच्छा रहेगा और लोगों में भी इसका अच्छा मैसेज जाएगा। इसी के साथ जो पट्टिकाओं को तोड़ने का क्रम चलता है इस पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। As per IPC(Indian Penal Court) it is destruction of Government property and it is punishable offence under the Law. इस प्रकार के ऐक्शन अगर हम लेंगे तभी इस प्रकार के कामों पर रोक होगी वरना शरारती तत्व कहीं-न-कहीं सक्रिय होते रहते हैं। जब भी माननीय मुख्य मंत्री या मंत्री का कार्यक्रम बने, यदि चुने हुए प्रतिनिधि को विश्वास में लिया जाएगा तो वह भी इस सिस्टम के लिए एक सहायक कदम सिद्ध होगा। कई बार बहुत-सी बातें आ जाती हैं और अच्छा भी नहीं लगता कि कोई और ही वहां के विषय को उठाते हैं और चौधरी बनकर आ जाते हैं। उस एरिया की समस्याओं को न केवल विधायक बल्कि अन्य ही मिनी विधायक बन कर उठाते हैं। इस प्रकार की कई बातें देखने में आती हैं। आज सुबह ही मेरे पास एक विषय आया कि फीस में वृद्धि हो रही है, बसों के किराए बहुत ज्यादा बढ़ गए हैं, वे प्राइवेट स्कूलों से भी कह रहे थे कि आप इसमें विषय को उठाइए; मैंने उनको कहा कि आपने ठीक कहा परन्तु यह विषय आपके दूसरे बहुत से लोग उठा लेते हैं।

जारी श्रीमती के0एस0

03.03.2022/1255/केएस/एएस/1

डॉ0(कर्नल)धनी राम शांडिल जारी---

उन्होंने कहा कि हां उठा तो लिया है। यही मैं कहना चाहता हूं कि चाहे आई.पी.एच. की स्कीम हो or any other welfare oriented subject matter, अगर वह चुने हुए प्रतिनिधि उठाएंगे तो वह ज्यादा प्रभावी होगा और मैं समझता हूं कि उससे ही इस पद की भी गरिमा भी रहेगी।

अध्यक्ष जी, मैं कुछेक और चीज़े भी बताना चाहूंगा। अधिकारियों को डांटने के बारे में कहना चाहूंगा कि कई स्वयंभू नेता बन जाते हैं और वे अधिकारियों को डांटने लग जाते हैं। A person becomes Officer after very hard work, तो ऑफिसर को कैसे एड्रेस

करना है और उसके ऑफिस में उसकी गरिमा भी रखनी चाहिए, यह भी हमें समझना चाहिए। वहां के जो माननीय विधायक हैं या चुने हुए प्रतिनिधि करें तो अच्छा लगेगा।

माननीय सदस्य श्री लखविन्द्र सिंह राणा जो फैसिलिटीज़ के बारे में कह रहे थे, this can be a very helpful step. Creation of a small office with personal staff etc. can be a very good step towards making this Institution more effective. और मैं समझता हूं कि MLA should not stand in one corner when there is a function in his constituency particularly of Chief Minister. मैं समझता हूं कि जब ऐसा होता है तो स्वयं भी जो हमारे मुख्य मंत्री जी, who is looking after the welfare of the whole State और उनकी कार्यप्रणाली इतनी अच्छी है, अगर उसमें चुना हुआ प्रतिनिधि वहां न हो तो उसका बहुत गलत मैसेज जाता है। This is my request कि प्रत्येक एम.एल.ए. के साथ कम्युनिकेशन के लिए जो छोटा सा हम स्टैप रखते हैं, अगर वो हो तो जैसे आप देख ही रहे हैं कि न जाने कौन किस वक्त कहां से आक्रमण कर दे, and we face a situation like Ukraine. There should be a communication which is not at all expensive. ये ही सब चीजें हैं कि एम.एल.ए. के इंस्टिट्यूशन को हम प्रभावी बनाएं, लोगों के बीच खड़े होने का स्थान जो हमें दिया गया है, वह रहे और वह अपने काम को तभी अच्छे तरीके से करेगा यदि उसका भी सम्मान रखा जाएगा और वह खुद भी लोगों के साथ सम्मानपूर्वक पेश होगा। खासकर जब हमारे मुख्य मंत्री और मंत्री महोदय इलाके में आते हैं। अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

03.03.2022/1255/केएस/एएस/2

अध्यक्षः वैसे तो अधिकतर माननीय सदस्यों ने यहां पर अपनी बात रख दी है और सारे विषय रिपीट ही हो रहे हैं। ...(व्यवधान)... बोलने के लिए तो सत्ता पक्ष से भी बोल सकते हैं, यहां से भी काफी नाम आए हैं। काफी हो गया। मुख्य मंत्री जी उत्तर दे देंगे। ...(व्यवधान)... बात सुन लीजिए फिर तो सत्ता पक्ष से भी मेरे पास काफी नाम हैं। नेगी जी, बार-बार बातें रिपीट हो रही हैं। वही बातें हैं जो आपने शीतकालीन सत्र में यहां पर रखी थीं, वे ही 9 सदस्यों ने बोली हैं।

श्रीमती आशा कुमारीः अध्यक्ष महोदय, सुखविन्द्र सिंह सुक्खु जी नई बात बोलेंगे रिपीट नहीं करेंगे इसलिए इनको बोलने दो।

अध्यक्षः ठीक है, सुक्खु जी बोलेंगे उसके बाद माननीय मुख्य मंत्री उत्तर देंगे। मेरी बात सुन लो सुक्खु जी, जब बिजनैस एडवाइज़री कमेटी बैठी थी तो समय इस प्रस्ताव पर बोलने के लिए 35 मिनट का समय तय हुआ था। बोलिए, अब आप क्या कहना चाहते हैं?

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी---

03-03-2022/1300/av/hk/1

श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु (नदौन) : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य श्री जगत सिंह नेगी ने आज की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बड़ी सोच-समझकर यह प्रस्ताव लाया है। हम माननीय सदन में बैठे सभी विधायक आज इस बात पर चर्चा कर रहे हैं कि हमारे विधान सभा क्षेत्रों में विधायकों के समक्ष आने वाली परिस्थितियों व चुनौतियों से कैसे निपटा जाए। जब से डिजिटाइजेशन का युग आया है यह चुनौतियां और ज्यादा बढ़ गई हैं। आज एक विधायक से लोगों को बहुत उम्मीदें होती हैं। हम थ्री टायर सिस्टम में रहते हैं जिसमें पंचायती राज, जिला परिषद, एम0एल0ए0 और एम0पी0 शामिल हैं। लेकिन यदि किसी को सबसे ज्यादा कार्य करने पड़ते हैं तो वे विधायक होते हैं। वैसे तो विपक्ष के विधायकों की स्थिति बहुत खराब होती है परंतु मैं समझता हूं कि सत्ता पक्ष के विधायकों की स्थिति उससे भी ज्यादा खराब होती है। जब आपके कार्य नहीं होते यानी जब आपके ऑफिसर आपको मुंह नहीं लगाते हैं। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं क्योंकि हम राजनीति में पिछले 30-35 वर्षों से हैं। यदि आपका अपने परिवार का सदस्य अस्पताल में एडमिट हो जाए तो आप अपने परिवार के सदस्य को देखने बाद में जाएंगे परंतु पहले आप अपने वोटर को देखने जाएंगे; एक विधायक पर इतना दबाव होता है। इसलिए इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? हम सुविधाएं नहीं मांग रहे हैं बल्कि हम यह चाहते हैं कि जनता के कार्य करने के लिए हमारे हरेक विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र में

तहसील या ब्लॉक कार्यालय के साथ एक विधायक का ऑफिस भी होना चाहिए जहां पर बैठकर हम अपने लोगों से मिल सकें। इस बारे में आज नहीं तो कल जरूर सोचना पड़ेगा। माननीय मुख्य मंत्री, भौगोलिक दृष्टि से कई विधान सभा क्षेत्र बड़े-बड़े हैं। अगर यहां पर रामपुर की बात की जाए तो आप खुद देख लीजिए सरांह टापरी के पास जाकर पड़ता है। इसलिए जहां पर आपका एस0डी0एम0, तहसीलदार या ब्लॉक हैड क्वॉटर है वहां यदि आप विधायक के लिए एक ऑफिस बना देंगे तो अच्छा रहेगा। ऐसी व्यवस्था होने पर वह लोकल कार्यों को देख सकता है। लोकतंत्र की मज़बूती के लिए विधायिका का मज़बूत होना जरूरी है। हमें हर 5 वर्ष के बाद जनता

03-03-2022/1300/av/hk/2

की अदालत में अपनी परीक्षा देनी पड़ती है और उसमें हमें यह पूछा जाता है कि आपने हमारे क्षेत्र के विकास के लिए क्या किया। विकास एक निरंतर प्रक्रिया है और आज हिमाचल प्रदेश के विकास में अगर नये आयाम स्थापित हुए हैं तो इसमें विधायकों की ही महत्वपूर्ण भूमिका है, सांसदों की ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका नहीं होती। अगर आप पंचायती राज की बात करें तो उनकी भी बहुत छोटी कार्यप्रणाली होती है। लेकिन आज आपको विधायकों को मिलने वाली सुविधाओं के बारे में सोचना पड़ेगा और सुविधाएं केवल पैसे या सैलरी से संबंधित ही नहीं होतीं कि हमारी सैलरी बढ़ा दी जाए। एक विधायक चाहे किसी भी पक्ष से संबंद्ध रखता है मगर उसके पास प्रतिदिन 40-50 व्यक्ति जरूर आते हैं। हो सकता है कि मंत्रियों के पास ज्यादा आते होंगे। यदि एक विधायक प्रतिदिन 50 व्यक्तियों की बात सुनता है तो उसको एक व्यक्ति से बात करने और उसका कार्य करने में 10 से 15 मिनट का समय लगता है। अगर हम सभी लोग आने वाली चुनौतियों का सामना करना चाहते हैं तो हमें सुविधाएं मिलनी चाहिए। हम सुविधाओं के रूप में अपनी सैलरी नहीं बढ़ाना चाहते। कई बार हम डी0सी0 साहब या एस0डी0एम0 साहब से फोन पर बात करना चाहते हैं तो वे फोन नहीं सुनते, यहां तक कि कई बार तो तहसीलदार साहब भी नहीं सुनते। यदि ऐसे ही चलता रहा तो लोकतंत्र की इस व्यवस्था का क्या स्वरूप रह जाएगा। इसके लिए एक प्रोटोकॉल बनाया जाना चाहिए। कई बार हम बी0डी0ओ0 को बोलते हैं कि एक मीटिंग करनी है तो उनका कहना होता है कि सरकार आपकी नहीं है। मैं यहां पर

कोरोनाकाल का उदाहरण देना चाहता हूं। हमने कहा कि सरकार ने हमें 10 लाख रुपये की राशि दी है और हम सेनिटाइजर वितरित करना चाहते हैं तो बी0डी0ओ0 साहब भाग जाते हैं। अब विधायक के पास सेनिटाइजर पहुंच चुका है परंतु बी0डी0ओ0 पंचायत सचिव को इसको वितरित करने के ऑर्डर तक नहीं करते। मुख्य मंत्री जी, आज आप जहां बैठे हैं कल वहां पर कोई और बैठा होगा। इसलिए हम आपसे निश्चित तौर पर उम्मीद करते हैं कि विधायक का एक प्रोटोकॉल जरूर बनाया जाए। अगर किसी छोटे-से-छोटे ऑफिसर को भी किसी विषय के संदर्भ में चर्चा हेतु बुलाया जाता है तो वह समय निश्चित करके बता दें कि इस समय चर्चा के लिए आ जाएं।

टी सी द्वारा जारी

03/03/2022/1305/टी0सी0वी0/एच0के0/1

श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु ... जारी

लेकिन उनको आना जरूर चाहिए। सरकार जनता की समस्या का समाधान करती है और हमें भी जनता की समस्या का ही समाधान करना होता है। इसलिए अध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे अनुरोध रहेगा कि आपके सचिवालय से विधायक के प्रोटोकॉल की एक लिस्ट जारी हों क्योंकि आप हमारे संस्थान हैं। दूसरा, आप ब्लॉक, तहसील या एस0डी0एम0 हैड क्वार्टर्ज में विधायकों के लिए एक विधायक ऑफिस का जरूर प्रावधान करें क्योंकि जब मीटिंग होती है तो सारे विधायक रेस्ट हाउस में बैठते हैं और वहीं पर मीटिंग होती है। लेकिन लोग कहते हैं कि इनके लिए तो रेस्ट हाउस बनें हुए हैं। इन सारी बातों से ऊपर उठकर हमें अपने आपको लोगों के सामने लाना है। जब विधायक बनता है तो उसको सबसे बुरा आदमी समझा जाता है। 'A bad man is better than a bad name.' हमको बदनाम समझा जाता है। हमारे बारे में यह सोच है कि ये जो विधायक बनें हैं ये ठीक आदमी नहीं हैं। इसलिए हम सभी विधायकों को ट्रांसपेरेंट होने की भी जरूरत है। विधान सभा एक वेबसाइट बनाएं और हम जो भी सम्पत्ति अर्जित करते हैं, उसका सोर्स उसमें बताएं। इसमें सभी माननीय विधायकों द्वारा हर साल अर्जित संपत्ति का ब्यौरा डालना सुनिश्चित करें। कई विधायक कहते हैं कि हम तो एफिडेविट देते हैं लेकिन एफिडेविट देने से पारदर्शिता नहीं आती है। इन्हीं शब्दों के साथ मैंने अभी जो तीन बातें यहां सदन में रखी हैं, इन पर विचार किया जाए।

आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द, जय भारत ।

अध्यक्ष : श्री सत पाल सिंह रायजादा जी आप भी इस चर्चा में भाग लें और कृपया हिन्दी में बोलें।

03/03/2022/1305/टी0सी0वी0/एच0के0/2

श्री सतपाल सिंह रायजादा (ऊना) : अध्यक्ष महोदय, श्री जगत सिंह नेगी जी ने जो प्रस्ताव पिछले सत्र में चर्चा हेतु रखा था, उस पर चर्चा हो रही है। आपने इस पर मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री और मंत्री मेरे विधान सभा क्षेत्र में जाते हैं और वहां शिलान्यास करके आ जाते हैं लेकिन कुछ दिनों के बाद फिर से उन्हीं कार्यों के शिलान्यास होने शुरु हो जाते हैं। ये शिलान्यास इनके द्वारा बनाए गए डॉयरेक्टर्ज और चेयरमैन के द्वारा किए जाते हैं। मैं जल शक्ति मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि जो स्कीमें 30-35 साल पहले बनीं थीं, अगर वहां पेंट हो रहा है तो भी वहां पर नारियल फोड़ दिया जाता है। यदि किसी पुरानी स्कीम में 4 ईंटें लगाई जाती है तो उसका भी शिलान्यास किया जाता है। इन्होंने एक टोकरी में नारियल रखे हुए हैं और ये पुरानी स्कीमों के उद्घाटन पर नारियल फोड़ते जा रहे हैं। जिलाधीश के कार्यालय से गरीब व्यक्तियों की दवाई इत्यादि के लिए जो फंड आता है, उसके चैक भी उन लोगों द्वारा बांटे जाते हैं

एन0एस0 द्वारा जारी ..

03-03-2022/1310/NS/YK/1

श्री सतपाल सिंह रायजादा ..... जारी

जबकि वह डी.सी. की ऑथोरिटी है और उसको डी.सी. साहब दें। डी.सी. साहब के सारे चैक आते हैं और लोगों को बांटे जाते हैं तथा उन लोगों द्वारा एक स्पैशल प्रोग्राम करके बांटे जाते हैं। अगर इन चैक्स को मुख्य मंत्री महोदय और मंत्री जी बांटें तो हमें कोई समस्या नहीं है। अगर किसी के मकान के लिए लगभग 1.80 लाख रुपये मिलते हैं तो यह राशि ऑनलाइन जाती है और इसके लिए पंचायत प्रतिनिधि काम करते हैं लेकिन इसके

लिए स्पैशल लैटर और फंक्शन ऑर्गेनाइज किया जाता है और फिर इस लैटर को चेयरमैन साहब बांटते हैं। मैं यहां पर जिला ऊना के बारे में कहना चाहूंगा क्योंकि आज यहां ऊना के मंत्री जी व विधायक मौजूद हैं और इनकी इतनी पॉवर नहीं है जितनी वहां से जो चेयरमैन बने हैं उनकी है। आज हालात ये हैं। यहां पर मेरी बात नहीं है। ऐसा भी हो सकता है कि आने वाले समय में सत्ता बदल जाए और हम उधर हों तथा आप इधर हों। तब आपके साथ ऐसा होगा तो आप भी बोलेंगे। यह तो जनता बताएगी कि क्या होने वाला है? मैं आपके विधायकों की भी बात कर रहा हूं और ये भी चुपचाप बैठे होते हैं। वहां पर इनका भी कुछ नहीं होता है। ...व्यवधान...

अध्यक्ष : माननीय सदस्य आप चेयर को संबोधित करें।

श्री सतपाल सिंह रायजादा : अध्यक्ष महोदय, जो विधायक चुन कर आते हैं उनको सम्मान मिलना बहुत जरूरी है। नाबार्ड में काम लेकर हम आते हैं, सड़कें बन रही हैं और वे वहां पर नारियल फोड़ कर चले जाते हैं। मैं एक दिन वहां से जा रहा था तो लोगों ने बताया कि चेयरमैन साहब अभी नारियल फोड़ कर गए हैं। मैं तो हैरान हूं कि ये बोरी में नारियल लेकर चले हुए हैं। उनको इस तरीके से जगह दी जा रही है और प्रोजेकट किया जा रहा है कि वे महान नेता हैं लेकिन ऐसे नेता नहीं बनेंगे। जिनको जनता ने नकार दिया वे नेता नहीं बनेंगे। उनको नेता बनने के लिए सही मायने में काम करना पड़ेगा। विधायकों का काम विधायकों के ऊपर होना चाहिए। आपने बोलने का मौका दिया, आपका धन्यवाद।

अध्यक्ष : अब श्री राकेश सिंघा जी चर्चा में भाग लेंगे और अपनी बात चार मिनट में समाप्त करें।

03-03-2022/1310/NS/YK/2

श्री राकेश सिंघा : अध्यक्ष महोदय, जो यह संकल्प नेगी जी ने इस सदन में लाया है, मैं उस पर चर्चा करने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं समझता हूं कि जो essence इस संकल्प का है वह यह है कि with the changing times यह जो डेमोक्रेसी का कन्सैप्ट है इसको कैसे स्ट्रैंथन किया जाए and what be the role of an elected Member should be? आप भी जानते हैं और पूरा सदन जानता है कि डेमोक्रेसी बहुत पुरानी नहीं है। यह जो मॉडर्न डेमोक्रेसी आई यह फ्रेंच रेवोल्यूशन और उस नारे के साथ आई जो liberty, equality और fraternity के साथ आई। समय जैसे-जैसे आगे बढ़ता रहा तो टाइम एंड स्पेस के साथ

उसकी भूमिका बदलती रही। हमारे देश में क्या समस्या आ गई? आज जब हम 'Role of the M.L.A' पर चर्चा करते हैं वह बाधा क्यों आ रही है? एक्चुअल में यह मानसिकता की बात है। यह एक ऐसी बाधा है जिस समय यहां पर गठित असैंबली बैठी थी और ये चर्चाएं चल रहीं थीं कि what kind of democracy is the independent India to adopt? हमारे पास उस सयम ब्रिटिश मॉडल और अमरीकन मॉडल था तथा हमने ब्रिटिश मॉडल अपनाया। आज मैं कह रहा हूं कि जो बाधा आ रही है वह वास्तव में इसलिए आ रही है कि फ्रेंच रेवोल्यूशन में चार्टर्ड मूवमैंट ने ब्रिटेन के अंदर ओल्ड सिस्टम को निगेट कर न्यू सिस्टम को पैदा किया था unfortunately we were unable to do here. इसलिए यह बहुत बड़ी प्रॉब्लम है।

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

03.03.2022/1315/RKS/YK-1

श्री राकेश सिंघा... जारी

मैं समझता हूं कि इसमें हम सबको ख्याल रखने की आवश्यकता है। The role of the State Government and the Party must be distinguished. जब हम स्टेट गवर्नमेंट और पार्टी को मर्ज करते हैं तो वह सबसे बड़ी समस्या है। डमोक्रेसी को आगे ले जाने के लिए जो विधायिका का रोल होना चाहिए, वैसा नहीं हो रहा है और ऐसा करके हम अपने ही पांव में कुल्हाड़ी मार रहे हैं जोकि डेमोक्रेसी के लिए घातक है। इसलिए अलग-अलग समय में अलग-अलग किस्म के हालात पैदा हो जाते हैं। जब यह संस्थान मजबूत होगा तो निश्चित रूप से हम आगे बढ़ेंगे। अगर हम इस संस्थान को कमजोर करेंगे तो जिन आंदोलनकारियों ने इस देश की आजादी के लिए अपनी कुर्बानियां दी हैं उनकी उम्मीदों पर हम पानी फेर देंगे। जो बात यहां कही गई है उसका निचोड़ यह है कि जो विधायक का प्रोटोकोल होना चाहिए, we have to define it. हालांकि it is defined. आप किसी भी दस्तावेज़ में जाएं it is defined. लेकिन मुझे यह समझ नहीं आता कि हम इसे अमल क्यों नहीं कर रहे हैं? जो डिसेंट्रलाइज फंड हैं it is not the discretionary grant of the Deputy Commissioner. But the Deputy Commissioner cannot use that fund as a personal fund which today it is being used. लेकिन आप इस हद तक चले गए हैं

कि जो हमारे संवैधानिक दायित्व हैं उसमें आप शेड्यूल कास्ट कंपोनेंट के अंदर कैसे फंड देंगे? मैं कभी कल्पना नहीं कर सकता था कि we have crossed all the limits.

अध्यक्ष : माननीय सदस्य कृपया वाइंड-अप करें।

श्री राकेश सिंघा : अध्यक्ष महोदय, यह आपकी कुर्सी व सदन के लिए बहुत महत्वपूर्ण विषय है। जब डेमोक्रेसी मजबूत होगी तभी हम आगे बढ़ सकते हैं।। am just referring to the last document. संविधान के तहत

03.03.2022/1315/RKS/YK-2

इस दस्तावेज़ में स्पष्ट बताया है कि it is a guideline to all. किसी भी स्कीम की मोनिटरिंग के लिए जो एम.पी. या विधायक हैं, he is to play a very important role. मैं यह नहीं कह रहा हूं, यह आपकी सरकार कह रही है और अगर हमें इस पर चर्चा करनी पड़ी तो it is the saddest day for the Democracy. इसलिए आप डेमोक्रेसी को स्ट्रेंथन करे। अगर हिमाचल प्रदेश के मौजूदा मुख्य मंत्री इस धारा को कमजोर करेंगे तो मैं समझता हूं कि ये स्वयं कमजोर हैं। He is the Leader of the House. इसलिए इस डेमोक्रेसी को स्ट्रेंथन करने के लिए इनकी सबसे बड़ी भूमिका होनी चाहिए। मैं ऐसी कल्पना करता हूं कि ये इस संस्थान को मजबूत करेंगे। अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका धन्यवाद।

श्री जगत सिंह नेगी : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। ...व्यवधान...

अध्यक्ष : किस बात का व्यवस्था का प्रश्न है? आप कृपया बैठिए। ...व्यवधान... आप बार-बार कहते थे कि इस प्रस्ताव को लाइए। हमने शीतकालीन सत्र में इस प्रस्ताव को लाया। ...व्यवधान... माननीय सदस्य पहले आप मेरी बात सुनिये। उस दिन आपने 25 मिनट तक इस विषय में चर्चा की। आज लगभग 12 या 13 सदस्यों ने इस विषय पर चर्चा की है।

श्री बी.एस.द्वारा... जारी

अध्यक्ष जारी...

आज लगभग 11-12 माननीय सदस्यों ने इस पर बोला है। अब माननीय मुख्य मंत्री जी ने इसकी चर्चा का उत्तर देना है, इस पर क्या प्वांइट ऑफ आर्डर होगा? सहमति से सारा काम चलता है। मैं माननीय सदस्य को बताना चाहता हूं कि लंच के लिए कोई समय निर्धारित नहीं होता है। कृपया आप बैठ जाइए। ...व्यवधान....

संसदीय कार्य मंत्री : अध्यक्ष जी, माननीय सदस्य का बोलने का यह कोई अच्छा तरीका नहीं है। यह अपनी मर्जी से मान्य सदन को चलाना चाहते हैं।...व्यवधान....

अध्यक्ष : माननीय नेगी जी, कृपया बैठ जाइए, आपकी तरफ से ही संकल्प आया है और सरकार की ओर से इसका उत्तर दिया जाना है। माननीय मुख्य मंत्री जी चर्चा का उत्तर देंगे।

मुख्य मंत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय, "बदलते परिवेश में विधायकों की भूमिका पर यह सदन विचार करे" यह प्रस्ताव माननीय सदस्य श्री जगत सिंह नेगी जी की ओर से सदन में लाया गया है और इसकी शुरूआत पिछले सत्र में हो गई थी, आपने प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया था और आप इस पर बहुत लम्बा बोले थे, मेरे पास इसकी कॉपी भी पड़ी है। आज भी 11 माननीय सदस्यों ने इस पर बोला है। आप बदले हुए परिवेश की जो बात कर रहे हैं, इसकी व्याख्या क्या है? क्या आप यहां से वहां हो गए, इसलिए आप बात कर रहे हैं? हम उस वक्त वहां पर थे और हमने एक बार नहीं परंतु बार-बार माननीय सदन में अपनी बात कहने की कोशिश की, लेकिन सुनी नहीं गई। उस वक्त के माननीय मुख्य मंत्री जी की ओर से यह कहा गया कि जो चेयरमैन और वाइस चेयरमैन हैं, उनकी भी सरकार बनाने में बहुत बड़ी भूमिका है। आपकी सरकार में उनकी भूमिका सरकार चलाने और बनाने में महत्वपूर्ण हो सकती है, तो हमारी सरकार में क्या महत्वपूर्ण नहीं हो सकती है? इसलिए उन सारी बातों का मैं जिक्र भी नहीं करना चाहता कि यहां क्या-क्या कहा गया? विधायकों को टौंडे कहा गया, उन्हें मकड़छंझू कहा गया, वह रिकार्ड का हिस्सा है। लेकिन एक बात मैं जरूर कहना चाहता हूं कि यह जो पीड़ा है, यह वास्तविक पीड़ा है और यह ठीक होनी चाहिए। इसे ठीक करने के लिए प्रयत्न भी करने चाहिए। यहां बहुत से माननीय सदस्यों ने

जिक्र किया कि हारे हुए लोग उद्घाटन कर रहे हैं। काश, ये सारी बातें उस वक्त भी सुनी गई होती जब हम कहते थे, तो आज ये परिस्थितियां ऐसी नहीं होती। **श्री एन0 जी0 द्वारा जारी**...

03-03-2022/1325/ए.जी.-एन.जी. /1

मुख्य मंत्री..... जारी

हमारे क्षेत्र में तो जिन लोगों की हमने जमानत जब्त करवाई हुई थी उन लोगों को सरकार ने पद दिए हुए थे। उस समय वे जितनी भी विधायक प्राथमिकता की योजनाएं होती थीं उन सभी को ढूंढ-ढूंढ कर उसमें अपना पत्थर लगाया करते थे। वे अधिकारियों को ऐसे बोला करते थे जैसे सरकार बोल रही हो। यह सब हमारे क्षेत्र में ही नहीं बल्की जहां-जहां पर भारतीय जनता पार्टी के विधायक हुआ करते थे, वहां भी ऐसा ही होता था। विपक्ष की सरकार के समय में तो जिन क्षेत्रों में सरकारी सभाएं होती थीं उनमें कांग्रेस के झण्डे लगा दिए जाते थे और कहा जाता था कि यह कांग्रेस की रैली है। मेरे क्षेत्र में भी 3-4 बार इस प्रकार किया गया था ताकि हम मंच पर न जा सकें। ऐसी सभाओं में कहा जाता था कि कांग्रेस पार्टी का महा सम्मलेन हो रहा है और डी.सी व अन्य अधिकारी मंच पर बैठे हुए होते थे, इसके अतिरिक्त डी.पी.आर.ओ. मंच का संचालन कर रहा होता था। ऐसी चीजों को रोकने के लिए बहुत पहले शुरूआत हो जानी चाहिए थी। आप लोगों ने इसकी शुरूआत नहीं की और इन चीजों को छोड़ते चले गए। जिस कारण आज हम सब ने अपना बहुत बड़ा नुकसान किया है और इस बात को हम सभी को समझना पड़ेगा। आज आप बोल रहे हैं कि हमारे नेता नारियल फोड़ रहे हैं, यह तो शुक्र है कि नारियल फोड़ रहें, सिर नहीं फोड़ रहे हैं।...व्यवधान...

श्री जगत सिंह नेगी : अध्यक्ष महोदय, एक मुख्य मंत्री को सिर फोड़ने की बात करना शोभा नहीं देती।...व्यवधान...

मुख्य मंत्री : माननीय सदस्य श्री जगत सिंह नेगी को समझाइए।...व्यवधान... यह ठीक तरीका नहीं है।...व्यवधान...

03-03-2022/1325/ए.जी.-एन.जी. /2

(पक्ष व विपक्ष के सभी माननीय सदस्य अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर शोर-शराबा करने लगे।)

अध्यक्ष : माननीय सदस्य बैठ जाइए और माननीय मुख्य मंत्री जी की बात तो सुन लीजिए। ...व्यवधान... शांत रहें। ...व्यवधान...

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, मेरा विपक्ष के साथिओं से कहना है कि कभी-कभी बात को पूरा समझने की कोशिश करनी चाहिए।...व्यवधान... मैंने कहा कि ऐसी स्थिति में सिर फुटवाई भी हो जाती है।...व्यवधान...

अध्यक्ष : माननीय सदस्य बैठ जाइए और सुन तो लीजिए।...व्यवधान...मुख्य मंत्री जी आप कहें।

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, मेरा माननीय सदस्य की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का अभिप्राय नहीं था। मेरा कहना था कि कईं बार लड़ते-लड़ते ऐसी स्थिति हो जाती है कि हम एक-दूसरे का सिर फोड़ने पर आ जाते हैं। ...व्यवधान... इसको इस तरह से ले जाने की जरूरत नहीं है जिस तरफ आप लेकर जा रहे हैं। ...व्यवधान...

श्री जे.एस. द्वारा जारी.....

03.03.2022/1330/JS/AS/1

मुख्य मंत्रीः--------जारी--------

इसलिए अध्यक्ष महोदय मैं यह कह रहा हूं कि ये परम्पराएं हैं। ये परम्पराएं हमने ही शुरू की हैं। वर्षों से ये परम्पराएं चलते-चलते आगे बढ़ती गईं और आज परिणाम हमारे सामने

है। अब सभी विपक्ष के विधायकों को लग रहा है कि बदली हुई परिस्थिति में इसके बारे में सोचना चाहिए। मेरा यह मानना है कि दो-तीन चीजों को ले करके हमारी स्पष्ट मान्यता है कि एक तो विधायक का संस्थान, मान-सम्मान और जिस स्थान का वह हकदार है, उसमें कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। हमारे व्यवहार की वज़ह से, हमारे काम की वज़ह से और एक चुने हुए प्रतिनिधि को जो मान-सम्मान मिलना चाहिए उसमें कहीं पर भी कमी नहीं आनी चाहिए। यह बात हमारे व्यवहार पर भी बहुत ज्यादा निर्भर करती है और दूसरे यदि आगे से कोई गलत कर रहा है तो उस बात को ले करके उसका संज्ञान लेना ही पड़ता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात के बारे में मैं कहना चाहता हूं कि यदि सरकार बदल गई और जो शिलान्यास के पत्थर लगे हों तो उनको तोड़ने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। मेरे विधान सभा क्षेत्र में तो अब रिस्टोर हुए। आपकी ही सरकार में हम बोलते रहे हैं। हमने इन सब की सूची दी है और कहा है कि मुख्य मंत्री जी ये-ये शिलान्यास तोड़े गए हैं। मुख्य मंत्री जी ने यहीं से जहां मैं खड़ा हुआ हूं, कहा था कि विभाग इनको रिस्टोर करेंगे लेकिन वे रिस्टोर नहीं हुए। अब जा करके वे रिस्टोर हुए। जो तोड़े गए वे नाम वाले तोड़े गए। उसके बारे में एफ.आई.आर. तक दर्ज़ नहीं हुई थी। एक जगह तो पहले उसको हथौड़े से तोड़ने की कोशिश की गई लेकिन वह शिलान्यास नहीं टूटा। उसके बाद ट्रक लाया और उस ट्रक के डाले से ही उसको तोड़ दिया। वहां पर एक पुल का शिलान्यास किया हुआ था। जब किसी आदमी ने देखा कि यह ट्रक यहां पर क्या कर रहा है तब मालूम हुआ कि यह उस काम के लिए वहां पर खड़ा था। उस ट्रक का नम्बर तक दिया गया कि ये गाड़ी है उसके बावजूद भी कार्रवाई नहीं हुई क्योंकि वह आदमी आपकी पार्टी का बड़ा नेता था। हमने वहां पर शिलान्यास किया हुआ था और फिर उसके बावजूद शिलान्यास करने के लिए और एक स्कूल के भवन का शिलान्यास करने के बाद फिर शिलान्यास करने के लिए

03.03.2022/1330/JS/AS/2

वहां पर लोग आ गए। उसी स्कूल के भवन में दो-दो शिलान्यास के पत्थर लगा दिए गए। अध्यक्ष महोदय, मैं इन सारी बातों से सहमत हूं। यह पीड़ा सभी माननीय विधायकों की है

और जब विपक्ष में होते हैं तो यह पीड़ा ज्यादा हो जाती है। लेकिन हमें इन चीजों को ले करके इन पर निश्चित रूप से विचार करना होगा। आपने जो विधायक प्राथमिकता की बात यहां पर बताई, मेरा इसमें मानना है कि इस बात को लेकर हम जरूर विचार करेंगे कि विधायक प्राथमिकता की जो योजनाएं हैं, उनमें जिस विधायक ने अपनी प्राथमिकता डाली है और subject to the condition उसकी वैरिफिकेशन ठीक हो जाए कि यह विधायक ने प्राथमिकता डाली है तो हम उस पर विचार करेंगे। यह बात सोची जा सकती है। इसके अतिरिक्त जहां तक बात आती है मंत्रियों की कि मंत्री टूअर प्रोग्राम भेजते हैं, वह प्रशासन को जाता है और विधायक को सूचना देने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। अगर वह व्यवस्था नहीं है तो मैं कह रहा हूं कि हम इस बात को सुनिश्चित करेंगे कि मंत्री का टूअर प्रोग्राम क्यों छिपाना है। मंत्री कोई चोरी-छिपे तो नहीं जाएगा। यदि मंत्री टूअर में जाए तो संबंधित विधायक को भी सूचना जानी चाहिए। मंत्री के कार्यालय से भी इस बात को सुनिश्चित किया जाए कि वहां से उस संबंधित विधायक को वह सूचना जाए। जो लोकल एडमिनिस्ट्रेशन है, बी.डी.ओ., एस.डी.एम., हैं, उनकी ओर से भी विधायक को कम्युनिकेशन जाएं। हमें भी अच्छा लगेगा कि प्रोग्राम में विधायक आ जाए। इसमें ऐतराज़ वाली कोई बात नहीं है। इसके अतिरिक्त जो आपने बाकी चीजों को ले करके यहां पर बातें कही हैं।

श्री एस.एस. द्वारा जारी----

03.03.2022/1335/SS-AS/1

मुख्य मंत्री क्रमागत :

जो सिंघा साहब ने भी बातें कही हैं कि हम बहुत खतरनाक दिशा में आगे बढ़ रहे हैं हम अगर इस प्रकार से इंस्ट्रियूशन में गिरावट लाने में अपना योगदान हमेशा देते रहे तो स्वाभाविक रूप से आने वाले समय में हमको कोई भी गम्भीरता से नहीं लेगा। विधायक एक निर्वाचन क्षेत्र का चुना हुआ प्रतिनिधि है। अब वे दिन निकल गए जब आसानी से नेता बन

जाते थे, बार-बार विधायक बन जाते थे लेकिन आज की तारीख में विधायक बनना बहुत कठिन काम है। बहुत जटिल होता जा रहा है। यह भी बात है कि पहले जमाने में विधायक के प्रति सम्मान का भाव भी होता था। लोगों के मन में भी सम्मान का भाव होता था और उसके साथ-साथ प्रशासन में भी होता था। लेकिन आज ये सारी चीज़ें देखने में आ रही हैं कि आपका विधायक जाता है तो जाए। ऐसी स्थिति में विधायकों को लालबत्ती देने की बात आई थी। लालबत्ती थोड़े वक्त के लिए लगी और लालबत्ती लगने के बाद थोड़ा डिग्निटी के नाते महसूस हुआ कि विधायक आता-जाता दिख रहा है। लालबत्ती में जा रहा है तो विधायक जा रहा है। लेकिन उसके बावजूद भी हमने इस बात को देखा कि जो पुलिस के लोग होते थे वे देखते थे कि मंत्री है या विधायक। जब देखते थे कि विधायक है तो अपनी पीठ ही फेर लेते थे। कहने का मतलब है कि सिस्टम में एक डाइल्यूशन आया है। मैं कह रहा हूं कि उनको अटैंशन में तो खड़ा होना चाहिए भले ही वे सॉल्यूट मारे या न मारे। लेकिन आज वह स्थिति नहीं है उसका क्या कारण है? लालबत्ती जल रही है लेकिन उसके बावजूद भी यह स्थिति आई है तो इसका मतलब है कि हमने अपने आप ही कंट्रीब्यूट किया है और इस इंस्ट्टियूशन के महत्व को डाइल्यूट किया है। अब कोई विधायक गाड़ी से उतर कर बोल नहीं सकता कि मैं विधायक हूं और मुझे सॉल्यूट कर दो। यह बात सहज रूप से आनी चाहिए थी। लेकिन हमने देखा कि ये सारी चीज़ें पहले देखी नहीं गईं। मैं इन बातों का उदाहरण दे रहा हूं। इसलिए लोगों के बीच में भी इस प्रकार की परिस्थिति बनी है वह चिंताजनक है।

03.03.2022/1335/SS-AS/2

अध्यक्ष महोदय, मैं इस पर बहुत ज्यादा नहीं कहना चाह रहा हूं, मैंने विशेष तौर से यहां पर दो बातों का ज़िक्र किया है। इन बातों पर ज़रूर विचार करेंगे। विधायक प्राथमिकता की जो योजनाएं हैं उनमें विधायक का नाम अंकित हो और उसके साथ-साथ यदि मुख्य मंत्री या मंत्री का प्रवास हो तो उसकी सूचना संबंधित विधायक को जाए। एक और बात आई है। ...व्यवधान... एक नोटिफाइड कमेटी की बात आई है। नोटिफाइड कमेटीज में

जहां विधायक हैं वहां सबको नहीं बुलाना चाहिए। प्रशासन को भी देखना चाहिए कि जो बाकी लोग आते हैं वे बाद में बैठें। हां अगर किसी प्रोविजन के अंतर्गत उस कमेटी का मेम्बर नॉन-एम0एल0ए0 भी है तो उसको बैठने का अधिकार है। उसमें वह सिस्टम रहना चाहिए। मेरा भी मानना है कि जब प्रशासनिक अधिकारियों की बैठक है तो उसमें उन्हीं लोगों को बैठना चाहिए जिन लोगों को अधिसूचित किया गया है। जो लोग उस कमेटी में बैठने के पात्र हैं वे अवश्य बैठने चाहिएं। ...व्यवधान...

जहां तक डी0सी0पी0 फंड की बात है, देखिए हम विधायक हैं, चुने हुए प्रतिनिधि हैं; चुने हुए प्रतिनिधि के साथ-साथ पंचायत का प्रधान भी चुना हुआ होता है, बी0डी0सी0 का मेम्बर होता है, जिला परिषद् का मेम्बर होता है और कई बार कई संस्थाओं के ऐसे प्रतिनिधि होते हैं जहां आवश्यक लगता है तो डिप्टी कमिश्नर पैसा देते हैं। ऐसा नहीं है कि विधायकों के कहने पर पैसा नहीं देते हैं। आप लोगों के कहने पर भी पैसा देते हैं। ...व्यवधान... पैसा देते हैं, आप गप्पे मत मारो। कुछ तो अधिकारियों को डराने भी लग गए हैं और फोन कर रहे हैं। हमको इसके बारे में अधिकारी बताते हैं। कुछ फोन करके ऐसा भी बोल देते हैं कि हम सत्ता में आ रहे हैं और वर्तमान सरकार जा रही है। ऐसी बातें हो रही हैं। दबाव के बजाय अधिकारियों के साथ कॉर्डियल रिलेशनशिप मैनटेन करना चुने हुए प्रतिनिधियों के लिए बहुत आवश्यक है।

जारी श्रीमती के0एस0

03.03.2022/1340/केएस/DC/1

मुख्य मंत्री जारी---

अगर आपके अधिकारियों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध होंगे तो स्वभाविक रूप से आपको उस वक्त भी कामकाज में मदद होगी। तरीका कुछ निकल जाता है मदद करने का तो निकल जाएगा लेकिन जो इन्होंने सुझाव दिया है, वैसे तो अधिकांश फंड्ज़ की एलोकेशन के लिए, उसकी सेंक्शन के लिए नियम हैं। बैकवर्ड एरिया सब प्लान के लिए हैड वाइज़

पैसा होता है। ऐजुकेशन सैक्टर में, आई.पी.एच. में, पी.डब्ल्यू.डी. में कितना-कितना पैसा खर्च करना है, इन सारी चीजों के लिए उसमें प्रावधान है। इसी तरह से शैड्यूल कास्ट कम्पोनेंट प्लान में भी है। इसके अतिरिक्त कुछ जगह थोड़ा-बहुत पैसा होता है, बहुत ज्यादा पैसा अब डी.सी. के हाथ में नहीं रहा है। जब से विधायक निधि आ गई है तो विधायकों के पास एक साइजेबल अमाउंट होता है। हमारे शुरू के दौर में विधायक निधि नहीं हुआ करती थी। उस समय कुछ भी नहीं होता था तो हम तो बिल्कुल रहमो-कर्म पर ही रह जाते थे। आज तो विधायक निधि है इसके साथ-साथ ऐच्छिक निधि भी है और उससे तो बहुत बड़ी मदद हुई है। नहीं तो विधायक को उसी वक्त अपना बटुआ निकालना पड़ता था कि मैं आपको इस टूर्नामैंट में या इस संस्था के लिए एक या दो हजार रुपये दे रहा हूं। हमें अपनी जेब से पैसे देने पड़ते थे और हम देते थे लेकिन ऐच्छिक निधि की एक शुरुआत हुई है जिससे गरीब आदमी की भी बड़ी मदद हुई है और दूसरे कार्यक्रमों में भी मदद हुई है। हमने इसमें लगातार वृद्धि की है। यह आपकी कांग्रेस सरकार के समय में 4.00 लाख रुपये मिलती थी जो आज 10.00 लाख तक पहुंच गई है। ...(व्यवधान)... आने वाले समय में भी देखेंगे क्या होता है, क्या नहीं होता है। बजट पेश होने देते हैं। मुझे मालूम नहीं है कि बजट में क्या लिखा है? आने वाले समय में इस बात का भी ध्यान रखेंगे।

अध्यक्ष महोदय, इन बातों को ध्यान में रखते हुए मेरा माननीय सदस्य श्री जगत सिंह नेगी जी से निवेदन है कि इस संकल्प पर बहुत ही सार्थक चर्चा हुई है। सभी लोगों

03.03.2022/1340/केएस/DC/2

ने अच्छे सुझाव दिए हैं। सत्ता पक्ष और विपक्ष सभी का एक मत है कि विधायक इंस्टीट्यूशन को स्ट्रेंथन करने की ज़रूरत है नहीं तो कहीं के नहीं रहेंगे। मतलब हमारी कोई नहीं सुनेगा, कोई नहीं मानेगा। आप आते-जाते हुए दिखेंगे लेकिन कोई आपको रिकगनाइज़ नहीं करेगा। कारण, कारण कि जो बातें मैंने कही उनको लेकर हमारा व्यवहार उसके मुताबिक हो, यह मेरा आप सभी से आग्रह है। जो मैंने बातें कहीं, उनको ध्यान में रखते हुए माननीय सदस्य से मेरा निवेदन है कि इस संकल्प को वापिस लें। धन्यवाद।

03.03.2022/1340/केएस/DC/3

अध्यक्षः माननीय मुख्य मंत्री ने बड़े विस्तार से उत्तर दिया है तो क्या माननीय सदस्य अपना संकल्प वापिस लेने को तैयार हैं?

श्री जगत सिंह नेगीः अध्यक्ष महोदय, मैंने मांगा था कुछ और, यहां तो सिर्फ बांटने की बारी आ गई। जिस तरीके से माननीय मुख्य मंत्री जी ने जवाब दिया है it was a non serious reply जो इनसे उम्मीद नहीं थी। इन्होंने पूछा कि बदलते परिवेश की क्या डेफिनेशन है? आपने खुद कहा कि यहां से आप उस सीट पर पहुंचे जो हमारे नेतृत्व का सबसे उच्च आसन है। आपकी जो यहां पीड़ा थी, वहां जा कर आपकी पीड़ा खत्म हो गई है, उसके लिए आप खुशकिस्मत हैं कि आपकी पीड़ा खत्म हो गई। आप हमें पीड़ा में रखना चाहते हैं, रखिए। आपका धन्यवाद।

अध्यक्षः माननीय सदस्य, इसमें कोई क्लैरिफिकेशन नहीं होती। आपने और माननीय सदस्यों ने जो कहा, माननीय मुख्य मंत्री जी ने बड़े विस्तार से उसका उत्तर दे दिया है।

श्री जगत सिंह नेगीः सर, आप मुझे बोलने ही नहीं देते। आप मुझे हमेशा बीच में इन्टरवीन करते हैं। आप मुझे 9 मिनट में रोक देते हैं बाकी लोगों को 30-30 मिनट बोलने देते हैं। सर, नियम 101 में क्लैरिफिकेशन मिलती है। जब इन्होंने प्रस्ताव वापिस लेने की रिक्वेस्ट की है, मैं लूं या न लूं, मुझे भी तो बोलना पड़ेगा कि मैं क्यों प्रस्ताव वापिस नहीं लेना चाहता या मैं क्यों प्रस्ताव वापिस लूंगा। आप मुझे यह भी नहीं बोलने देंगे तो मैं फिर क्या बालूंगा? क्या मैं चुपचाप गूंगे की तरह बैठ जाऊं?

अध्यक्षः आप थोड़ा धीरे बोलिए, आपका पहले ही गला बैठा हुआ है।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी---

श्री जगत सिंह नेगी ---**क्रमागत**

क्यों प्रस्ताव वापिस नहीं ले रहा हूं। ...व्यवधान... अगर आप मुझे बोलने नहीं देंगे तो क्या मैं गूंगे की तरह चुपचाप बैठ जाऊं? मैं केवल दो-तीन प्वाईंट्स पर बात करना चाहता हूं। मैं इसको इसलिए वापिस नहीं लूंगा क्योंकि इसमें ऐसे बहुत सारे मुद्दे सामने आए हैं जिनके बारे में माननीय मुख्य मंत्री ने कोई जवाब नहीं दिया। पट्टिकाएं कोई जरूरी नहीं है, आप उनको तोड़िए और उसमें सरकार का पैसा नहीं बल्कि जनता का पैसा लगा होता है। 45 से ज्यादा पट्टिकाएं तो मेरे ही निर्वाचन क्षेत्र में तोड़ दी गई हैं और आपने एक बार नहीं बल्कि कई बार कहा है कि उनको एक महीने के अंदर-अदर लगा दिया जाएगा। इस बारे में इसी सत्र के दौरान एक प्रश्न भी लगा था जिसके उत्तर में यह कहा गया है कि अभी लगाई जाएंगी। उसको छोड़िए, मैं यह कह रहा हूं कि विधायकों की इस संस्था को कैसे मजबूत किया जाए; इस पर सोचने की आवश्यकता है। इस बारे में यहां पर बहुत सारे माननीय सदस्यों ने काफी अच्छे सुझाव दिए हैं। मैं इससे संबंधित दो-तीन प्वाईंट्स पर बोलना चाहता हूं। भारत सरकार की तरफ से गाइडलाइंस हैं कि ...व्यवधान...

अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप संकल्प वापिस ले रहे हैं या नहीं? ...व्यवधान... कौन-सी क्लेरीफिकेशन? माननीय मुख्य मंत्री ने इस संकल्प पर विस्तार से उत्तर दे दिया है। माननीय सदस्य, इस विषय पर आप सहित लगभग 12 विधायकों ने अपनी-अपनी बात रखी हैं। ...व्यवधान...

श्री जगत सिंह नेगी : अध्यक्ष महोदय, अगर सरकार की कुछ न करने की मंशा है तो आपका धन्यवाद; न करें। हम अपनी पार्टी की सरकार आने पर इसको ठीक कर देंगे। माननीय मुख्य मंत्री ने इस विषय को बहुत हलके में लिया है इसलिए मैं इस प्रस्ताव को वापिस नहीं लूंगा।

अध्यक्ष : माननीय मुख्य मंत्री ने बड़े विस्तार से उत्तर दिया है तो क्या माननीय सदस्य अपना संकल्प वापिस लेने को तैयार हैं?

श्री जगत सिंह नेगी : अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री ने जो जवाब दिया है उससे मैं संतुष्ट नहीं हूं इसलिए मैं अपना संकल्प वापिस नहीं लूंगा।

03-03-2022/1345/av/dc/2

अध्यक्ष : तो प्रश्न यह है कि ''बदलते परिवेश में विधायकों की भूमिका पर यह सदन विचार करे?

संकल्प अस्वीकार।

अब इस माननीय सदन की बैठक दोपहर के भोजनावकाश हेतु 02.45 बजे अपराह्न तक स्थगित की जाती है।

03/03/2022/1455/टी0सी0वी0/एच0के0/1

(सदन की बैठक दोपहर के भोजनोपरान्त 2.55 बज़े अपराह्न पुनः आरम्भ हुई)

अध्यक्ष : अब श्री जीत राम कटवाल, माननीय सदस्य अपना संकल्प प्रस्तुत करेंगे। इसी विषय पर माननीय सदस्य, श्री नरेन्द्र ठाकुर जी से भी संकल्प प्राप्त हुआ है, वे भी चर्चा में भाग ले सकते हैं।

श्री जीत राम कटवाल, झण्डुता : अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। मैं आपकी अनुमति से अपना संकल्प प्रस्तुत करता हूं जो इस प्रकार से हैं :-

"श्रीमद् भगवत् गीता को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने बारे यह सदन विचार करे ।"

अध्यक्ष : तो संकल्प प्रस्तुत हुआ कि श्रीमद् भगवत् गीता को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने बारे यह सदन विचार करे। अब इस पर श्री जीत राम कटवाल जी चर्चा शुरु करेंगे।

श्री जीत राम कटवाल : अध्यक्ष महोदय, भगवत् गीता को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने के बारे में मैंने अपना संकल्प दिया है। मैं इस संदर्भ में कुछ विशेष बातें कहना चाहूंगा। भारतीय संस्कृति और साहित्य का सार भगवत गीता में आता है और यह हमारा धार्मिक

ग्रंथ भी है। परंतु इसके अलावा इसको जीवन की दार्शनिकता के संदर्भ में भी जाना जाता है। कर्म या कर्त्तव्य के बारे में जो सोचा जाता है या टिप्पणियां होती हैं, उनका सबसे उत्कृट संदर्भ श्रीमद् भागवत् गीता को कहा जाता है। इसमें 18 चैप्टर हैं और 720 श्लोक हैं। जैसे हरेक किताब का कोई लेखक होता है, इसके बारे में यह कहा गया है कि जब कुरुक्षेत्र में कौरवों और पांडवों में युद्ध निश्चित हो रहा था तो उस व़क्त अर्जुन के दिल और दिमाग में जो अकर्मण्यता आई थी उसको दूर करने के लिए भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं गीता का ज्ञान दिया था।

एन0एस0 द्वारा जारी ....

03-03-2022/1450/NS/HK/1

श्री जीत राम कटवाल..... जारी

हमारी संस्कृति और इतिहास में दो महान पुरूष हैं। एक भगवान श्री राम जिनको एक व्यक्ति के रूप में मर्यादा पुरूषोतम व्याखित किया गया। इसका अर्थ है मर्यादाओं का पालन करने वाले पुरूष और पुरूषों में उत्तम। इसी तरीके से भगवान श्री कृष्ण आज से साढ़े पांच हजार वर्ष पहले इस भारत वर्ष की पुण्य भूमि में अवतरित हुए और उनको एक मानव होते हुए भगवान का दर्ज़ा प्राप्त है। इसका यही कारण है कि उनके शब्द और भगवत गीता का स्वरूप हमारे जीवन की सारी समस्याओं और जीवन के अनसुलझे तथ्य होते हैं, कठिनाइयां होती हैं उनको सुलझाने में हमें इससे शक्ति मिलती है, सुझाव मिलते हैं और मार्गदर्शन होता है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कर्म का महामंत्र प्रदान किया है। इसको मानव जाति के कल्याणकारी होने का और पथ प्रर्दशक, मार्गदर्शक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज़ के रूप में और धार्मिक ग्रंथ के रूप में जाना जाता है परन्तु यह जीवन की एक दार्शनिकता के रूप में ज्यादा समझा जाता है। क्योंकि यही एक ग्रंथ है जिसके ऊपर विश्व में सबसे ज्यादा टिप्पणियां हुईं हैं। भारत वर्ष और एशिया ही नहीं बल्कि यूरोप, अमरीका, रूस और बड़े-बड़े देशों के 60 आदमियों ने टिप्पणियां कीं हैं। ये ज्यादातर पश्चिमी सभ्यता के द्योतक हैं। महान दार्शनिक, वैज्ञानिक या किसी और भी तरीके से जो बड़े-बड़े व्यक्ति कहे जाते हैं उनका इनको दर्ज़ा प्राप्त है।

भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि आत्मा अमर है। जैसे हम वस्त्र त्याग देते हैं और नए वस्त्र धारण करते हैं तो उसी तरीके से आत्मा पुराने शरीर को छोड़ कर नए शरीर में प्रवेश करती है। आत्मा अजर और अमर है, इसके साथ ही मनुष्य को अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए। अच्छा कर्म सभी धर्मों में माना जाता है और अच्छा कर्म होगा तो उसके अच्छे फल होंगे। अच्छा कर्म करना एक वास्तविकता है और इसी वास्तविकता को आगे बढ़ाते हुए श्रीमद् भगवत् गीता में बताया गया है। अगर हम अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग हैं तो सफलता और असफलता का कोई अर्थ ही नहीं होता है। हम सफल और असफल होने पर ज्यादा प्रभाव नहीं रख पाते। धर्म की अधर्म पर विजय, झूठ पर सच की विजय, पाप पर पुण्य की विजय, यह इसका सार है। इसमें भगवान श्री कृष्ण ने जो उपदेश दिया उसमें धर्म, अधर्म, पाप, पुण्य, न्याय और अन्याय को स्पष्ट किया गया

03-03-2022/1450/NS/HK/2

है। उन्होंने धृतराष्ट्र के पुत्रों को अन्याय का प्रतीक कहा और पाण्डु पुत्रों को धर्म का प्रतीक कहा है। यही कारण है कि धर्म के प्रति हमारा रुझान और कर्तव्य के प्रति हमारे जीवन का तात्पर्य तथा जीवन की दार्शनिकता इसी तरीके से रहती है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने भी कहा है कि गीता के उपदेश अद्वितीय हैं और इन्हें पढ़ कर ही मनुष्य को ज्ञान हुआ कि इस दुनिया का निर्माण कैसे हुआ? जैसे मैंने पहले कहा कि

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

03.03.2022/1505/RKS/YK-1

श्री जीत राम कटवाल... जारी

महात्मा गांधी जी ने कहा कि जब मुझे परेशानी होती है तो मैं भगवत् गीता का सहारा लेता हूं और गीता के पन्नों को पलटता हूं। महान दार्शनिक श्री अरविन्द घोष जी ने कहा कि भगवत् गीता धर्मग्रंथ या पुस्तक न होकर एक जीवनशैली है जो हर उम्र के व्यक्ति को एक अलग संदेश और हर सभ्यता का अलग अर्थ समझाती है। संसार की समस्त सभ्यता इस

ग्रंथ में निहित हैं। भगवत् गीता के उपदेश जगत कल्याण का सात्विक मार्ग हैं। श्री कृष्ण ने कुरूक्षेत्र में खड़े होकर अर्जुन रूपी जीव को धर्म, समाज, राष्ट्र राजनीति व कूटनीति की शिक्षा दी। प्रजा के प्रति शासक के क्या कर्त्तव्य और व्यवहार हों, की शिक्षा दी तथा कर्म के ज्ञान को भी उद्घाटित किया।

(माननीय उपाध्यक्ष पदासीन हुए।)

श्री कृष्ण के उपदेश कालजयी और संसार के लिए कल्याणकारी हैं और ये सदा सामयिक रहते हैं। युद्ध और विनाश के मुहाने पर खड़े संसार को संभालने का संबल भी इस ग्रंथ से मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण के मुख से प्रतिपादित इन शब्दों से हम सभी लोगों को आज यह धार्मिक ग्रंथ, दार्शनिकता या जीवन के सत्य के रूप में मिला है। इस ग्रंथ के बारे में विश्व के विभिन्न इतिहासकारों, राजनीतिज्ञों, वैज्ञानिकों और दार्शनिकताओं द्वारा कई टिप्पणियां की गई हैं। मैंने इसके बारे में जो सामग्री एकत्रित की हैं उसे मैं अंग्रेजी भाषा में पढ़ना चाहूंगा। मेरे पास माननीय उच्चतम न्यायालय के भी कुछ तथ्य हैं जिन्हें मैं आपके समक्ष रखना चाहूंगा। Individuals and ideologies unable to understand the heart and mind of India have either always considered ideas and words like Hindu, Hindutva, National and Nationalism in public discourse as a taboo and untouchable and given one sided interpretation. राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद, हिन्दू, हिन्दुत्व, 'Hindutva is a way of life' इन शब्दों को उद्धृत करते हुए माननीय उच्चतम न्यायालय ने वर्ष 1995 में एक रुलिंग दी थी। Supreme Court Ruled that Hindutva is a way of life it cannot be limited to a belief or system of worship. To become a

vehicle of change one has to take lessons from the mistakes of the past, improve the present and decide the future direction. ये कुछ ऐसे तथ्य हैं जो मैंने

आपके समक्ष रखे। भगवत् गीता को स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु जो मैं कहना चाहूंगा उसका उल्लेख अंग्रेजी भाषा में करूंगा।

श्री बी.एस.द्वारा... जारी

03.03.2022/1510/बी.एस./वाई0के0/-1

Shri Jeet Ram Katwal continues….

Bhagwat Geeta is the most sacred book of Hindu religion. Hindus consider it the words of God (Lord Krishna) and treat every word of Geeta as a Gospel Truth.

Some people consider Geeta not a religious Scripture but a philosophical entity. There is some merit in this argument as Geeta is not about rituals and laws but about the philosophy of life from Indian perspective. It is part of Indian philosophy course all over the world. In childhood whatever we learn gets etched in our brains making them as indelible impressions. So introducing Bhagwat Geeta in school curriculum is a good omen to turn the Indian economy & even world economy in a positive direction.

Actually, there can be even the gradation of the ways of deepness of explanation and practicability of attitudes, reflecting the basic, high school, and university levels of education.

Such a project would be a valuable contribution to the healthy development of Indian young generations not as a religious but as a practical spiritual tradition. However, such a project would demand serious studies done not by religious people, but by specialists understanding the practical spiritual message of the Bhagwat Geeta. The key factors of the study would be the explanations of the importance of the spiritual experiential knowledge for individuals and the importance of understanding the non-religiousness of the ancient Vedic way of life. When one learns Bhagawat Geeta from authorized

source, then the reader will also find things which are not to be found elsewhere. It's a manual for life.

Previously it was taught in all schools (Gurukul's) in ancient India till the British has introduced the modern education system. But, now it is taught in many schools and universities outside India including London (St. James School).

03.03.2022/1510/बी.एस./वाई0के0/-2

There are 18 chapters in Bhagwat Geeta. Study of it will give moral values which will help children to grow spiritually and remain attached to the root's. Today due to lack of moral values we are seeing youth wasting time in relationships just for sake, indulging in drinking, high degree of lust among youth. So investing 18 hours is not a big deal if children are taught 1 hour moral values every day, after this a child will come out from school will be of good not only character but a proved human being. As scriptures give eternal knowledge which can be applied in all times, places and circumstances but to be heard from a bonafide guru.

Every moment in this world we are looking for two things ananda (bliss) and eternality in relationships and ultimate happiness.

Unfortunately we consider Bhagwat Geeta as a religious text. India's young generation remains deprived of its sacred benefits. Those who have read Bhagwat Geeta once at least, they will understand it is not a religious text. No other book has got such a wide circulation and published with innumerable interpretations like Geeta. Its influence is beyond time and space and territories. It is a treasure house of knowledge for any fertile mind and its influence is eternal. Mahatma Gandhi sighted Geeta his Mother and he said whenever he felt confusion and sorrow, he had taken refuge in Shri Bhagwat Geeta.

Indians should revert to their ancient traditions, and texts such as Mahabharata and Bhagwat Geeta should be introduced to children at an early age.

Teaching of Bhagwat Geeta will undoubtedly help inculcate the virtues we desire in the Generations of tomorrow and act as a moral compass in their times of distress. The glorious future of our country demands for it. If children at younger age are taught with the power of decision making, cause and effects of vice and virtuous deeds and the method of application of the epic

03.03.2022/1510/बी.एस./वाई0के0/-3

stories in real lives then we would ever be so proud of raising children with a positive mind set. Which could be imparted throw Shri Bhagwat Geeta. इस पर कुछ विदेशी महानुभावों के कोमैंट्स आए हैं, वोलटायर जो थे फ्रांस रेवोलुशन के एक प्रवर्तक रहे हैं, उनकी भी एक टिप्पणी है - "I am convinced that everything has come down to us from the banks of the Ganga-astronomy, astrology, metempsychosis, etc.

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

03-03-2022/1515/ए.जी.-एन.जी. /1

Shri Jeet Ram Katwal continues. . .

It is very important to note that some 2500 years ago at the least Pythagoras went from Samos to the Ganga to learn geometry. But he would certainly not have undertaken such a strange journey had the reputation of the Brahmins

science not been long established in Europe. The Vedas was the most precious gift for which the west had ever been indebted to the East i.e India. श्रीमद् भगवत् गीता के बारे में विशेष तौर पर एक जर्मन फिलोस्पर Julius R Oppenheimer हुए हैं उन्होंने भी यह कहा है कि - The juxtaposition of Western Civilization's most terrifying scientific achievement with the most dazzling description of the mystical experience given to us by the Bhagvat Gita, India's greatest literary monument. Mark Twain एक बहुत बड़े पोलिटिकल थिंकर हुए हैं उन्होंने भी यह कहा है कि "Our most valuable and most instructive material in the history of man are treasured up in India." David J. Bohm - "Atman equals Brahman of classical Hindu philosophy". Aldous Huxley एक बहुत बड़े दाशर्निक हुए हैं और उन्होंने कहा है कि "The Bhagvat Gita is the most systematic statement of spiritual evolution of endowing value to mankind". श्रीमद् भगवत् गीता के रेलिवेंस में यह कुछ ऐसी बातें हैं। इस कॉन्टिनेंट से परे की दुनिया में ऐसे बहुत सारे तथ्य हैं और मैंने अभी केवल 5-6 ही कोट किए हैं। Hindu Rashtra is not a political concept. Any person in India or in the whole world who considers himself to be a child of mother India, who respects the culture of India and who remembers his Indian ancestors is a Hindu in our eyes. We believe that one who does not call himself a Hindu, calls himself by some other name is also a Hindu, that means, it's Hindu is a way of life. यह डॉ0 मोहन भागवत जी का कथन है जिसे मैंने यहां पर रखा है। यहां पर मैंने बहुत सारी चीजें कही हैं। मैंने अपने संकल्प को प्रस्तुत करते हुए कुछ तथ्य समय को ध्यान में रखते हुए रखे हैं। ऐसे विषयों के लिए मेटेरियल तो बहुत ज्यादा होता है लेकिन मैंने यहां पर कुछ ही तथ्यों को रखा है। उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे संकल्प रखने का समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

समाप्त /-

03-03-2022/1515/ए.जी.-एन.जी. /2

उपाध्यक्ष : इस विषय पर पांच सदस्य बोलने वाले हैं और माननीय सदस्य श्री नरेन्द्र ठाकुर जी का भी यही विषय है। 'श्रीमद् भगवत् गीता को क्यों पाठ्यक्रम में होना चाहिए' के संदर्भ

में बोलने वाले सभी माननीय सदस्यों से मेरा विनम्र आग्रह है कि 5-5 मिनट में अपना विषय रखें। अब मैं चर्चा में भाग लेने के लिए माननीय सदस्य श्री नरेन्द्र ठाकुर जी को आमंत्रित करता हूं।

श्री नरेन्द्र ठाकुर (हमीरपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, जो संकल्प माननीय सदस्य श्री जीत राम कटवाल जी ने इस माननीय सदन में रखा है उस पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, अभी श्रीमद् भगवत् गीता के बारे में माननीय सदस्य श्री जीत राम कटवाल ने बड़े विस्तार से बताया है। मैं इस विषय पर कहना चाहता हूं कि आज की यंग जनरेशन व आने वाली जनरेशन, हमारी संस्कृति और हमारे संस्कार क्या हैं, इन सब से बहुत दूर हैं। मेरा कहने का मतलब यही है कि यदि श्रीमद् भगवत् गीता को स्कूलों में इंटरड्यूज़ किया जाए तो हमारा युवा जो रास्ते से भटक गया है उसे सही रास्ते में लाने के लिए यह बहुत बड़ा रोल प्ले करेगी। आज हम सभी देख रहे हैं, समाज देख रहा है और परिवार देख रहा है कि हमें विरासत में जो संस्कृति व संस्कार मिले, आज हमारे बच्चों का समाज में क्या रोल होना चाहिए, परिवार में क्या रोल होना चाहिए, गुरूओं की कैसे रिस्पैक्ट करनी चाहिए, बड़ों का आदर कैसे करना चाहिए, इससे बहुत दूर चले गए हैं

श्री जे.एस. द्वारा जारी.....

03.03.2022/1520/JS/AS/1

श्री नरेन्द्र ठाकुरः -----**जारी**------

इसी तरह से हमारा यह जो सिस्टम सैटअप है और आगे चलता रहा तो हमारा देश और समाज बहुत ही विषम परिस्थितियों से गुजरेगा। आने वाले समय में क्या हालात बनेंगे उनका आकलन करना हमारे लिए बहुत मुश्किल हो जाएगा। मैं यहां पर यह भी कहना चाहूंगा कि जहां तक गीता ग्रंथ का संबंध है, यह भारतीय संस्कृति का एक सर्वोच्च ज्ञान

का केन्द्र है। यह सभी शास्त्रों का सार है, एक ही जगह जो ज्ञान मिलता है वह सिर्फ गीता में मिलता है। गीता को हमने एक "माँ" की संज्ञा भी दी है। जिस प्रकार से माँ अपने बच्चों को प्यार-दुलार करके वहां तक पहुंचाने का प्रयास करती है, उसी तरह से गीता भी अपना ज्ञान करने वालों को शीतल और शांति प्रदान करती है। बहुत सारे ग्रंथ इस संसार में हैं, जो धर्म के मार्ग पर हमें आगे ले जाने की प्रेरणा देते हैं। परन्तु गीता एक ऐसी किताब है जो शिव धर्म ही नहीं बल्कि मन, शरीर और बुद्धि, इन सभी को नियंत्रण करने के लिए हमें शिक्षा प्रदान करती है। अब हमारे बच्चों को एकमात्र ऑल्टरनेटिव बचा है, क्योंकि बच्चे जब ग्रोइंग एज़ में होते हैं, उनका ध्यान कैसे डाइवर्ट किया जाए क्योंकि आजकल बच्चों के पास ऐसे कई ऑल्टरनेटिव हैं। इनकी तरफ न जा करके शुरु में ही बच्चों के हाथ में मोबाइल दे दिया जाता है। परिवार में बैठ कर अपने दादा से, अपनी माता से क्या संस्कार लेने चाहिएं, उनके बारे में उनके पास सीखने का टाइम ही नहीं है। परिवार के साथ बैठ कर, समाज के साथ बैठ कर अच्छी-बुरी चीजों का उनको ज्ञान ही नहीं होता है। हमेशा वे मोबाइल और टेलीविज़न देखते हैं। आप सभी को पता है कि हमारे बच्चे मोबाइल और टेलिवीज़न में किस तरह की संस्कृति व संस्कार देखते हैं। मैं यहां पर निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे जो स्कूल हैं, वे ही केवलमात्र हमारे ऑल्टरनेटिव बचे हैं क्योंकि बच्चा जल्दी ही स्कूल में जाता है और आज की तरीख में बच्चों को गीता का ज्ञान देना बहुत ही जरूरी है। इसमें भावुकता की जगह कर्म प्रधान होता है और गीता का भी यही सार है। गीता कर्म को ज्यादा महत्व देती है। कर्म के बिना हम कोई भी चीज प्राप्त नहीं कर सकते हैं। हमारे बच्चों को यह भी समझ होनी चाहिए कि कैसे कर्म करके इस समाज में हम अपना स्थान बना सकते हैं। गीता का पाठ्यक्रम स्कूलों में इन्ट्रोड्यूस करना हमारे लिए मजबूरी

03.03.2022/1520/JS/AS/2

बन चुका है। आने वाले समय में मैं माननीय मंत्री जी से और सरकार से निवेदन करना चाहूंगा सोच-समझ कर इसको कैसे स्कूलों में इन्ट्रोड्यूस किया जाए, इसके ऊपर विचार किया जाना चाहिए। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा था कि

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलेतुभूर्मा ते संगोस्त्व कर्मणि॥

यही एक ऐसा सार है, जो संसार के हर व्यक्ति पर लागू होता है। अतः विद्यालय में छात्रों को कर्म की महत्वता को समझाना केवल समाज ही नहीं, देश हित के लिए भी बहुत आवश्यक है। मैं यहां पर यह भी कहना चाहूंगा कि गीता का ज्ञान यह सिखाता है कि व्यक्ति को कैसे जीना चाहिए, उसका व्यवहार कैसे हो, समय पर परिश्रम कैसे सम्भव हो, सादा जीवन और उच्च विचार के साथ मनुष्य में स्वार्थभाव से जीवन-यापन करना चाहिए। अंहकार बुद्धि का हरण करता है और ज्ञान गुरू के बिना सम्भव नहीं है। यही भावनाएं समाज में एक नई दृष्टि ला सकती हैं। गीता को एक धर्म वेद ग्रंथ कहा जाए तो इसमें भी कोई अतिशयोक्ति नहीं है। गीता के उपदेश हर व्यक्ति, हर धर्म और हर जाति के लिए उतने ही उपयोगी हैं। गीता का ज्ञान किसी को धर्म परिवर्तन की शिक्षा नहीं देता है।

श्री एस.एस. द्वारा जारी----

03.03.2022/1525/SS-AS/1

श्री नरेन्द्र ठाकुर क्रमागत :

अतः छात्रों को आदर्श जीवन व समाज उत्थान में गीता ज्ञान बहुत ज़रूरी है। गीता का प्रचार विदेशों में भी बड़ी तीव्र गति से फैल रहा है। शिकागो में गीता के ऊपर एक रिसर्च सेंटर भी बना है। इजराइल में गीता को पढ़ाया जाता है। नासा में इसकी डिग्री दी जाती है। मेरा कहने का यही भाव है कि अगर बाहर वाले देश अब गीता का अनुसरण कर रहे हैं तो why not in India it can be taught in schools. सभी राष्ट्राध्यक्षों को जब वे हमारे देश में as a guest आते हैं और वापिस जाते हैं तो हम भी उनके हाथ में गीता थमाते हैं। आप सभी जानते हैं कि जिस ढंग से ये सिस्टम चला है तो गीता की वर्तमान जीवन में कितनी ज्यादा महत्ता है। मेरा माननीय मंत्री जी से यही कहना है कि आने वाले समय में प्रथम और द्वितीय क्लास से ही गीता को हिमाचल के स्कूली बच्चों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए ताकि समाज में जो कुरीतियां फैली हुई हैं वे दूर हों। आज हमारा यूथ नशे की तरफ जा रहा है जिसका इम्पैक्ट समाज और परिवार पर क्या पड़ रहा है उसके बारे में आप सभी जानते हैं। मैं ज्यादा समय न लेता हुआ यही कहना चाहूंगा कि गीता को हिमाचल प्रदेश के

स्कूलों में पढ़ाया जाना कम्प्लसरी किया जाए ताकि आने वाले समय में हमारे बच्चों के भविष्य में सुधार आए और एक नए भारत का निर्माण हो। जयहिन्द, जय भारत।

Deputy Speaker: The concept of Bhagvad Geeta is satisfaction and salvation, मतलब श्रीमद् भगवत् गीता में यही चीज़ थी कि हम संतुष्ट हों और मोक्ष की प्राप्ति के लिए काम करें।

अब मैं नेता प्रतिपक्ष, श्री मुकेश अग्निहोत्री जी को चर्चा में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता हूं। कृपया दो से चार मिनट में अपना विषय रखें।

श्री मुकेश अग्निहोत्री (हरोली) : उपाध्यक्ष महोदय, गीता का विषय बहुत महत्वपूर्ण विषय है और जब आप गीता को स्कूलों में इंट्रोड्यूस करने की बात कहते हैं तो आप मुझे कहते हैं कि इस विषय को दो मिनट में निपटा दो। यह सही बात नहीं है।

उपाध्यक्ष : नहीं, आप तीन मिनट लगाओ।

03.03.2022/1525/SS-AS/2

श्री मुकेश अग्निहोत्री : दो माननीय सदस्य एक महत्वपूर्ण विषय को सदन के अंदर लेकर आए हैं तो इसको निपटाने का विषय नहीं होना चाहिए। इसकी गहराई में जाने की ज़रूरत है।

उपाध्यक्ष : आप इसकी ज्यादा गहराई न पकड़ें क्योंकि इसकी बहुत बड़ी गहराई है।

श्री मुकेश अग्निहोत्री : यह एक आध्यात्मिक विषय है और सबसे पहले सदन के लोगों को उस गहराई में जाना पड़ेगा कि क्यों व्यर्थ चिंता करते हो, किससे व्यर्थ डरते हो, कौन तुम्हें मार सकता है, आत्मा न पैदा होती है और न मरती है। जो हुआ सो अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा हो रहा है, जो होगा वह भी अच्छा होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो, भविष्य की चिंता मत करो, वर्तमान चल रहा है। गोविंद जी, तुम्हारा क्या गया ...व्यवधान...

उपाध्यक्ष : माननीय सदस्य बीच में न बोलें। यह महत्वपूर्ण विषय है।

श्री मुकेश अग्निहोत्री : आप एक-एक पंक्ति की गहराई देखो। खाली हाथ आए थे, खाली हाथ जाना है। परिवर्तन संसार का नियम है। फिर तू क्या है, तू अपने आपको भगवान् को समर्पित कर। न यह शरीर तुम्हारा है और न तुम इसके हो; यह अग्नि, जलवायु, आकाश इत्यादि से बना है और इसी में मिल जाएगा। ये जो बातें गीता की हैं महत्वपूर्ण हैं। अंत में गीता में कहा गया कि तुम अपने आपको भगवान् को समर्पित करो। यही सबसे उत्तम सहारा है। जो इसके सहारे को जानता है वह भय, चिंता, शोक से सर्वदा मुक्त हो जाता है। जो कुछ भी तू करता है उसे भगवान् को अर्पण करता चल। ऐसा करने से जीवन मुक्त का उन्मुक्त अनुभव करेगा। यह गीता का सार है। मेरे माननीय दोस्तों ने गीता की बात रखी और मुझे नहीं मालूम कि किस दृष्टि से रखी। लेकिन सबसे पहले तो मैं चाहूंगा कि सारा हाउस गीता का अध्ययन करे और उसे कंठस्थ करे। जिन्होंने यह विषय रखा वे सब एक बार गीता को सुनाएं कि गीता क्या है। गीता जीवन की सच्चाई है। आप जितना इसमें जाते जाओगे तो आपको लगेगा कि यह मेरे ऊपर ही लिखा हुआ है। यह हम सब के ऊपर लिखा हुआ है।

जारी श्रीमती के0एस0

03.03.2022/1530/केएस/एएस/1

श्री मुकेश अग्निहोत्री जारी-----

जैसे हम यह कहें कि कृष्ण जी ने अर्जुन को ज्ञान दिया, देखो, हम जो इस हाउस में बैठे हैं, हम सभी भगवान को मानने वाले लोग हैं। हमारा तो प्रदेश ही हिन्दू राज्य है। हम तो 98-99 परसेंट हिंदू हैं। हम सभी लोग गीता को मानते हैं। गीता सार जो है, यह हम सभी के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। यह कोई पार्टियों का भेद नहीं है। यह हम सभी के लिए महत्वपूर्ण है। ठीक है, इन्होंने कहा कि कई जगह पढ़ाया जाता है। जब भी आदमी कष्ट में होता है, एक बार गीता पढ़ ले तो उसको लगता है कि कुछ शांति हुई है। हम सब मंदिर जाते हैं। हम सब लोगों को विश्वास है। हालांकि यह विषय बहुत बार आता है कि भाजपा के लोग हमसे ज्यादा हिंदूवादी हैं, हमसे ज्यादा मंदिर प्रेमी है लेकिन मैं खुद हर-रोज़ मंदिर

जाना चाहता हूं। मैं चिंतपूरनी जाता हूं, ज्वालामुखी जाता हूं, चामुंडा जाता हूं, बगुलामुखी जाता हूं, नैनादेवी जाता हूं। मुझे किसी से खौफ़ नहीं है। हर जगह जाता हूं। मैं पूजा करता हूं और हवन भी करता हूं। कोई कुछ भी सोचे लेकिन ये सभी चीज़ें हम सभी लोगों के जीवन का हिस्सा हैं। कई बार हम देखते हैं, कोई कहता है कि फ्लां विधायक बगुलामुखी गया था उसने फ्लां पाठ किया। अरे भई, क्या आपको अकेले को अधिकार है, दूसरे को नहीं है? वह भी जाना चाहता है, वह भी गया। अभी पंजाब के इलैक्शन थे, पता नहीं कितने लोग वहां पर आए। सभी चले हुए थे और सभी अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए भगवान में विश्वास रखने वाले लोग वहां पर जाते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो यहां तक कहता हूं कि आप गीता तक ही सीमित क्यों रखते हो? आप रामचरित मानस को भी लाओ, गायत्री मंत्र भी पढ़ाओ। जीवन की सच्चाइयां वेद में भी है, शिव पुराण में भी हैं। हमारे एक से एक बढ़कर धार्मिक ग्रंथ हैं। हम आपके साथ हैं। आप जो पढ़ाना चाहते हैं, हम आपके साथ हैं। आप कहेंगे कि माला फेरनी है, हम वह भी फेरेंगे। हम तो विश्वास करने वाले लोग हैं। गीता की

03.03.2022/1530/केएस/एएस/2

आपने बात की, गीता का ज्ञान आप जितना बांट सकते हैं, आप बांटे। जितना हम बांट सकेंगे, हम भी बांटेंगे। जिस तरीके से आप कहेंगे, उस तरीके से बांटेंगे। उपाध्यक्ष महोदय, जो प्रस्ताव कटवाल जी ने लाया है, हम इनके समर्थक हैं लेकिन इनको यह भी कहते हैं कि आप चाहे जितने भी ग्रंथ हैं, चाहे आप इसकी युनिवर्सिटियां खोल लो, कॉलेज खोल लो, स्कूल खोल लो, स्पैशल स्कूल खोल लो, जहां-जहां आपको पता लगता है कि धर्म से जुड़े हुए संस्थान हैं, वहां पर यह संस्थान हिमाचल में भी होने चाहिए। खोलो, हम आपके साथ हैं। हम गीता से व्यक्तिगत तौर पर भी प्रभावित हैं और श्रीकृष्ण का उपदेश हम सभी के लिए बहुत बड़ा सार है। हमारे जीवन की हकीकत है, सच्चाई है। उपाध्यक्ष जी, आपने कहा कि संक्षिप्त बोलें, मैं तो चाहता हूं कि हमारे हर तरह के जो शास्त्र हैं, उनको आप किसी भी ढंग से शामिल करके अपने बच्चों को पढ़ाएं। एक बात मुझे नरेन्द्र ठाकुर जी की

बहुत अच्छी लगी कि अगर नशे को मिटाना है तो हमें अपने बच्चों का ध्यान बांटना है। उनको हमें दूसरे पथ पर ले कर जाना है। अगर हम उन्हें गीता के पथ पर ले कर जाते हैं तो जीवन की सच्चाई उनको भी पता लगेगी। आपने मुझे समय दिया, मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं। तुम अपने आज को भगवान को समर्पित करो, यही सबसे उत्तम सार है। उपाध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

03.03.2022/1530/केएस/एएस/3

उपाध्यक्षः मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा है। बस इस तरह की कल्पना के साथ अब मैं माननीय सदस्य श्री हीरा लाल जी को आमंत्रित करता हूं । माननीय सदस्य, कृपया समय का ध्यान रखें।

श्री हीरा लाल (करसोग)ः माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य श्रीमन् जीत राम जी ने संकल्प लाया है कि श्रीमद् भगवत गीता को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने बारे यह सदन विचार करें। आपने मुझे समय दिया, आपका धन्यवाद। वास्तव में श्रीमद् भगवत गीता एक अथाह ज्ञान है और केवल एक दो शब्दों में या 5-10 मिनटों में इसका व्याख्यान करना असम्भव है। आज का विषय यह है कि यह स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल हो। मुझे बहुत बढ़िया लगा जो मुकेश अग्निहोत्री जी ने कहा कि सभी को गीता पढ़नी चाहिए।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी---

03-03-2022/1535/av/dc/1

श्री हीरा लाल--------- जारी

यहां पर माननीय सदस्य श्री मुकेश अग्निहोत्री जी ने अपनी बात में कहा कि सबको गीता पढ़नी चाहिए और उसे कंठस्थ करके अपने जीवन में अपनाने की कोशिश करनी चाहिए। हमारा वर्तमान समाज किस दिशा की ओर जा रहा है, हम अपने बच्चों को एक

सही दिशा कैसे दे सकते हैं; माननीय सदस्य श्री जीत राम कटवाल ने इस संकल्प को उसी दृष्टि से लाया है। यह केवल हिन्दुस्तान का ग्रंथ नहीं है, भगवान श्री कृष्ण ने भगवद् गीता के माध्यम से केवल हिन्दुस्तान को ही ज्ञान नहीं दिया बल्कि यह ज्ञान समग्र विश्व के प्राणियों के लिए दिया गया है। आज भी हम यह सोचते हैं कि पूरे विश्व के प्राणियों के लिए हमारे मन में अच्छी भावनाएं हों। हम सकारात्मक रास्ते पर चलें; उसके लिए गीता का ज्ञान आवश्यक है। अगर हम अपनी पाठशालाओं में बच्चों को इस देश के महापुरुषों के जीवन चरित्र के बारे में पढ़ायें तो उससे उनके मन में भी उसी प्रकार की भावना उत्पन्न होती है। बच्चे भोले होते हैं, अगर उनको इस प्रकार का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाए तो बच्चे उस दृष्टिकोण से आगे बढ़ते हैं। हमारी भगवद् गीता में न केवल ज्ञान की बातें हैं बल्कि इसमें विज्ञान भी समाहित है। इसको पढ़ने से कई ऐसी टैक्निकल बातें सामने आती हैं जो विज्ञान को भी दर्शाती हैं। द्रोपदी के स्वयंवर के दौरान वहां एक कंडिशन रखी गई थी कि मछली की आंख पर तीर लगना चाहिए और नीचे तेल का कड़ाह था। वहां पर बड़े-बड़े योद्धा बैठे थे। तेल के कड़ाह में देखकर ऊपर घूमती हुई मछली की आंख भेदना आज की तारीख में तो असम्भव है। लेकिन पांडव पुत्र अर्जुन को आध्यात्मिक ज्ञान था और उसी ज्ञान के आधार पर अर्जुन ने अपने मस्तिष्क को कॉंस्टेट करके मछली की आंख को भेदा था। इस प्रकार से इसमें बहुत सारे उदाहरण मिलते हैं। इसमें युधिष्ठिर का उदाहरण भी दिया गया है कि जब बाल्यावस्था में उनकी पढ़ाई करवाई जा रही थी कि कभी झूठ मत बोलो। काम,क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि ये सब आपके शत्रु हैं और इनको अपने जीवन से निकाल देना चाहिए। सारे बच्चों ने पाठ याद करके हाथ खड़ा कर दिया कि पाठ याद हो गया। लेकिन युधिष्ठिर ने कहा कि मुझे

03-03-2022/1535/av/dc/2

पाठ याद नहीं है, वह कई दिनों तक डंडे खाते रहें। कई दिन और महीनें बीत गये फिर अंत मैं उन्होंने कहा कि काम,क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को मुझे अपने जीवन से हमेशा के लिए निकालना है और मुझे एक सकारात्मक जीवन जीना है। उन्होंने उस पाठ को अक्षरशः

याद नहीं किया बल्कि उसे अपने जीवन में अपनाया। इसीलिए युधिष्ठिर 'धर्मराज' भी कहलाए। जब कुरुक्षेत्र के युद्ध में अश्वथामा की मृत्यु पर झूठ बोलने के बारे में सोचा गया तो भगवान कृष्ण ने कहा कि यह झूठ अगर धर्मराज युधिष्ठिर बोलेंगे; कौरव तभी मानेंगे। इस प्रकार की बातों से स्पष्ट होता है कि गीता का ज्ञान केवल पढ़ने मात्र के लिए ही नहीं है बल्कि इसको हमें अपने जीवन में अपनाना चाहिए। हमारे पुराणों में केवल गीता ही नहीं बल्कि महाभारत, रामायण, उपनिषद्, वेद इत्यादि बहुत सारे ऐसे ग्रंथ हैं जिनमें से सभी महापुरुषों की जीवन गाथा निकालकर इनको पाठ्यक्रम में इंट्रोड्यूस करना चाहिए। वर्तमान जीवन वैज्ञानिक, आधुनिक और भौतिकता का जीवन है। यह बात सही है कि प्रत्येक मनुष्य के पास रोटी, कपड़ा और मकान होना चाहिए। मगर आज के समय में रोटी, कपड़ा और मकान के बाद किस प्रकार की रिक्वायरमैंट होती हैं। जीवन में शांति के लिए गीता के ज्ञान को पाठ्यक्रम में जोड़ना आवश्यक है। इसमें अर्जुन को बोला गया है कि आप एक प्रकृति नहीं बल्कि एक आत्मा हो। मैं यहां भूतकाल या भविष्यकाल की बात नहीं कर रहा हूं बल्कि वर्तमान समय की बात कर रहा हूं। वर्तमान समय में इस सृष्टि में केवल दो पावर्ज ऐसी हैं जो अविनाशी हैं। आप लोग जब इस पर चिंतन करेंगे तो पाएंगे कि संसार में केवल दो चीजें अविनाशी हैं। इसमें प्रकृति के तहत पृथ्वी, जल, वायु, आकाश तथा अग्नि है और प्रकृति की तीन रचनाएं हैं जिसमें वनस्पति जगत, जीव-जंतु जगत व मनुष्य जगत आते हैं।

टी सी द्वारा जारी

03/03/2022/1540/टी0सी0वी0/डी0सी0/1

श्री हीरा लाल ... जारी

ये मेरा अपना अनुभव है। मैं भविष्य या भूतकाल की बात नहीं कर रहा हूं, मैं वर्तमान की बात कर रहा हूं। प्रकृति और प्राण दो ही पावर्ज विद्यमान है जो इर्मोटल है। प्रकृति को हम देखते हैं लेकिन मेरा जन्म हुआ प्रकृति उससे पहले विद्यमान थी। मेरे पिता और दादा का जन्म हुआ प्रकृति उससे भी पहले थी। प्रकृति अमर है और यह अविनाशी है। वनस्पति

जगत, जीव-जन्तु जगत और मनुष्य जगत प्रकृति की 3 रचनाएं हैं। ये तीनों रचनाएं अस्थायी हैं। It is not forever. परंतु प्रकृति अमर है। हम कहते हैं कि प्राण भी अविनाशी है लेकिन वर्तमान में प्राण कहां विद्यमान है? हम देव आत्मा, मनुष्य आत्मा या पुण्य आत्मा की बात करते है? लेकिन आत्मा कहां है? आत्मा प्रेजेंट हैं और यह भृकुटि में विद्यमान है। अर्जुन को कहा गया कि जिस प्रकार से प्रकृति अविनाशी है, उसी प्रकार से आत्म भी अविनाशी है। हम मैं और मेरा दो शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसा मेरा हाथ, मेरा कान, मेरा नाक इत्यादि ये मेरे हैं। लेकिन मैं शब्द का प्रयोग आत्मा के लिए होता है और आत्मा इस शरीर के अंदर विद्यमान है। तीन लोक हैं और यह साकार सृष्टि है। इसमें हम कर्म करते और कर्म का फल मिलता है। हम कहते है फरिश्ता लेकिन फरिशता कौन है? जब आत्मा आत्मस्वरूप हो जाए तो वह फरिश्ता हो जाता है। उसको विश्व से कोई लेना-देना नहीं है। इसी तरह से परमधाम है, जहां पर परमात्मा शिव ज्योति स्वरूप में रहते हैं। जब हम अपना धर्म भूल जाते हैं, अपनी आत्म का ज्ञान भूल जाते हैं तो फिर से याद दिलाने के लिए परमात्मा इस सृष्टि पर आते हैं। वर्तमान समय में इस सृष्टि में हमें आत्मा का ज्ञान मिल रहा है।

उपाध्यक्ष : माननीय सदस्य, कनक्लूड करें। काफी लम्बी चर्चा हो चुकी है।

श्री हीरा लाला : उपाध्यक्ष महोदय, मैं दो मिनट में कनक्लूड करता हूं। गीता के माध्यम से जो ज्ञान दिया गया है, वह केवल अर्जुन को दिया गया है। अर्जुन को केवल प्रकृति और प्राण के विषय में दो बातें बताई गई है। आत्म ज्योति स्वरूप बिन्दु है जो भृकुटि में विद्यमान है और अजर, अमर व अविनाशी है।

एन0एस0 द्वारा जारी ... ।

03-03-2022/1545/NS/HK/1

श्री हीरा लाल..... जारी

आत्मा शांत स्वरूप है। राजयोग एक ज्ञान है और किसका ज्ञान है? यह ध्यान का ज्ञान है। हम बोलते हैं कि ज्ञानी ध्यानी है। ज्ञान तो ठीक है लेकिन ध्यान क्या चीज़ है? उस ध्यान का ज्ञान जिसको हम राजयोग बोलते हैं उसके माध्यम से आत्मा जोकि भृकुटि में विद्यमान है।

उपाध्यक्ष : हीरा लाल जी आप बैठ जाइए।

श्री हीरा लाल : आत्मा की तीन पावर्ज़ मन, बुद्धि और मेमोरी हैं और ये बहुत महत्वपूर्ण हैं। मन + बुद्धि = आत्मस्मृति। Memory is not part of the body, memory is part of the soul. इसलिए आत्मा शरीर में विद्यमान है। मन एक हार्ट है, heart is part of the body but 'मन' is part of the soul. मन आत्मा की एक संकल्प शक्ति है और बुद्धि उसकी निर्णायक शक्ति है। हमारा शरीर प्रकृति की रचना है परन्तु मैं आत्मा इसमें विद्यमान हूं। मैं, आत्मा और प्रकृति में क्या अंतर है? इन पांच अंतरों का हम सबने चिंतन करना है। आत्मा देखती, बोलती, सुनती, चिंतन करती है और अनुभव करती है। आत्मा देखती है जबकि प्रकृति नहीं देखती है। आत्मा सुनती है और प्रकृति सुनती नहीं है। आत्मा बोलती है जबकि प्रकृति बोलती नहीं है। आत्मा चिंतना करती है जबकि प्रकृति चिंतन नहीं करती है। आत्मा अनुभव करती है जबकि प्रकृति अनुभव नहीं करती है। ...व्यवधान... इसको अनुभव करने की जरूरत है। पढ़ तो सारा विश्व रहा है। आत्मा अविनाशी है। हम इसको कैसे अनुभव करें? जैसे हम देखें कि इसमें एक चिंतन करने की जरूरत है। जैसे एक डैड बॉडी है तो उसमें आंख, कान, नाक, हाथ और पैर है लेकिन वह एक शव है और उसमें आत्मा नहीं है। डैड बॉडी से आंख देखती नहीं है और न ही सुन सकती है। इसलिए संजीव केवल आत्मा ही है। देखने, बोलने, सुनने की पॉवर केवल आत्मा में ही है चाहे वह शरीर के अंदर है या शरीर के बाहर है। यह पॉवर केवल आत्मा है। जो हम मैं शब्द का प्रयोग करते हैं 'मैं आत्मा' यह मेरा शरीर है।। am a soul, I am a point of light. मैं ज्योति स्वर बिन्दु हूं जो भृकुटि में विद्यमान है। यह अखंड ज्योति है जो भृकुटि में विद्यमान है। संस्कृत भाषा में एक श्लोक है:

कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे

03-03-2022/1545/NS/HK/2

जब-जब धर्म का विनाश होता है तब-तब आत्मा का अवतरण कलियुग सृष्टि में होता है जब आत्मा का ज्ञान नहीं होता है तभी तो आत्मा का ज्ञान देने के परमात्मा आते हैं। मैं कहना चाहूंगा कि केवल गीता का यह पाठ्यक्रम है। अगर विश्व को इस अटोमिक पॉवर से बचाना है तो इसके लिए आत्मिक पॉवर चाहिए। आत्मिक पॉवर ही विश्व में शांति दे सकती है। इसलिए पाठ्यक्रम में इसका जुड़ना बहुत आवश्यक है। उपाध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया आपका धन्यवाद।

उपाध्यक्ष : लोग कहते हैं कि संसार दुःखों का घर है लेकिन जो व्यक्ति मोह में है वहीं दुःखी है। यह सार जो माननीय हीरा लाल जी ने कहा है तो मुझे लगता है कि हम सबकी आत्माओं का जागरण हुआ है। अब चर्चा में माननीय सदस्या, श्रीमती आशा कुमारी जी भाग लेंगी।

श्री आशा कुमारी जी ....श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

03.03.2022/1550/RKS/AG-1

श्रीमती आशा कुमारी : उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य श्री जीत राम कटवाल और श्री नरेन्द्र ठाकुर जी ने जो 'श्रीमद् भगवत् गीता को स्कूली पाठयक्रम में शामिल करने' का संकल्प प्रस्तुत किया है, इस पर आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका धन्यवाद। माननीय सदस्य, श्री हीरा लाल जी ने आत्मीय ज्ञान पर काफी चर्चा की लेकिन मैं इस पर ज्यादा नहीं बोलना चाहूंगी। मैं सिर्फ इस संकल्प पर ही बोलना चाहूंगी। द्वापर युग में महाभारत के युद्ध के बीच श्री कृष्ण ने गीता के 700 श्लोक अर्जुन को सुनाए। यह कहा जाता है कि श्री कृष्ण ने अपने कण्ठ से अर्जुन को यह गीता ज्ञान सुनाया था। इस भगवत् गीता को लिखने वाला कोई नहीं है। यह भगवत् गीता 18 अध्यायों में पढ़ी गई है। यह ज्ञान आजतक चला आ रहा है। उसके बाद महाभारत का युद्ध प्रारंभ हुआ। श्रीमद् भगवत् गीता को लेकर दोनों माननीय सदस्यों की भावना बिल्कुल सही है। माननीय नेता प्रतिपक्ष ने जो कहा मैं उसे भी दोहराना नहीं चाहती। जिस श्लोक को आप पहले सुना चुके हैं वह इस गीता का सार है। मैं इस श्लोक को भी दोहराना नहीं चाहती। श्रीमद् भगवत गीता संस्कृत

में लिखी गई है। इसके बारे में जो कुछ कहा जाता है वह इसका सार या इंटरप्रिटेशन है। बेसिकली श्रीमद् भगवत गीता का सार 18 अध्यायों में बंटा हुआ है। मैं यह किसी चीज़ से पढ़कर नहीं बोल रही हूं और न ही ऐसा मेरा इरादा है। हर घर में गीता पढ़ी जाती है। हर घर में रामचरितमानस पढ़ी जाती है। हिमाचलवासी और चम्बावासी शिवपुराण और शिव स्तुति बचपन से सुनते आ रहे हैं। मां भगवती का श्लोक यानी दुर्गा कवच पढ़े बिना हमारी पूजा पूरी नहीं हो पाती। जितने भी ग्रंथ लिखे गए हैं, चाहे रामचरितमानस, गुरु ग्रंथ साहिब, कुरान या बाइबल हो, इन सभी धार्मिक ग्रंथों में कुछ-न-कुछ कॉमन है। लेकिन हिन्दु धर्म में सबसे प्रथम स्थान श्रीमद् भगवत गीता को ही दिया जाता है। जब हम कोर्ट में शपथ लेते हैं तो वहां पर भी 'मैं गीता की कसम खाता हूं' कहते हैं। मेरा कहने का अर्थ यह है कि आप श्रीमद् भगवत् गीता के सात सौ श्लोकों को पाठ्यक्रम में संभवतः शामिल नहीं कर

03.03.2022/1550/RKS/AG-2

सकते। श्रीमद् भगवत् गीता 18 केन्द्र बिन्दुओं पर आधारित है। एक बिन्दु यहां पर भी लागू होता है और वह है 'क्रोध'। क्रोध से भ्रम पैदा होता है, भ्रम से आदमी भटक जाता है और गलत निर्णय लेने लगता है। गीता में यह लिखा है कि कर्म किये जा, फल की इच्छा मत कर ऐ इंसान, जैसे कर्म करेगा वैसे फल देगा भगवान, यह है गीता का ज्ञान। श्री कृष्ण ही आत्मा है। अगर गीता का सार हम पाठ्यक्रमों में लागू करने का प्रयास करे तो इसमें कोई गलत नहीं होगा। मैं लॉअर के.जी. से लेकर ग्यारहवीं कक्षा तक कॉन्वेंट स्कूल से पढ़ी हुई हूं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कॉन्वेंट स्कूल में आठवीं कक्षा से लेकर ग्यारहवीं कक्षा तक पाठ्यक्रम में रामचरितमानस पढ़ाई जाती थी। अब मुझे स्कूल छोड़े हुए 40-45 वर्ष हो गए हैं। मुझे रामचरितमानस कण्ठस्थ थी। नेता प्रतिपक्ष जी ने ठीक कहा कि दूसरों को ज्ञान देने से पहले हमें स्वयं श्रीमद् भगवत् गीता को कण्ठस्थ करना चाहिए। आत्मा न मरती है, न पैदा होती है। आत्मा अजर-अमर है। गीता में आत्मा और कर्म का रोल ही बताया गया है। मनुष्य अपना चोला बदलता रहता है परंतु आत्मा अमर है। हमें स्कूल

पाठ्यक्रम में भगवत् गीता के सात सौ श्लोक शामिल करने से पहले संस्कृत की शिक्षा देनी पड़ेगी।

श्री बी.एस.द्वारा... जारी

03.03.2022/1555/बी.एस./वाई0के0/-1

श्रीमती आशा कुमारी जारी...

700 संस्कृति के श्लोक हैं उसके लिए आपको संस्कृत इन्ट्रोडूस करनी पड़ेगी। जब संस्कृत पढ़ने लायक होंगे, उसके बाद ही गीता पढ़ने के लायक होंगे। श्रीमद् भगवत् गीता का जो सार है, उसके जो 18 मुख्य बिंदु हैं, उन्हें लाया जा सकता है, वे तो किसी भी धार्मिक ग्रंथ के लाए जा सकते हैं। वेद हैं, उपनिषद हैं, क्या हम शिव जी का नवाला नहीं करते? करते हैं। क्या हम महामृत्युंजय मंत्र को नहीं बोलते, क्या हम देवी के श्लोक नहीं बोलते, हम में से बहुतों ने संस्कृत नहीं पढ़ी होगी, मगर या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै-नमस्तस्यै- नमस्तस्यै नमों नमः। सबको पता है, ये सब चीजें बचपन से कंठस्थ हो जाती हैं। जो भी हिमाचल प्रदेश के हिन्दू हैं, आदरणीय मुकेश जी ने ठीक कहा कि 99 प्रतिशत लोग हिन्दू हैं। भगवत् गीता हमारे जीवन का हिस्सा है। It is part of us. बच्चों को इसी का ही सार क्यों? जो भी अच्छे ग्रंथ हैं, वह चाहे शिव पुराण है, चाहे दुर्गा सप्तशती पाठ है, उसमें अच्छा लिखा हो, उपनिषद और वेद हैं। क्या हमारे वेदों में कोई कमी है, क्या हमारे पुराणों में ज्ञान नहीं है, क्या शिव पुराण में कमी है, क्या लिंग पुराण में कमी है? गरुड पुराण भी हम सब सुनते ही हैं, यह बात अलग है कि वह एक अफसोस जनक समय होता है। मगर ये बात पक्की है कि गीता का ज्ञान we should practice more than we preach. क्रोध, लोभ, मोह, काम, अहंकार और जो इन्होंने एक शब्द में कहा कि "मैं", सबसे पहले तो इस विधान सभा में कटवाल साहब, यह लाइए कि इस विधान सभा में जो 68 लोग बैठे हैं, वे इस "मैं" को छोड़ दें, केवल हम होना चाहिए और मैं सिर्फ आत्मा और आत्मा सिर्फ कृष्ण जी। आदरणीय हीरा लाला जी की बातों से आज मैं बहुत प्रभावित हुई हूं। आज हमारी आत्मा को इन्होंने जगाया है और जो ज्ञान इन्होंने दिया है, उसे हल्के में न लें। उपाध्यक्ष महोदय, यह जो इश्यू है इसे ही हल्के में नहीं लेना चाहिए। श्रीमद् भगवत् का

नाम लेना एक गहराई की बात करना है। मैं मंत्री जी से जरूर निवेदन करना चाहती हूं कि आप इस बात पर जरूर विचार करें। मैं फिर कह रही हूं कि श्रीमद् भगवत् गीता के 700 श्लोक पड़ना आसान काम नहीं है। मैं आदरणीय कटवाल साहब से कोई तर्क-वितर्क नहीं करना चाह रही हूं। यह मेरा वर्जन है और मैं अपनी बात रखना चाह रही हूं। यदि सभी को संस्कृत सिखाई जा रही है तो श्रीमद् भगवत् गीता को पढ़ाने की बात करें। वरना जो इसका सार है,

03.03.2022/1555/बी.एस./वाई0के0/-2

जो 18 इसके मुख्य बिंदु हैं, उनके ऊपर किसी अच्छे से स्कॉलर की इंटरप्रिटेशन को लाया जाए। हमारा इसमें कोई विरोध नहीं है। हम सभी श्रीमद् भगवत् गीता को पढ़ते हैं। जैसा मुकेश जी ने कहा कि मैं तो रोज ही मंदिर में होती हूं। आप भी जानते हैं कि आपके चुनाव क्षेत्रों के मंदिरों में भी जाती रहती हूं। हम सब हिन्दू हैं और इसमें किसी पार्टी की बात नहीं है। हम चमयाल हैं तो शिव भगवान का नवाला करेंगे, हम चमयाल हैं, तो देवी मां की भी पूजा करेंगे, क्योंकि वह हमारी कुल देवी है। वैसे ही हम भगवान कृष्ण को मानते हैं और रामचरितमानस को भी मानते हैं। रामायाण को कम पढ़ा जाता है, इसका कारण यह भी है कि वह संस्कृत में है और ब्रज भाषा में है इसलिए रामायण को कम पढ़ा जाता है परंतु ज्ञान में कोई कमी नहीं है। हमारा हर ग्रंथ चाहे वह बुद्धिस्ट का हो, चाहे मुस्लिम का हो, चाहे वह किसी का भी हो।

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

03-03-2022/1600/वाई.के.-एन.जी. /1

श्रीमती आशा कुमारी ..... जारी

सिखों का हो, बुद्धिस्ट का हो, मुस्लिम का हो या अन्य किसी धर्म का हो और किसी भी धर्म ने किसी से भी भेदभाव या गलत करने की सलाह नहीं दी है। यह ठीक है कि यदि आप

पाठ्यक्रम में गीता का सार डालेंगे और जैसा माननीय नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि हम तो इसका स्वागत ही करेंगे क्योंकि यह एक अच्छी बात है। इन्होंने यह भी ठीक कहा कि श्रीमद् भागवत् का सार किसी धर्म से सम्बंध नहीं रखता है और यह जिंदगी की सच्चाई है। उपाध्यक्ष महोदय, अंत में मैं कहना चाहती हूं कि हम इस बात को हमेशा याद रखें कि "श्रीकृष्ण ही आत्मा है और आत्मा अमर है।" आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

03-03-2022/1600/वाई.के.-एन.जी. /2

उपाध्यक्ष : अब अंत में माननीय सदस्य श्री विशाल नैहरिया जी को मैं इस चर्चा में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता हूं।

श्री विशाल नैहरिया (धर्मशाला) : उपाध्यक्ष महोदय, इस माननीय सदन में माननीय सदस्य श्री जीत राम कटवाल और श्री नरेन्द्र ठाकुर जी संकल्प लाए हैं कि "श्रीमद् भगवत् गीता को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने बारे यह सदन विचार करे" और इसमें मैं भी अपने आप को शामिल करता हूं। इस माननीय सदन के बहुत सारे माननीय सदस्यों ने इस विषय पर अपना महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है। मुझे इस बात की खुशी है कि नेता प्रतिपक्ष श्री मुकेश अग्निहोत्री जी और माता तुल्य माननीय श्रीमती आशा कुमारी जी ने भी इसका समर्थन किया है। श्रीमद् भगवत् गीता एक ज्ञान का सागर है और जैसा मुझ से पूर्व के माननीय सदस्यों ने भी बताया है। हिन्दुस्तान ही नहीं बल्की विश्व के अनेक ऐसे महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय व शिक्षण संस्थान हैं जहां पर इसे कम्पलसरी या इलैक्टिव सब्जैक्ट के रूप में पढ़ाया जा रहा है। जहां तक मेरे ध्यान में है कि एक बार संसद में भी इसी विषय पर चर्चा हुई थी और उस समय भी माननीय सदन के पक्ष व विपक्ष के नेताओं ने इसका समर्थन किया था। उस समय यह विषय निकल कर आया था कि इसे कम्पलसरी सब्जैक्ट के रूप में अपनाया जाए। श्रीमद् भगवत् गीता ने हमें कर्मा के बारे में, spiritual thoughts के बारे में और universal moral values के बारे में बताया है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें हमें मैनेजमेंट के बारे में बहुत सारी बातें सीखने को मिलती हैं। हमारे भारत देश में एक BITS Pilani University of Engineering है और वहां पर भी इसे इलैक्टिव सब्जैक्ट के रूप में

पढ़ाया जा रहा है। New Jersey, USA में एक बहुत बड़ी यूनिवर्सिटी है जोकि एक Catholic University है और वहां पर भी श्रीमद् भगवत् गीता को कम्पलसरी सब्जैक्ट के रूप में पढ़ाया जा रहा है। हम लोग तो हिमाचलवासी हैं और देव तुल्य भूमि से आते हैं, हिमाचल प्रदेश को तो देवभूमि भी कहा जाता है, अगर हिमाचल जैसे प्रदेश में श्रीमद् भगवत् गीता को

03-03-2022/1600/वाई.के.-एन.जी. /3

स्कूल लेवल पर कम्पलसरी किया जाता है तो मुझे लगता है कि हमारी आने वाली जनरेशन निश्चित तौर पर हमारी संस्कृति व सभ्यता के बारे में अच्छे से जान पाएगी। आज का समय टेक्नोलॉजी का है और आज का हमारा युवा वर्ग न्यू टेक्नोलॉजी को ऑप्ट करते हुए इस पुरानी संस्कृति-सभ्यता को भूल रहा है और पश्चिमी सभ्यता हमारे बीच में आ चुकी है। ऐसे विषय यदि स्कूलों के पाठ्यक्रमों में पढ़ाए जाएंगे तो निश्चित तौर पर इससे लाभ होगा। हमारा युवा इंटलैक्ट है और हमेशा कुछ सीखने की लालसा रखता है तथा मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे इस विषय को खुशी-खुशी स्वीकार करेंगे। हमें भी खुशी होगी कि आने वाली जनरेशन इन महत्वपूर्ण चीजों के बारे में स्वयं भी जानेगी और हमारे समाज को भी इसके बारे में अच्छी जानकारी देगी। एक अच्छा विषय और अच्छा संकल्प इस माननीय सदन में लाया गया है और मैं इसका समर्थन करता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बालने का समय दिया आपका धन्यवाद।

समाप्त/-

03-03-2022/1600/वाई.के.-एन.जी. /4

उपाध्यक्ष : अब मैं इस चर्चा का उत्तर देने के लिए माननीय शिक्षा मंत्री जी को अमंत्रित करता हूं।

शिक्षा मंत्री : उपाध्यक्ष महोदय, आज इस माननीय सदन में नियम-130 के अंतर्गत एक प्रस्ताव चर्चा में लाया गया है और इसमें कहा गया है कि "श्रीमद् भगवत् गीता को स्कूली

पाठ्यक्रम में शामिल करने बारे यह सदन विचार करे।" इस प्रस्ताव को माननीय सदस्य श्री जीत राम कटवाल और श्री नरेन्द्र ठाकुर जी ने रखा है। उपाध्यक्ष महोदय, यह बहुत महत्वपूर्ण विषय है और देखिए

श्री जे.एस. द्वारा जारी.....

03.03.2022/1605/JS/AS/1

शिक्षा मंत्रीः----जारी------

श्रीमद् भगवत गीता का नाम चर्चा में आया। चर्चा में आने के उपरान्त इस पूरे माननीय सदन में शांति व सौहार्द का वातावरण बन गया। यह उस नाम की ताकत है। इसी के साथ जिन्होंने इस चर्चा में भाग लिया है, विपक्ष के नेता, श्री मुकेश अग्निहोत्री जी ने अपनी बात में कहा कि जब हम इस विषय पर चर्चा करें तो उसकी गहराई में जाने की आवश्यकता है। आगे बढ़कर आपने यह भी कहा कि सारे सदन को चाहिए गीता को पढ़ें और कंठस्थ भी करें। यह कोई राजनीतिक पार्टियों का भेदभाव नहीं है, गीता हम सबकी है। श्रीमान हीरा लाल जी ने जहां पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए इस विषय को रखा, वहीं पर आपने बहुत गहराई से अपने आध्यात्मिक विचारों को रखा। श्रीमती आशा कुमारी जी ने यहां पर एक बहुत अच्छा सुझाव दिया। आपने कहा कि यदि हमें गीता को समझना है और गीता में 18 अध्यायों में 700 श्लोक हैं, आपने कहा कि वे सभी संस्कृत में हैं इसलिए संस्कृत का ज्ञान होना भी आवश्यक है। अगर संस्कृत का ज्ञान होगा तो हम इसकी और अच्छे ढंग से व्याख्या कर पाएंगे। उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस माननीय सदन में जानकारी देना चाहूंगा कि हमने विचार किया है कि स्कूलों में संस्कृत को तीसरी कक्षा से प्रारम्भ करेंगे ताकि बच्चों को आगे तक यह समझ में आए। आपने क्रोध, मोह और लोभ ये सारे विषय यहां पर रखें। यह तो वास्तविकता है। लेकिन हम राजनीतिक क्षेत्र में भी काम करते हैं और हमें कई बार यह लगता है कि हम जिस प्रकार से विभिन्न जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं उसके बावजूद बहुत बार यह लगता है कि हमसे गलती हो गई, जो हमें करनी नहीं चाहिए थी,

जो हमें कहना नहीं चाहिए था लेकिन वह हो गया और यह जीवन में होता भी है। इन सारी-की-सारी बातों का संकेत आवश्यक भी है। यहां पर श्री विशाल नैहरिया जी ने भी बहुत अच्छे विचार रखे। आपने कहा कि बहुत से विदेशी विश्वविद्यालयों में भी गीता के ऊपर अध्ययन चल रहा है। उपाध्यक्ष महोदय, गीता के बारे में महात्मा गांधी जी ने कहा था कि मैं सदैव गीता अपनी ज़ेब में रखता हूं। जब कभी मेरे मन में संशय होता है तो मैं गीता को खोल कर

03.03.2022/1605/JS/AS/2

पढ़ता हूं और अनुभव करता हूं ।श्रीकृष्ण स्वयं मेरा मार्गदर्शन करने आते हैं। उसी के साथ गांधी जी ने यह भी कहा है कि मनुष्य का अपना कुछ भी नहीं है, वह समाज का अभिन्न अंग है तथा समाज के लिए अपने आपको न्यौछावर करना मनुष्य जन्म का श्रेष्ठ कर्म है। मुझे लगता है कि हम जो लोग राजनीतिक क्षेत्र में काम करते हैं तो कहीं-न-कहीं मन में सभी के यह भाव रहता है कि हम सेवा करने के लिए आए हैं तो निश्चित रूप से उस दिशा में हम सभी जन-प्रतिनिधि रात-दिन सेवा करते भी हैं। उपाध्यक्ष महोदय, देश के स्वतंत्रता आंदोलन में लोकमान्य तिलक जी ने मांडले जेल में रह करके गीता रहस्य पर लिखा था। यह ग्रंथ मनुष्य के कर्त्तव्य बोध के साथ अधिकार प्राप्ति पर भी बल देता है।

श्री एस.एस. द्वारा जारी....

03.03.2022/1610/SS-AG/1

शिक्षा मंत्री क्रमागत :

लोकमान्य तिलक जी ने स्पष्ट किया कि अपने अधिकारों की क्षमता खोकर भारत एक हजार वर्षों के लिए गुलाम हुआ जबकि गीता गांडीव उठाने के लिए प्रेरित करती है।

उपाध्यक्ष महोदय, गीता दुनिया की सबसे ज्यादा भाषाओं में लिखित और दुनिया के सबसे ज्यादा भूभाग पर पढ़ा जाने वाला ग्रंथ है। गीता पर प्राचीन काल से आदि शंकराचार्य जी, श्री रामानुज जी, श्रीधर जी आदि ने लिखा और उसके पश्चात् आधुनिक काल में मैंने कहा कि श्री अरविंदो जी, महात्मा गांधी जी, डॉ0 राधाकृष्ण जी ने भी गीता के ऊपर अपने विचार लिखे हैं। गीता के संबंध में हम कह सकते हैं कि यह केवल कोई धार्मिक ग्रंथ नहीं है, गीता शाश्वत है, सत्य है; यह पूरे विश्व के लिए है। शायद गीता का संदेश ही एकमात्र ऐसा संदेश है जिसमें वेदों में वसुधैव कुटुम्बकम् के बारे में कहा गया है। यह पूरी वसुधा एक परिवार है और इस धरती मां पर रहने वाले हम सब लोग एक परिवार के सदस्य हैं। यदि ऐसा कोई ज्ञान दे सकता है तो वह श्रीमद् भगवत् गीता दे सकती है। अगर वर्तमान कालखंड में भी देखें तो धर्म, नैतिकता, मानवता, अध्यात्म-दर्शन और मनोविज्ञान जैसे जो विषय हैं उन पर जो आधुनिक शोध चल रहा है उसका लोकप्रिय विषय यही माना जा रहा है। आज का जो जीवन है वह तनाव और अवसादग्रस्त है। उसमें अगर मानव का उद्धार करने की ताकत है तो श्रीमद् भगवत् गीता में कही जाती है।

उपाध्यक्ष महोदय, यहां पर माननीय सदस्य श्री विशाल नैहरिया जी ने जो कहा, उसी के अनुसार देखिए कि आज भारत तथा दुनिया के प्रतिष्ठित व्यावसायिक संस्थानों में गीता को पढ़ाया जा रहा है। Indian Institute of Technology; Indian Institute of Management, BITS Pilani; Kurukshetra University; Oxford University, England; Howard University, United States of America; Seton Hall University, New Jersey, U.S.A. में और सब जगह पर इस विषय के बारे में पढ़ाया जा रहा है। जितने ये विश्वविद्यालय और मैनेजमैंट संस्थान हैं इनमें इस पर अध्ययन व शोध हुआ है। उसने प्रमाणित किया है कि गीता को पाठ्यक्रम में शामिल

03.03.2022/1610/SS-AG/2

कर बच्चों के व्यक्तित्व का विकास होता है और व्यावसायिक योग्यता में प्रवीणता व कुशलता प्राप्त होती है, ये कहा गया है।

उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्यों ने इसके संबंध में अपने विचार रखे हैं और उनके जो सुझाव आए हैं उसके अनुसार हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा में क्या लागू किया जाए यह राज्यों का विषय है। लोकसभा में सांसद गोपाल शैट्टी ने एक प्रश्न किया था जिसमें उन्होंने

श्रीमद् भगवत् गीता पढ़ाने के प्रावधान के बारे में पूछा था। लोकसभा में शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने ये कहा है कि शिक्षा प्रदान करने का विषय राज्य सरकारों का है। यदि राज्य सरकार चाहें तो इसमें प्रावधान कर सकती हैं। वर्तमान में सी0बी0एस0ई0 के अंतर्गत कई कक्षाओं में श्रीमद् भगवत् गीता पढ़ाई जा रही है। एन0सी0ई0आर0टी0 की तरफ से यह सूचित किया गया है कि श्रीमद् भगवत् गीता से संबंधित सामग्री पहले से ही कक्षा 11वीं और 12वीं की संस्कृत की पाठ्य पुस्तकों में शामिल है

जारी श्रीमती के0एस0

03.03.2022/1615/केएस/एएस/1

शिक्षा मंत्री जारी---

और सोशल साइंस के तहत क्लास-6 के एन.सी.ई.आर.टी. की जो हिस्ट्री की किताब है, उसमें भक्ति आंदोलन के सम्बन्ध में व्यापारी, राजा और तीर्थयात्री नामक पाठ में श्रीमद् भगवत गीता का संदर्भ दिया गया है। अभी जो यू.जी.सी. में नैट के जो पेपर हुए हैं उसमें भी भगवद् गीता के कुछ अंशों को शामिल किया गया है। वर्तमान में हिमाचल प्रदेश में 12वीं क्लास में एक अध्याय अभी लगा है। उपाध्यक्ष महोदय, इस माननीय सदन में जो विचार किया है, उसमें हम निश्चित रूप से विचार करेंगे कि कम से कम एक तो जैसे मैंने कहा कि हम तीसरी कक्षा से संस्कृत प्रारम्भ करने वाले हैं और दूसरा 9वीं, 10 वीं, 11वीं और 12वीं में हम हिंदी और संस्कृत में गीता संदेश या गीता सार के तौर पर कुछ प्रारम्भ करेंगे। यह सम्भव नहीं है कि गीता के पूरे 700 श्लोक उसमें शामिल हों लेकिन जैसे बाकी विषय आते हैं, उसके साथ हम इस ज्ञान को भी बांटे। मैं इस माननीय सदन को सूचना देना चाहूंगा कि श्रीमद् भागवत गीता का सम्बन्ध किसी पंथ, किसी सम्प्रदाय व किसी धर्म विशेष से नहीं है। यह शाश्वत है। यह पूरी दुनिया के लिए है। पूरे विश्व में इसका अध्ययन किया जा रहा है और दुनिया के हर पंथ के, सम्प्रदाय के विद्वानों ने, अनेक वैज्ञानिकों ने, दार्शनिकों ने गीता के बारे में लिखा है। हम उदाहरण दे सकते हैं कि हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति मिसाइल मैन डॉ0 ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी ने भी गीता पर बहुत कुछ लिखा है। पंथ व सम्प्रदाय से हटकर गीता का संदेश है। माननीय सदन में जो आज विषय लाया गया है यह बहुत अच्छा और सामयिक विषय है। इस विषय की एक खास बात यह है कि इस माननीय सदन में ऐसे

प्रेम प्यार के भी बहुत से क्षण याद रहने चाहिए। मुझे लगता है कि श्रीमद् भगवत गीता पर जो यहां प्रेम पूर्वक विचार हुआ, इसमें सभी ने एक दूसरे की मदद की। पक्ष और विपक्ष ने, सभी ने एक-दूसरे की बात में ऐड किया जो बहुत अच्छा लगा। कई बार ऐसी अच्छी परम्पराएं प्रारम्भ करने का हमें मौका मिला है। उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से नियम 101 के प्राइवेट मैम्बर डे के इस विषय के प्रस्तावकर्ता श्रीमन् जीत राम कटवाल जी से मैं निवेदन करुंगा कि वे अपना संकल्प वापिस लेने की कृपा करें।

03.03.2022/1615/केएस/एएस/2

उपाध्यक्षः क्या माननीय सदस्य माननीय मंत्री जी के उत्तर को देखते हुए अपना संकल्प वापिस लेने को तैयार हैं?

श्री जीत राम कटवालः उपाध्यक्ष महोदय, इस संकल्प पर डिफरेंट कॉर्नर से डिफरेंट चर्चा हुई इसलिए इस पर एक-दो लाइनें तो मैं ज़रूर कहूंगा। जो संकल्प मैंने प्रस्तुत किया था, सदन में इस पर सकारात्मक रूप से चर्चा हुई और सभी पक्षों से इसको समर्थन मिला। इसको देखते हुए मैं अपने संकल्प को वापस लेता हूं।

उपाध्यक्षः क्या माननीय सदन की अनुमति है कि संकल्प को वापिस लिया जाए?

(संकल्प वापिस हुआ)

श्री मुकेश अग्निहोत्रीः उपाध्यक्ष महोदय, एक परम्परा बन चुकी है कि प्रस्ताव वापिस लेना है या गिराना है लेकिन जरूरी नहीं है, उसको पास भी कर सकते हैं।

उपाध्यक्षः माननीय मंत्री जी का कहना यही है कि हम सभी का भाव एक तरह का है और क्योंकि जिस भाव से माननीय सदस्य इस विषय को लाए हैं, उसको उस रूप में हम लोग स्वीकार करते हैं, यह माननीय मंत्री जी ने कहा है। ...(व्यवधान)... कई प्रस्ताव स्वीकार भी हुए हैं। इसमें भावना है, सम्मान है तो इसको एक तरह से उस फॉर्म में माननीय सदस्य ने वापिस लिया है। माननीय मंत्री जी की भावना को समझते हुए इसको अस्वीकार समझा जाता है।

अब माननीय सदस्य श्री राकेश सिंघा जी अपना संकल्प प्रस्तुत करेंगे।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी....

03-03-2022/1620/av/dc/1

Shri Rakesh Singha (Theog): Mr. Deputy Speaker, Sir, with you permission, I would like to introduce my Resolution, the text of which is as under:
"This House may frame a policy to grant relief amounting to 50% of the loss incurred due to natural calamities on agricultural and horticultural produce and enhance the relief amount to Five Lakhs on the destruction of the house due to fire."

उपाध्यक्ष : संकल्प प्रस्तुत हुआ कि "This House may frame a policy to grant relief amounting to 50% of the loss incurred due to natural calamities on agricultural and horticultural produce and enhance the relief amount to Five Lakhs on the destruction of the house due to fire." इस संकल्प पर दूसरे माननीय सदस्य भी बोल सकते हैं और जल शक्ति मंत्री जी इसका उत्तर देंगे। माननीय सदस्य श्री राकेश सिंघा जी, आप अपने संकल्प पर बोलिए और साथ में समय का भी ध्यान रखें।

श्री राकेश सिंघा : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको आज घंटी बजाने का मौका नहीं दूंगा। अगर हम पिछले 5 वर्षों का आकलन करें तो हिमाचल प्रदेश का कृषक किन्नौर से लेकर कांगड़ा,चम्बा तथा भरमौर के इलाके सहित जिला सिरमौर से जिला ऊना के एरिया तक; हमारे किसानों को प्राकृतिक आपदा से एक बहुत बड़ी पीड़ा हुई है। इसकी वजह से उसके खेत-खलियान को बड़े पैमाने पर नुकसान होता रहा है और मेरी समझ के अनुसार उसका मुख्य कारण यह है कि पूरी दुनिया में ईकोलॉजीकल लैवल पर बड़ी तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। मैं उस तर्क में नहीं जाना चाहूंगा क्योंकि उसके अलग-अलग किस्म के स्कूल ऑफ थोट्स हैं। उस विवाद में इस सदन को भी नहीं पड़ना चाहिए। लेकिन फोकस करना चाहिए कि किसानों को प्राकृतिक आपदा के कारण जो पीड़ा हो रही है उसका कैसे उपचार किया जा सकता है। उपाध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि हमारा शासन एक संविधान के तहत चलता है। It is a social welfare State और हमें इस बात को भूलना

नहीं चाहिए। वह दूसरी बात है कि वर्ष 1991 के बाद वह सोशल वैल्फेयर का कार्य जो राज्यों को करना चाहिए था; आहिस्ता-आहिस्ता धूमिल होता जा रहा है। उस पर ग्रहण लग रहा है क्योंकि अब राज्यों की सारी-की-सारी जिम्मेवारी समाप्ति की ओर जा रही हैं और विकास व सेवाओं का नजरिया निजी हाथों में जा रहा है तथा हम ट्रांजिशनल फेज़ के

03-03-2022/1620/av/dc/2

दौर से गुजर रहे हैं। उसके बावजूद हमारा संविधान अभी भी इसको सोशल वैल्फेयर स्टेट मानता है। इसलिए मै सीधा विश्व पर आना चाहता हूं और मैं तो यहां केवल पिछले पांच वर्षों का पीरियड ले रहा हूं।

टी सी द्वारा जारी

03/03/2022/1625/टी0सी0वी0/डी0सी0/1

श्री राकेश सिंघा ... जारी

इन पिछले 5 वर्षों में सबसे ज्यादा नुकसान प्राकृतिक आपदा ने किया है। जो बादल फटने की प्रक्रिया होती है, यह धर्मशाला और कुल्लू के इलाके में बहुत ज्यादा होती है। जहां-जहां वैलीज हैं, वहां ठण्डी और गर्म हवा का जब कंसैप्ट बनता है तो उस हालात में ये बादल फटने की घटनाएं होती हैं। यही नहीं ओलावृष्टि अब इतनी ज्यादा होती है जिसका कोई हिसाब-किताब नहीं है। हाई वैलोस्टी विंड्ज की वज़ह से पिछले साल 23 अप्रैल को बर्फ पड़ गई थी। इसी के साथ ड्रॉट भी हैं। हिमाचल प्रदेश में ये प्राकृतिक आपदाएं बार-बार आ रहीं हैं लेकिन जो हमारा किसान है उसका रकबा बहुत छोटा है। हिमाचल प्रदेश में जो पॉजिटिव चीज है, वह पूरे हिन्दुस्तान में नहीं हैं। जम्मू कश्मीर में हो भी सकती है। वहां भी rigorous land reform हुए। इसके अलावा पश्चिम बंगाम केरल और त्रिपुरा में भी rigorous land reform हुए लेकिन अधिकतर भारत में ये लैंड रिफॉर्म नहीं हो पाए। इसका फायदा यह है कि हिमाचल प्रदेश में बहुत बड़ी रियासतें नहीं हैं। यहां बहुत बड़े रकबे के मालिक नहीं मिलेंगे। we go into our record of land distribution. ये शायद जीरो

प्वाइंट कुछ परसेंट हैं जिनको हम लैंड लॉर्ड की कैटेगरी में रखते हैं। यहां अधिकतर किसान व बागवान 6 बीघा या 6 बीघा से कम भूमि का मालिक है। अभी जो लेटैस्ट सैन्सस हुए हैं उसमें इनकी संख्या 60 फीसदी हुई है। यदि ओलावृष्टि या बादल फट जाए तो इनकी तबाही हो जाती है। माननीय मंत्री, श्री महेन्द्र सिंह जी आप जानते हैं you are very senior Member of the House वर्ष 1968 से पहले जब हम नौतोड़ दिया करते थे, उस समय यदि बादल फट जाता था और जमीन को नुकसान होता था तो जमीन का तबादला किया जाता था। वर्ष 2005 का एक्ट तो मदद करने का एक्ट था जिसको हमने इम्प्लीमेंट नहीं किया और जिसको हम फॉरेस्ट राइट्स एक्ट कहते हैं। हमने इसको सोशल लैवल पर नहीं किया दूसरा हमने कम्युनिटी लैवल पर किया है। आज कुछ कर्मचारी विधान सभा के बाहर आए हैं, कुछ आप दे देंगे और जब किसी और की

03/03/2022/1625/टी0सी0वी0/डी0सी0/2

सरकार आएगी तो कुछ वह भी दे देंगे। लेकिन हमारा किसान आर्गेनाइज्ड नहीं है, वह सरकार और सरकार की नीति को प्रभावित करने के लिए ज्यादा कुछ नहीं कर पाता। इसलिए सभापति महोदय...व्यवधान... उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे क्षमा मांगता हूं। मेरी इंटेंशन बिल्कुल नहीं थी। I have to apologize यह मुझसे भूल हो गई। यह मंत्री महोदय को शुरु में प्वाइंट आउट करना चाहिए था।

उपाध्यक्ष : माननीय सदस्य, ऐसी कोई बात नहीं है। आप समय का ध्यान रखें। अभी-अभी हमने गीता का सार पढ़ा। मैं तो माननीय सदस्य, श्री हीरा लाल जी का ज्ञान सुनकर अपने आप को अनुगृहित कर रहा हूं।

श्री राकेश सिंघा : मेरे दिल की इच्छा है आपकी प्रोमोशन हों। आप मेरी बात को रिकॉर्ड पर लाएं या न लाएं। मैं आपको जानता हूं। आप फाइटर है। you know how to fight way out. मेरी शुभकामनाएं हमेशा आपके साथ रहेगी। लेकिन बुनियादी बात जिसके लिए मंत्री महोदय ने मुझे प्वाइंट आउट किया। I am grateful sir कि आपने मुझे कॉरेक्ट किया और

आपका फर्ज़ भी बनता है। You are a senior Member and you should always guide people like us in this House so that we can learn and make this House better.

एन0एस0 द्वारा .. जारी ।

03-03-2022/1630/NS/DC/1

श्री राकेश सिंघा..... जारी

इसलिए बहुत बड़ा नुकसान किसानों का हो जाता है और वे तबाही की ओर चले जाते हैं। Therefore, it is the responsibility of any elected Government कि उसके पक्ष में हम कोई नीति फ्रेम करें जो हम लंबे समय से नहीं कर पा रहे हैं। आप जानते हैं कि जब ओलावृष्टि आ जाती है और यहां पर जिला कांगड़ा के माननीय सदस्य बैठे हैं और ये जानते हैं कि धौलाधार से नीचे जो रेंज आ रही है उसमें औले तब बरसते हैं जब धान और गेहूं तैयार हो जाता है तथा तबाह हो जाता है। यहां पर माननीय हीरा लाल जी और प्रकाश राणा जी बैठे हैं। जब ओलावृष्टि होती है तो किसान मातम में चला जाता है क्योंकि बहुत से इलाकों में प्रोफेशनल खेती आ गई है और आप उसको और प्रोफेशनल कर रहे हैं तथा सेब वाले बागवान एक ही फसल लगाते हैं और उस समय उनको कितना दर्द होता है, वे तबाह हो जाते हैं। इसलिए ये सारे प्रश्न चाहे अनटाइमली बर्फ गिरने के हैं यह किसान को नुकसान पहुंचाते हैं। मैं अपनी बात को संक्षिप्त कर रहा हूं। जो हमारा रिलीफ मैन्युअल अभी तक है it should be governed. मुझे समझ नहीं आ रहा है कि जो यह Disaster Management Act है और जो फाइनैंस कमीशन इस प्रकार की प्राकृतिक आपदा के लिए केंद्र की तरफ से मदद करता है, इसके बारे में मुझे क्लीयर आइडिया नहीं है कि 15वें फाइनैंस कमीशन ने एग्जैक्टली इसके लिए क्या वर्क आउट किया है? मैं नॉर्मली अनप्रीपेयर्ड नहीं आता हूं लेकिन आज wrong foot पर पकड़ा गया इसलिए इसके बारे में बहुत जानकारी नहीं दे पाउंगा लेकिन the relief manual must have a link किसके साथ हमारा पूरा डिजास्टर मेनेज़मैंट का कानून है उसके साथ लिंक होना चाहिए, उसकी अपडेटिंग होनी चाहिए। इसमें कुछ विषयों को लेकर अपडेटिंग हुई है और कुछ विषयों को लेकर अपडेटिंग बिल्कुल नहीं हुई है। खास तौर पर किसके लिए? किसान का जो नुकसान प्राकृतिक आपदा से होता है वह बिल्कुल अपडेट नहीं हुआ है। इसके आंकड़ें मैं यहां पर रखता हूं। इस सदन में माननीय बिक्रम सिंह जरयाल जी नहीं बैठे हुए हैं लेकिन माननीय

प्रकाश राणा जी बैठे हुए हैं और इनका ही दिनांकः 11.08.2021 का प्रश्न संख्या : 4202 इस संदर्भ में लगा था जिसको पढ़ कर मैं बहुत परेशान हुआ। इसमें कौड़ियों की कंपनसेशन दी गई है। जो कंपनसेशन किसान को मिल रही है वह इतनी कम है कि वह अपने गांव से अगर एस.डी.एम. के दफ्तर तक जाएगा तो उसका जाने का किराया भी पूरा नहीं होता है।

03.03.2022/1635/RKS/एचके-1

श्री राकेश सिंघा...जारी

जिस किसान का हमें सम्मान रखना चाहिए, जो किसान हमारी रीढ़ की हड्डी है जब उसकी फसल का नुकसान होता है तो हम उसे उचित मुआवज़ा नहीं दे पाते। उस किसान को मुआवज़ा हासिल करने के लिए अपने गांव से एस.डी.एम., दफ्तर के कई चक्कर काटने पड़ते हैं। लेकिन जो उसे मुआवजा दिया जाता है उससे उसका बस किराया भी वसूल नहीं हो पाता। उपाध्यक्ष महोदय, चाहे आप इस संकल्प को वापिस लेने का प्रस्ताव रखे लेकिन इसके लिए सरकार की ओर से सोच रहनी चाहिए। कल माननीय मुख्य मंत्री बजट प्रस्तुत करेंगे। कई बार बजट में भी सभी चीजें शामिल नहीं होती। But the idea can be expressed there. आने वाले समय में किसान को इस प्रकार की राहत मिले ताकि वह जिस संकट से गुजर रहा है उससे उसे निज़ात मिल सके। उसको कितनी राहत मिले इसके मापदंड निर्धारित होने चाहिए। मैं चाहूंगा कि किसान को जो नुकसान हुआ है उसका 50 प्रतिशत मुआवज़ा दिया जाना चाहिए। मैंने बहुत तर्कसंगत बात की है। मैंने ऐसी बात नहीं की है जिससे सरकार को बहाना मिल जाए कि हम इतना मुआवज़ा नहीं दे सकते। मैंने तर्कसंगत बात की है और सरकार को इस बात को कंसीडर करना चाहिए। पूरे हिमाचल प्रदेश में खासकर पहाड़ी इलाकों जैसे शिमला, रोहडू, चम्बा और कुल्लू के क्षेत्रों में जब आगजनी की घटना हो जाती है तो वहां पूरा मकान आगजनी में नष्ट हो जाता है। क्योंकि जब लकड़ी के मकान में आग लगती है तो मकान पूरी तरह तबाह हो जाता है। उस पुराने मकान से जो अटैचमेंट होती है उसका कोई दाम नहीं दिया जा सकता। लेकिन हम मकान के जलने पर मात्र 1.10 लाख रुपये का मुआवज़ा देते हैं। इस राशि से तो घर में बना

शौचालय भी कंपनसेट नहीं होता। जब किसी आदमी का घर जल जाता है तो उसका लाखों का नुकसान होता है। एक कमरा बनाते-बनाते उसकी सारी उम्र की पूंजी लग जाती है। इसलिए मैंने उस किसान को राहत के तौर पर 5 लाख रुपये राशि प्रदान करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है।

03.03.2022/1635/RKS/एचके-2

उपाध्यक्ष महोदय, मैंने आपसे वायदा किया था कि मैं आपको घंटी बजाने का मौका नहीं दूंगा। मैं इसी के साथ अपनी बात को समाप्त करता हूं। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, आपका धन्यवाद।

उपाध्यक्षः माननीय सदस्य राकेश सिंघा जी आपका भी धन्यवाद। क्योंकि इस विषय पर बोलने वाले 5 और लोग हैं। आज गैर-सरकारी दिवस है इसलिए इस सदन की कार्यवाही भी पांच बजे समाप्त हो जायेगी। माननीय सदस्य श्री मुकेश अग्निहोत्री जी क्या आप कुछ बोलना चाहते हैं?

श्री मुकेश अग्निहोत्रीः माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हिमाचल प्रदेश के कर्मचारी जो आज शिमला आए हुए हैं, सरकार जिस ढंग से उन पर बल प्रयोग कर रही है; जैसे वाटर कैनन उन पर छोड़े जा रहे हैं; जैसे बाहर का माहौल बना हुआ है, खुदा के वास्ते उन पर रहम करो। आप ऐसा क्यों कर रहे हो? ये हमारे प्रदेश के कर्मचारी हैं। इन्होंने हिमाचल प्रदेश के विकास, कल्याण और गरीब की सेवा में अहम भूमिका निभाई है।

श्री बी.एस.द्वारा... जारी

03.03.2022/1640/बी.एसए/ एच0के0/-1

श्री मुकेश अग्निहोत्री जारी...

अगर ये आपसे बात करने आए हैं, तो उनसे आपको बात करनी चाहिए। आपने सारे प्रदेश की पुलिस यहां लगा दी है, सारी बटालियनें यहां पर लगा दी हैं। विधान सभा परिसर का

गेट बंद है कोई भी बाहर नहीं जा सकता है। इतनी ज्यादा संख्या में लोग हैं, कभी आपने बालूगंज रोक दिया, कभी टूटीकण्डी रोक दिया, कभी आपने 103 पर लोगों को रोक दिया है। चारों तरफ हजारों कर्मचारी हैं और आपने इन्हें रोकने के लिए हजारों पुलिस कर्मचारी लगा दिए हैं। वे एक मांग ले करके आए हैं और आप उन्हें आराम से सुन लेते तो अच्छा होता। क्या और लोग भी अपनी मांगों को ले करके यहां नहीं आए हैं और क्या उन्होंने प्रदर्शन नहीं किया है? आप कभी दण्डात्मक कार्रवाई की बात करते हैं, कभी केस रजिस्टर करने की बात करते हैं, कभी "नो वर्क नो पे" की बात करते हैं। कितनी नोटिफिकेशन आपने निकाल दी है। आपने नोटिफिकेशन कर दी कि आपको सस्पेंड और डिसमिस कर दिया जाएगा, आपको छुट्टी भी नहीं दी जाएगी और आपने बाहर क्या हालात बना दिए हैं?

उपाध्यक्ष : माननीय मुकेश जी आपका विषय आ गया है।

श्री मुकेश अग्निहोत्री : सरकार यहां बैठी है और बाहर क्या हो रहा है? यूक्रेन में तो जो हो रहा है वह तो सेना कर रही है यहां तो आप अपने लोगों पर अपनी पुलिस से करवा रहे हैं।

उपाध्यक्ष : माननीय जल शक्ति मंत्री जी कुछ कहना चाह रहे हैं।

जल शक्ति मंत्री : आदरणीय उपाध्यक्ष जी, जो विषय बीच में आदरणीय मुकेश अग्निहोत्री जी ने उठाया है उसके संदर्भ में कुछ कहना चाहता हूं। माननीय मुख्य मंत्री जी ने बार-बार कहा है कि चाहे वे कर्मचारी हों, सेवानिवृत्त कर्मचारी हों या समाज के किसी भी अंग का कोई भी व्यक्ति हों उन्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी है तो उस परेशानी का समाधान करने के लिए मुख्य मंत्री जी के कार्यालय के दरवाजे 24 घंटे खुले हैं। जो भाई, बहन यहां आए हुए हैं उन्हें आज भी मुख्य मंत्री जी की ओर से बार-बार कहा गया है कि आप पांच-सात लोगों का डेलीगेशन ले करके आइए और बात कीजिए।

03.03.2022/1640/बी.एसए/ एच0के0/-2

जो भी बेस्ट पोसिबल हो सकेगा, वह माननीय मुख्य मंत्री जी और हमारी सरकार करने के लिए तैयार है। मैं आदरणीय मुकेश जी से इतना जरूर कहना चाहता हूं कि जो हजारों में

लोग यहां आए हैं, हम हजारों लोगों को कहें कि आप विधान सभा के अन्दर आ जाइए, यह ठीक नहीं है। यदि कल को कोई 19-21 बात हो जाती है तो उसका कौन जिम्मेवार होगा? मैं एक बात बताना चाहता हू कि वर्ष 2006-07 में आपके निवास स्थान के बाहर आपकी एक जनसभा चली हुई थी, जब भारतीय जनता पार्टी के लोग वहां से निकलना चाह रहे थे तो आपने वहां से किसी को नहीं आने दिया था। मैं आपके ध्यान में लाना चाहता हूं कि मैं उस दिन हाउस के अंदर था और जब मैं बाहर निकला और उस रास्ते से जाना चाहा तो कार्यकताओं ने जो मेरी हालत की वह मैं ही जानता हूं। मुझे मुश्किल से अपनी जान बचा करके आगे निकलना पड़ा था। हम सभी चुने हुए प्रतिनिधियों का यह कर्त्तव्य बनता है कि हम शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन करें परंतु हम किसी भी हालत में किसी को न उकसाएं, अगर हम उकसाने का काम करेंगे तो उससे महौल और वातावरण बिगड़ जाएगा। हम वातावरण बिगाड़ने के लिए यहां नहीं बैठे हैं। हम चुन करके आए हैं और हमारे प्रदेश की संस्कृति रही है कि यहां पर शांति बनी रहे। इस शांति प्रिय प्रदेश में शांति के लिए सहयोग मिलेगा तभी यह संभव हो सकेगा। माननीय विपक्ष के नेता से मेरा आग्रह है कि जितनी उनकी चिंता आपको है, उससे ज्यादा चिंता आदरणीय मुख्य मंत्री जी और इस मान्य हाउस को है।

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

03-03-2022/1645/वाई.के.-एन.जी. /1

जल शक्ति मंत्री..... जारी

उससे ज्यादा चिंता हमारे मुख्य मंत्री जी व हम सभी को है और उससे ज्यादा चिंता पूरे हाऊस को है। अगर आपको हमसे ज्यादा चिंता है तो हम आपसे विनम्र निवेदन करना चाहते हैं कि आप उनके 10-15 लोगों का एक डेलिगेशन लेकर आ जाएं और माननीय मुख्य मंत्री जी उनके डेलिगेशन से मिलने के लिए तैयार हैं। लेकिन हज़ारों लोग विधान सभा परिसर के अंदर आ जाएं तो यह कैसे सम्भव हो सकता है? मेरा आग्रह रहेगा कि हम

उकसाने वाला कोई भी कार्य न करें जिसकी वजह से लॉ एण्ड ऑर्डर को मैंटेन करने में किसी प्रकार की दिक्कत आए।

उपाध्यक्ष : माननीय मुख्य मंत्री जी कुछ कहना चाहते हैं।

मुख्य मंत्री : उपाध्यक्ष महोदय, हम सारी स्थिति को बहुत नजदीक से देख रहे हैं। हम ऐसा नहीं कह रहे हैं कि वे आप लोगों के कहने पर यहां आएं हैं। लेकिन आप वह पूरा काम कर रहे हैं जिससे उनको उकसाया जा सकता है और जिस तरह से आग लगाई जा सकती है। ...व्यवधान...

श्री मुकेश अग्निहोत्री : मुख्य मंत्री जी आपसे कर्मचारी सम्भल नहीं रहे हैं और आप हमें कह रहे हैं। ...व्यवधान... कर्मचारी सरकार के हैं। ...व्यवधान...

(अध्यक्ष महोदय पदासीन हुए।)

मुख्य मंत्री : आप छोड़ दीजिए और उन्हें सम्भालने की जो बात होगी वह हम देख लेंगे। ...व्यवधान... अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाह रहा हूं कि मैंने पिछले कल ...व्यवधान...

03-03-2022/1645/वाई.के.-एन.जी. /2

अध्यक्ष : माननीय सदस्य बैठिए और सुनिए। ...व्यवधान... माननीय श्री मुकेश अग्निहोत्री जी आप तो बोल लिए हैं और आप बैठ जाइए। ...व्यवधान... सुन लीजिए ...व्यवधान...

मुख्य मंत्री : यह हालात पैदा करने के लिए आप लोग जिम्मेवार हैं। ...व्यवधान...
You are responsible for this. You have created this situation. ...Interruption...
श्री मुकेश अग्निहोत्री : मुख्य मंत्री जी ये सब हालात आपने पैदा किए हुए हैं। ...व्यवधान...

मुख्य मंत्री : हमने क्या हालात पैदा किए हैं। ...व्यवधान... हमें क्या करना है यह आप हमें सलाह मत दीजिए। ...व्यवधान... अध्यक्ष महोदय, ये बेहुदे तरीके से बात करते हैं। ...व्यवधान... ये न अंदर तहज़ीब से बात करते हैं न बाहर करते हैं। ...व्यवधान...

(पक्ष व विपक्ष के सभी माननीय सदस्य अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर शोर-शराबा करने लगे।)

बदतमीज़ी करना इन लोगों की आदत बन गई है। ...व्यवधान... आप सब अपनी भाषा पर संयम करिए। ...व्यवधान... ऐसा मान कर चल रहे हैं कि आपके दबाने से हम दब जाएंगे। ...व्यवधान... उन लोगों से जो बात करनी होगी वह हम करेंगे और कर भी रहे हैं। ...व्यवधान... आप जो करने की कोशिश कर रहे हैं उसे ज़रा करके दिखाइए। ...व्यवधान... हमेशा आपको चीख़-चिल्लाकर बोलना होता है। ...व्यवधान... आप लोगों में सुनने की आदत ही नहीं है। ...व्यवधान... यह राजनैतिक भूख आप सब को बर्बाद कर देगी। आपकी यह भूख कभी पूरी नहीं होगी। ...व्यवधान... हम इस माननीय सदन में कह रहे हैं कि आपकी यह राजनैतिक भूख कभी पूरी नहीं होगी। ...व्यवधान... हर चीज की कोई सीमा होती है। ...व्यवधान...

अध्यक्ष : माननीय सदस्य बैठ जाइए। इस माननीय सदन की कार्यवाही 05 मिनट के लिए स्थगित की जाती है।

श्री जे.एस. द्वारा जारी.....

03.03.2022/1655/JS/AG/1

(माननीय सदन की बैठक अपराह्न 16.55 बजे पुनः आरम्भ हुई)

अध्यक्षः अब इस माननीय सदन की कार्यवाही शुक्रवार 4 मार्च, 2022 के पूर्वाह्न 11.00 बजे तक स्थगित की जाती है।

शिमला-171004 **यशपाल शर्मा,**
दिनांकः 03 मार्च, 2022 **सचिव।**